प्रभु-प्रसादी

(भजन-सग्रह)

प्रभु-प्रसादी

(भजन-सग्रह)

शिव पाण्डे 'बीकानेरी'

संस्करण	प्रथम 1997-98
प्रकाशक	शिव पाण्डे 'बीकानेरी' हनुमान हत्था [illegible] का मन्दिर बीकानेर
मुद्रक	कल्याणी प्रिन्टर्स [illegible] रोड बीकानेर
मूल्य	पैंतीस रुपये मात्र।

Prabhu Parsadi (Bhajan) By Shiv Pando Bikanen Rs 35/



आत्म निवेदन

मेरा जन्म दिनाक 15 नवम्बर 1931 को महाशिवरात्री के दिन होने के कारण माता पिता ने मेरा नाम शिव ही रख दिया। मेरी शिक्षा तीसरी कक्षा तक ही हो सकी थी। शिक्षा समाप्त होने वाले दिनों में बीकानेर नगर मे साल सइका होने के उपलक्ष्य मे जागरण कीर्तन एव हवन आदि की धूम मची हुयी थी बालकपन से मेरी आवाज तीखी व सुरीली थी फलत जागरणो मे मेरी आवाज को लोगबाग बडे चाव से सुनते थे। तभी से मुझे गाने व बजाने मे आनन्द आने लगा। दस वर्ष की अवस्था में मुझे महाराजा सार्दूल सिह जी (बीकानेर राज्य के शासक) को गोल्फ खिलाने के नाम पर नौकरी मिल गई। माता पिता ने इसी समय मेरा विवाह भी कर दिया। मेरा जागरणो में भाग लेने का क्रम बना ही रहा। अचानक ही राजस्थान के निर्माण के पश्चात् मुझे उस कार्य से हाथ धोना पडा। परन्तु मेरे ससुर जी ने प्रयत्न करके रेल्वे मे कच्ची नौकरी दिलवा दी। इसी समय दिल्ली मे रेल्वे वीक का आयोजन हुआ। बीकानेर से अन्य लोगों के साथ विभाग ने मुझे भी उसमे भाग लेने भेज दिया। मैंने बीकानेर से दिल्ली के रेल के सफर में एक कविता लिखकर आयोजन स्थल पर सुनाई। कविता के बोल थे मै हूँ बीकानेरी चर्चा देश देश में है मेरी रेल्वे वीक मनाने आया इर्स्टन वैर्स्टन सर्दन नार्दन का मैं नक्शा लाया वहाँ उपस्थित अधिकारियों और कर्मचारियों ने इस कविता को अत्यधिक पसन्द किया। परिणामस्वरूप बीकानेर आते ही अधिकारियों ने मुझे पक्की नौकरी दे दी और लोगों ने मुझे बीकानेरी के नाम से प्रसिद्ध कर दिया। इसके पश्चात् मुझे स्टेशन से हटाकर रेलवे वर्कशॉप मे पेन्टर बना दिया और वहीं से सन् 1989 में हेडपेन्टर से सेवा निवृत्त हुआ। वर्कशॉप मे कार्य करते समय ही मेरा सम्पर्क मेरे मोहल्ले के सगीताचार्य प राम किशन जी पाण्डे से हुआ। उनके चरणो में बैठकर मैंने गायन की शिक्षा प्राप्त की। मेरे गीत व भजनो की चर्चा दूर-दूर तक लोगो ने कर दी थी। इस बीच

मुझे बम्बई के मशहूर फिल्म सगीत निर्देशकों क्रमश महेश कोल एस एन त्रिपाठी भरत व्यास व शिव शर्मा आदि से साक्षात्कार करने का मौका मिला। उनका आग्रह था कि मै स्थायी रूप से बम्बई मे ही रहूँ। किन्तु परिवार की जिम्मेवारी एव नौकरी के कारण उनकी इच्छा पूर्ति नहीं कर सका। बीकानेर के नागणीची जी के मन्दिर मे बैठकर मैने स्तुतिया लिखना प्रारभ कर दिया और मेरे भजनो की दो पुस्तकें भजनावली व त्रिवेणी सगम प्रकाशित करवा दी। बीकानेर के प्रवासी राजस्थानियो ने मेरे भजन व गीत बहुत पसद किये। फलस्वरूप उन प्रवासियो की विभिन्न सस्थाओ और समितियो के निमत्रण पर मै कलकत्ता गुवाहाटी मद्रास हैदराबाद विराटनगर शिलाग पटना चगलपेट कटिहार ब्रजराजनगर आदि नगरो मे अपने भजनो के साथ कार्यक्रमो म उपस्थित हुआ।

सेवानिवृत्ति से पूर्व सन् 1962 में अपने भजनो और स्तुतियों के सहारे से बीकानेर नगर की पुराणी गिनाणी स्थित स्व महाराजा गगा सिह जी द्वारा निर्मित माता जी के गोल मन्दिर का जीर्णोद्वार करवा कर उसमे मूर्ति स्थापित करवाई। सेवा निवृत्ति के पश्चात् मेरा पूरा घ्यान भजनो एव राजस्थानी भाषा की वीर रस की कविताओ की ओर रहा। परिणाम स्वरूप राजस्थानी भाषा साहित्य सस्कृति अकादमी के आशिक आर्थिक सहयोग से मेरा कविता सग्रह हिवड़ै रा गीत मनड़ै रा मीत प्रकाशित हो चुका है। यह मेरा सौभाग्य ही है कि पाठको ने उसे पसन्द किया। अब इसी क्रम मे मेरे 205 भजनो की पुस्तक प्रभु-प्रसादी आपके हाथो में प्रस्तुत है। इन भजनो के राग निरूपण मे प्रसिद्ध सगीताचार्य दुद्दमहाराज गोस्वामी ने जो सहयोग व आशीर्वाद प्रदान किया उसके लिये मै उनका हृदय से आभारी हू। इस अवसर पर मेरी धर्मपत्नी राधादेवी को धन्यवाद दिये बगैर नहीं रह सकता जिसने गुप्तदान देकर इस प्रकाशन म सहयोग दिया। इस पुस्तक के प्रकाशन हेतु महाराजा रायसिह ट्रस्ट की ओर से 11 हजार रुपयों की जो आशिक सहायता प्रदान की गई है उसके लिये बीकानेर की राजमाता जी का आभारी हूँ। पुस्तक में त्रुटिया रह सकती है जिन्हें मेरी अपनी सीमाओ के कारण क्षम्य समझा जाए। अन्त मे मै कल्याणी प्रिन्टर्स के व्यवस्थापकों का भी आभार माने बिना नहीं रह सकता जिन्होने रिकार्ड समय मे पुस्तक को वर्तमान स्वरूप में पाठको के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया।

दिनाक 2 अक्टूबर 1997
हनुमान हत्था
सत्यनारायण का मन्दिर बीकानेर

विनीत
शिव पाण्डे बीकानेरी विशारद्

अनुक्रमणिका

***

१ आरती श्री गजानंद जी की

राग श्याम कल्याण

नित धरू आपका मन से ध्यान हे गजानद महाराज।
मुझे सद् बुद्धि करदो प्रदान हे गजानद महाराज॥
विघन निवारन कारज सारो रिधि सिधि चवर ढुलाय।
देव आरती करते मिलकर ऋषि मुनि महिमा गाय॥
नारद की बीना छेडै तान हे गजानद महाराज।
गले माल मणि मुकट भाल सोवे मुसे असवारी।।
मोदक का भोग लगाते विधि से नाम काम सुखकारी।
आगन मगल पाऐ जहान हे गजानद महाराज॥
आप दया के सागर गणपति ध्यान गान से धरते।
शुद्ध भाव के पुष्प चरन मे रख नत मस्तक करते॥
मुझे बीच सभा मे दो सम्मान हे गजानद महाराज।
मस्तक ऊचा रहे भारत का खुशिया घर घर झूमे॥
धरती दे वरदान सफलता इन हाथो को चूमे।
शिव पाण्डे झोली भरो ग्यान हे गजानद महाराज॥

***

२ जाके मुख राम नाम

राग तिलक

जाके मुख राम नाम धनवान वोई हे
धनवान वोई हे बलवान वोई हे, जाके मुख राम नाम
चन्दन से महके अनमोल बोल बोल रे।
सुन कलयुग का सिंगासन जाये डोल रे॥
मीरा की चदरिया गुरु ग्यान धोई हे। जाके मुख राम नाम

सासो के सुरो पे प्रभु के गा गीत रे।
उपजे आनन्द रग लाए तेरी प्रीत रे॥
नरसी ने मेली चादर भक्ती में भिगोई ह। जाके मुख राम नाम।
दया दान कर के मन को दे दे बनवास रे।
मुक्ती के खुलेगे द्वार रख विश्वास रे॥
देख गज तारयो भनक कान होई हे। जाके मुख राम नाम।
करनी ऐसी कर, आना जाना मिटजाय रे।
शिव पाण्डे राम भजन और ना उपाय रे॥
धन्ने की खेती प्रभु हल ले हाथ बोई है। जाके मुख राम नाम।

***

३ राम भजन रो कोड

राग मिश्र माड

लाग्यो म्हाने राम भजन री कोड।
श्याम भजन रो कोड लाग्यो म्हानै॥ राम भजन रो कोड।
ग्यान चूदडी रगी म्हारे सत गुरु।
ली जुगती स्यू में ओढ॥ लाग्यो म्हान राम भजन रो कोड।
मुखमल सेजा श्याम नी सोवे।
कींकर जाऊ मे पोढ॥ लाग्यो म्हान श्याम भजन रो कोड।
हरि स्यू हेत करण माया सुख।
थारी म्हारी दे छोड॥ लाग्यो म्हानै राम भजन रो कोड।
रोम रोम भगती रस मे राच्यो।
हरख हरख री होड॥ लाग्यो म्हाने राम भजन रो कोड।
अवगुण काढ फेक काया स्यू।
नइतो हसेला लोग॥ मा म्हारी लाग्यो राम भजन रो कोड।

चतराई स्यू करया रे चाकरी।
प्रभुजी मिलण रो जोग ॥ मा म्हारी लाग्यो राम भजन रो कोड।
भव तिरणै रो अवसर आयो।
'शिव पाण्डे'मत छोड।।मा म्हारी लाग्यो राम भजन रोकोड।

***

४ माता जी की स्तुति

राग-मिश्र काफी

जय माता दी जय माता दी जय माता दी बोल।
सुनकर के पापो की नइया डग मग जाये डोल॥
ऋषी मुनि सुनकर पलक खोलदे मॉ मुख नाम उचारे।
घटे और घडियाल बाजे अपने आप नगारे॥
विनती सासो की सरगम सुन मॉ मन्दिर दे खोल।
जय माता दी जय।
मॉ नयनो से अमृत बरसे दुनिया प्यास बुझाये।
और पीने को स्वर्ग छोडकर देव धरा पर आये॥
सब धरमो की टोली बोले नाम यही अनमोल।
जय माता दी जय।
जय माता दी कह कागद पर बीज धर्म के बोदे।
गूज उठे इतिहास विश्व का ऐस दीप सजोदे॥
आनेवाली सतानों का जीवन हो अनमोल।
जय माता दी जय।
लोक और परलोक भी गूजे सब गगनो के तारे।
तूफा सागर नदिया हिमगिरि लहरे सहित किनारे॥
''शिव पाण्डे'' मॉ अहसानों को कोई सका ना तोल।
जय माता दी जय।

***

५ भजन-मोत को रख्खो याद

राग-देश

जीवन सफ्ल तभी होगा रखोगे मौत को याद।
अपनेही मुख से बाटोगे गर राम नाम प्रसाद॥
हर पुतले मे प्राण के दीपक प्रभुजी रोज सजोते।
जिसमें होता तेल खत्म यमराज दे फूक बुझोते॥
धरमराज पहनाएगा धूमा भगती का ताज।
अपनेही मुखसे बाटोगे।
क्या लाये क्या लेजाओगे यहीं जीत यहीं हार है।
मनुष्य जन्म माग के तुमने प्रभुसे लिया उधार है॥
भवसागर से तिरने का बस एक है यही इलाज।
अपनेही मुखसे बाटोगे।
यही प्रसादी लै मीरा ने अपना जन्म सुधारा।
घर घर नाच रही मोहन सग देखो भक्ती द्वारा॥
जन्म मरन के बधन से होजाआगे आजाद।
अपनेही मुखसे बाटोगे।
इसी नाम से रइदास लाये कठोतरी में गगा।
उसको मुक्ती होगी पलमें "शिव पाण्डे" मन चगा॥
आवाज लगाओगे गज सी तो अवश्य रहेगी लाज।
अपनेही मुखसे बाटो।

***

६ भजन-मुरली मनड़ो मोयो

राग-मिश्र काफी

थारी मुरली मनडो मोयो काना ओरतो बजाओ थारी मुरली नै।
थारी बसी जादूगारी श्याम थारी मुरली कामणगारी
श्यामा॥ओरतो

थारी मुरली मीरा ने मोयी राणे छोडर थारी होयी।
बिये मेडतियो छिटकायो, काना ओरतो बजाओ थारी
मुरली नै॥
म्हारै मरूधर जद मेवडो होवै धरती रो धन निरभै सोवे।
बोलै मीठा मीठा मोर काना, ओरतो बजाओ थारीमुरलीनै॥
थारी
मन मे हरख कोड री बाता यादकरा म्हेतो हिचकी आता।
धोरा ने सुरग बणाओ काना, ओरतो बजाओ मुरली नै॥ थारी
आखडली फरूक्या आवण जाणा गायारा गिवाळी किया
पिछाणा।
मनडै नै धिरज बधाओ काना, ओरतो बजावो मुरली नै॥थारी
अब जै करोला आवण मे देरी ओळमा लिखलै शिव बीकानेरी।
करियोडा कवल निभाओ काना, ओरतो बजाओ मुरली नै॥
थारी

***

७ माताजी की स्तुति

राग-दिलके अरमा आसूवो में बहगये

मॉ तेरी हम दिलसे महिमा गाएगे।
चरनो के दर्शन से सबकुछ पाएगे॥
कुदरत बनकर नया सवेरा करती हो।
अन्न पूरणा पेट सभी का भरती हो॥
मनसा पूरो जय जय कार मनाएगे।
मा तेरी हम दिल से महिमा गाएगे

तेरे नाम से ऊचा कोई न नाम हे
द्वार से पावन धरती पर ना धाम है
चरनो की रज चन्दन तिलक लगाएगे।
माँ तेरी हम दिल से महिमा गाएगे
सबको जीवन देकर जीवन लेती हो।
सरन पडे की नाव भवर से खेती हो॥
हमको हे विश्वास भव तरजायेंगे।
मा तेरी हम दिल से महिमा गाएगे
पलमे प्यास बुझाती जीवन धारा हो।
''शिव पाण्डे'' भक्तो का सत्य सहारा हो॥
सद्बुद्धि दो भारत भाग्य बनाएगे।
मा तेरी हम दिल से महिमा गाएगे

***

८ सतसग

राग हूजाज

सबसे ऊची हे सतसग, धोकर काया निरमल करले।
किये कटे सब फद॥ सब से ऊची है सतसग
अग्यानी को ग्यान दान दे।
जीवन सुलझा बना महान दे॥
जेसे लोहा सोना बनता पारस लागे अग।
सब से ऊची हे सतसग
काम सफल हो जपले माला।
करती घट अधेर उजाला॥

आशीर्वाद का कवच पहन कर जीत क्रोध से जग।

सब से ऊची है सतसग

शीश हथेली रखवा ये देती।

जहर हलाहल चखवा देती॥

सत्य राम इसके बचनो से माला बने भुजग।

सब से ऊची है सतसग

वचन गए ना खाली इसके

सिरपे हाथ रखा है जिस के

कामदेव कर सका न इसकी अरे तपस्या भग।

सब से ऊची है सतसग

निरधन को देती तप बल धन

आनन्द से महका देती मन

रोम रोम में राम के दर्शन करवा देती तुरत।

सब से ऊची है सतसग

ग्यान छान पी अमृत गहरा

लगा हुवा माया का पहरा

"शिव पाण्डे" सतसग से मुक्ती गली प्रेम की तग।

सब से ऊची है सतसग

***

९ भजन-बरसाने की गूजरी

राग-खम्भावती

बरसाने की गूजरी करे जिनकी रोज वदना।

वो महान योगी है कहे चूडियो से कगना॥

मनके दरपन में रोज रूप वो नीहारती।

प्रेमका दीपक जला हिर्द से करती आरती॥
दीवानी की लगन पे कोई ओर चढे रगना। वो महान योगी है
कस को गगन ने कहा होगया अवतार हे।
वासुदेव ले के चले जेल से उस पार हे॥
जिनके चरन धोके धन्य धन्य होगई यमुना। वो महान योगी हे
जोगी बनके दरशन को आए भोले नाथ हैं।
देते आशीर्वाद लेकर श्याम मुस्करात हे॥
त्रिलोकी के नाथ खेले यसूमत के अगना। वो महान योगी है
शिव पाण्डे प्रेम की कोई जात हे ना पात हे।
राधिका के पावन प्रेम की ये करामात हे॥
इस्तरा से श्याम को बनाय लिये बलमा। वो महान योगी है

***

१० आरती

राग मालकोश भीमपलाश मिश्रित

जय गनेश जय गनेश जय गनेश गाइये।
वेद मत्र मुख उचार प्रेम रस बरसाईये॥
धूप दीप तिलक माला से उतारो आरती।
गगा जल से चरन धोवो जिनकी मात भारती॥
पिता महादेव भोग मिसरी का लगाईये। जय गनेश जय गनेश
ऐक दत ध्याए सत जे जै कार बोलकर।
देव उतरे दर्श करने स्वर्ग द्वार खोलकर॥
धरती कहे गगनराज शख तो बजाईये। जय गनेश जय गनेश
हेम गिरी मुस्करा के नयन से नमन करे।
ऋतुराज ऋतुवो सग भेट चरनो पे धरे॥

सूर्य कहे किरनो से मणि मुकट चमकाईये।
जय गनेश जय गनेश
ग्यान की जोती जला मेरा भविष्य उज्वल करो।
खडा दरपे हाथ जोड सरपे मेरे कर धरो॥
शिव पाण्डे कहे हृदय मे आप बसजाईये।जय गनेश जय गनेश

***

११ भजन मीरा बाई का

राग-नगरी नगरी द्वारे द्वारे ढूंढू रे सावरिया

मीरा कहे प्रभु दासी म्हनै राखो रे सावरिया।
राज भी छोड्यो पाट भी छोड्यो जोग लियो सावरिया॥
राणो मुजको कहे दिवानी मे तो तुमारी होगई-2।
आधी रात को पथ निहारु सारी दुनिया सोगई-2॥
मन मन्दिर के दीप जलाए आवो रे सावरिया।
मीरा कहे प्रभु दासी ।
ज्यो कहस्यो ज्यो हुकम उठा सू बात राखदो थे म्हारी-2।
झाडू बुहारो बाडी बोसू इतरो काम करू सारी-2॥
सम्पाडे मे पाणी धरसू न्हाया ओ सावरिया।
मीरा कहे प्रभु दासी ।
वन वन भटकी नही मिले तो सपनो मे मै खो गई-2।
में अनजानी दर्श दिवानी अखिया तुम को जो रई-2॥
रोम रोम में तुम्हीं रमते आवो रे सावरिया।
मीरा कहे प्रभु दासी ।
इतनी टेर सुनि के श्याम मीरा के सम आगये-2।
हम हारे तुम जीती मीरा प्रेम मे तुमको पागये-2॥

'शिव' के भजन मन मस्त मुरलिया बाजी रे सावरिया।
मीरा कहे प्रभु दासी म्हनै राखो रे सावरिया।

***

१२ श्री माताजी की स्तुति

राग-कहनी है एक बात हमें इस देश के पहरेदारों से

माँ तुमसे छुपी नहीं मन की बात तेरे लाल ये कहने आते हैं।
दुखिया के दुख दूर करो माँ झोली हम फैहलाते हैं॥
टण मण तो थार बाज टोकरा शख धमन धूकार करे।
जब पूजा में आप पधारो देव सभी मिल ध्यान धरे॥
गस्ती विलम लगे पूजा मे दरशन कर हरसाते ह।
दुखियो के दुख।
किये कर्मो के बनो सारथी माया हमको छलती ह।
होनी जीवन बीच अडी यो अपनी चाले चलती ह॥
हिम्मत ने घर अपना छोडा ये दुख सहे न जाते ह।
दुखियो के दुख।
भारत के भव को पहचाना लाल लाडले लालो को।
विकट समे पर पाप छा रहा तोडो उसकी चालो को॥
देख दशा दुखियो के घरकी आँख मे आसू आते हैं।
दुखियो के दुख।
बीकानेर की नगरी सदा माँ तेरी हाजरी भरती हे।
मुखडा मोड क्यो बठी मइया अब क्यो देरी करती है॥
मुह मागा वरदान हमे दो यही सदा हम चाहते हैं।
दुखियो के दुख।
सुखकी लहर दिखाओ माता भारतवासियो का कहना।

कभी न भूले तुमको होते मिलकर सबको हे रहना॥
'शिव पाण्डे' सग दोस्त सभी मिल तेरी महिमा गाते हे।
दुखियो के दुख।

***

१३ भजन विदुरजी का

राग-जरा सामने तो आवो छलिया

प्रभु प्रेमसे बुलाए वहाँ पहुचे विदुरजी के घर आए पावणा।
सुनके फूली न दिलमें समाए विदुरानी मन बहुत हरसावना॥
नहीं विदुरजी घरपर और विदुरानी बैठी न्हा रही थी।
सुनकर कर के मोहन की मुरली सुद्ध बुद्ध भूली जा रही थी॥
उनके दरश की प्रेम दिवानी तन कपडे भूलगई पावना।
सुनके फूली न।
विदुरानी को सुध आई तो कपडे पहन प्रोल खोली।
प्रभु को देख चरन मे लिपटी मन हरसाकर यो बोली॥
धन्य धन्य भाग मेरे। दीन बन्धु का हुवा पधारना।
सुनके फूली न।
बोले श्याम कहाँ गए विदुरजी मुझको भारी भूख लगी।
कचे केले कइ कइ दिनके पडे विदुरानी उठके लेने भगी॥
लाके बोली आप जीमो मै जीमाऊ करे प्रेम से मगन गुन
गावना। सुनके फूली न
विदुरानी अपने हाथो से प्रभुको केले खिलाती ह
छिलके देती श्याम मुख माइ। गीरी फेंकती जाती है
प्रभु हम हस भोग लगाए ओर विदुग्जी का घर हुवा
आवना।

विदुरानी से कहे विदुर तेरी अकल सराई जाती है।
छिलके देती श्याम मुख माही गीरी फेकती जाती है॥
सुन ममता प्रेम दिवानी प्रभु बार बार आए नहीं पावणा।
सुनके फूली न
छिलके फेक विदुरजी नै शिव पाण्डे प्रभु मुख केला दिया
विदुरानी मन सोच रही ये मेरे सग क्या राज किया
प्रभु हस के विदुरजी से बोले अब वोतो स्वाद नहीं आवना।
सुनके फूली न।

***

१४ भजन हसा

राग-मिश्रत देश

हसा मन मानी मत कर रे, तू तो राम नाम चित धर रे।
देखापे रो मीठो बोलै मन मे गाठ लगी ना खोलै।
इमरत मार्यो जहर घोळकर हर्‍यो हर्‍यो मत चर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।
मती लगा माया री फासी मिनख जमारो अैळो जासी।
लुख्खी सुख्खी मे आनन्द ह कर के दख सबर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।
थे केस्यू ई प्रीत न पाळी पुरस परो सिरकावै थाळी।
भग तपस्या कर रिषिया नै घर सू करै बेघर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।
राम नाम लेवणा दै थोडा जलम सूधरे पडै न फोडा।
कपटी पिजरा छोड पुराणा नया मे करै बसर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।

सब पापा री एक दवाई "शिव पाण्ड" लिख भरे गवाई।
नाशवान ससार भरम है तू है अजर अमर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।

***

१५ भजन राधा की बिंदिया

राग-रायसी

राधा की बिंदिया में श्याम नजर आते हैं।
ये नाम कगना रोज गुनगुनाते है॥
बिंदिया में श्याम नजरआते है

राधा के मुस्कराते नयना चाहते है कुछ कहना।
घूघट से लाज भरे झाके कजरारे तीर यमुना के॥
नाच इशारो पे श्याम को नचाते है,
बिंदिया में श्याम नजर आते है

धरती देख फूली ना समाई गगनो को बाटे बधाई।
सागर ने लहरो से बात की तारो ने माग भरी रात की॥
एक दूसरे के दिल में उतर जाते हैं।
बिंदिया में श्याम नजर आते हे

पायल ने पाबन्दी तोडी तो पुरवाई सुन ने को दौडी।
होठो ने ज्योंई भेद खोला ब्रज से न प्यार गया तोला॥
ऐसे प्यार का खजाना लुटाते है।
बिंदिया में श्याम नजर आते है

इस तराह से दिल देखो देके नाम भी जुबा पर लेके।

विदुरानी से कहे विदुर तेरी अकल सराई जाती है।
छिलके देती श्याम मुख माही गीरी फेकती जाती हे॥
सुन ममता प्रेम दिवानी प्रभु बार बार आए नहीं पावणा।
सुनके फूली न
छिलके फेक विदुरजी नै शिव पाण्डे प्रभु मुख केला दिया
विदुरानी मन सोच रही ये मेरे सग क्या राज किया
प्रभु हस के विदुरजी से बोले अब वोतो स्वाद नहीं आवना।
सुनके फूली न।

***

१४ भजन हसा

राग-मिश्रत देश

हसा मन मानी मत कर रे, तू तो राम नाम चित धर रे।
देखापे रो मीठो बोलै मन मे गाठ लगी ना खोले।
इमरत मार्यी जहर घोळकर हर्यो हर्यो मत चर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।
मती लगा माया री फासी मिनख जमारो अैळो जासी।
लुख्खी सुख्खी मे आनन्द है कर के देख सबर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।
थे केस्यू ई प्रीत न पाळी पुरस परो सिरकावै थाळी।
भग तपस्या कर रिषिया ने घर सू करे बेघर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।
राम नाम लेवणा दे थोडा जलम सूधरे पडे न फोडा।
कपटी पिजरा छोड पुराणा नया मे करे बसर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।

सब पापा री एक दवाई "शिव पाण्ड" लिख भरे गवाई।
नाशवान मसार भरम है तू है अजर अमर रे॥
हसा मन मानी मत कर रे तू राम नाम चित धर रे।

***

१५ भजन राधा की बिदिया

राग-रायसी

राधा की बिदिया में श्याम नजर आते हैं।
ये नाम कगना रोज गुनगुनाते है॥

बिदिया में श्याम नजरआते हे

राधा के मुस्कराते नयना चाहते हे कुछ कहना।
घूघट से लाज भरे झाके कजरारे तीर यमुना के॥
नाच इशारो पे श्याम को नचाते है,

बिदिया में श्याम नजर आते है

धरती देख फूली ना समाई गगनों को बाटे बधाई।
सागर ने लहरो से बात की तारों ने माग भगे रात की॥
एक दूसरे के दिल में उतर जाते हैं।

बिदिया में श्याम नजर आते है

पायल ने पाबन्दी तोडी तो पुरवाई सुन ने को दोडी।
होठो ने ज्योंई भेद खोला ब्रज से न प्यार गया तोला॥
ऐसे प्यार का खजाना लुटाते है।

बिदिया में श्याम नजर आते है

इस तराह से दिल देखो देके नाम भी जुबा पर लेके।

'शिव' श्याम जीवन की धारा, नाम लेके करता गुजारा॥
अपने भक्तों की बिगडी बनाते है।
बिदिया मे श्याम नजर आते है

***

१६ श्री माताजी की स्तुति

राग–हजार बाते कहे जमाना

सरन में आये है हम तुमारी हे जग जननी दया करो मा
दरशन को आये हम मॉ तुमारे हे जगदम्बा दया करो मा
विधी से पूजा कर ध्यान धरते।२
मा नाम तेरा कभी हम विसरते॥२
दो पुष्प भावो के सच्चे अरपन हे जगदम्बा दया करो मा–
सरन में
तू धूप ममता है सुख की छाया। २
में प्यार मागने मॉ द्वारे आया॥२
हृदय में तेरे दया का सागर। हे जग जननी दया करो मॉ–
सरन में
तू गगा यमुना सरयू सरस्वती।2
कर पार भक्तो की भव से कस्ती॥2
तू राम की मॉ तू श्याम की माँ। हे जगदम्बा दया करो मा–
सरन में
सद् बुद्धि दो मा मागू दे फेरी।2
चरन सरन 'शिव' हे बीकानेरी॥2
भक्तजनो की ये प्रार्थना है। हे जग जननी दया करो मा–
सरन में

***

१७ भजन मीरा अमर होयगी

राग-देश सोरठ

भगती रो चोळो पेर परी बाई मीरा अमर होयगी।
मुगती रै मारग चाल परी माई मीरा अमर होयगी॥
लगन तेल मे भाव धरी बाती।
उठ्यो बैराग श्याम गुण गाती॥
के धरती मेवाड री राणी ग्यान रो दीयो जोयगी।
भगती रो चोळो पैर परी बाई मीरा अमर होयगी॥
आभो देव रिषी मुनि तारा।
साख भरै मुख दो बिणजारा॥
कै निरमळ गगा री धारा कुळरा पाप धोयगी।
मुगती रै मारग चाल परी माई मीरा अमर होयगी॥
भगती री बेल जेर सू सींची।
राखी लाज डोर हरि खींची॥
बास कटी बन री बसी कै बीज फळारा बोयगी।
भगती रो चोळो पैर परी बाई मीरा अमर होयगी॥
रेयीदास दियो गुरु मतर।
पाप कटै बाधो जप जतर॥
''शिव पाण्डे'' जुगती स्यू फेरो मुगती री माळा पोयगी।
मुगती रै मारग चाल परी माई मीरा अमर होयगी॥

***

१८ भजन आबोदाना

राग-खमाच

आज नहीं तो कल होगा जाना।
चुगले जितना है आबोदाना॥

कर भलाई तेरे काम आयेगी।
बे मुहरत उठाई डोली जाएगी॥
मोत आएगी बन के बहाना। चुगले जितना है आबोदाना
जीवन की कीमती हर घडी है।
सास की टूटी जाती लडी है॥
कुछ कर मिटजाये आना जाना, । चुगले जितना है आबोदाना
ना रूकी रात ना दिन रूका है।
रूकी धरती ना आसमा झुका है॥
वक्त के लबपे ये ह फसाना। चुगले जितना हे आबोदाना
हर कदमो पे उलझन का पहरा।
सागर ससार पानी है गहरा॥
नीयत नईया सभल 'शिव' चलाना।चुगले जितना हे आबोदाना

***

१९ भजन श्री हनुमान जी का

राग-आजावो तडफते है नेना

बजरग बली मेरी करना भली मेरी मदद के तुम्हीं हो रखवाले।२
तेरा पवन पिता अजनी माई शिवजी की प्रथम सेवा पाई।
बल दिया तुमको धन्य माता मन को, नहीं कभी बचन उनके टाले॥
मेरी मदद के तुमही हो रखवाले बजरग बली मेरी करना भली।
बाबा रघुनन्दन के दास बने पता लगाने गए सिया जन के।
आप गढ लका ध्याए राक्षस भोत से मार आए नहीं ब्रह्म-फास के वचन टाले।

मेरी मदद के तुमही हो रखवाले, बजरगबली मेरी करना भली।
लडा लखन लडाई तब रण में लगा शक्ति बाण हृदय तन में।
राम देख दशा घबराए बूटी आप सजीवन लाए, सुखी बैद
ने पीला प्राण डाले॥
मेरी मदद के तुमही हो रखवाले बजरग बली मेरी करना भली।
मरा रावण राम के हाथो से गया वीरो के साथो से।
सीता ले के अयोध्या आए राज विभीषण दे आए
''शिव पाण्डे'' महिमा नित गाए॥
मेरी मदद के तुम्हीं हो रखवाले बजरग बली मेरी करना भली।

***

२० भजन सुणजो हेलो

राग-मिश्र खमाच

म्हारो सुणजो हेलो धजाबद आ थारै ताई पुकार।
म्हारो अन धन लेग्या चोरडा अर दियो पति नै मार॥
मैं सुणी आपरी जोतरी के काकड कळा फिरै।
थानै याद करया हा सेठजी डूबोडी झाझ तिरै॥
पैदल आवे यातरी बारै दुखडारो थेइ आधार।
म्हारो अन धन लेग्या
पूछै डालीबाई देवता अबै सिध थे सज्या।
बगसे खाती याद करया बारै बेटे प्राण तज्या॥
फळस बठयो जमो जगावै घरमें झुररी नार।
म्हारो अन धन लेग्या
पीरा री कळामे पीरा रा कटोरा हाथ पसार मगाया।
बोली जात गठ जोडे री म्हे आज देवण ने आया॥

पति सग मे सति होऊली नइतो सुणो पुकार।
म्हारो अन धन लेग्या
इति सुणी बाबो आयग्या क्यो आसूडा ढळकावो।
थारो पति सोयस्यो नींद मे लो दुखडा मन सुणावो॥
उठरै सेठ क्यो सूत्यो नींद मे, नगर बडो अजार।
म्हारो अन धन लेग्या
आख्या सू आधा के चोरडा ओ धनलो सेठ भाई।
म्हारी आख्या खोलो रामदे म्हे चोरी नहीं करा दुहाई॥
शिश तो निवावै 'शिव' धजाबद ने चरणा मे बारम बार।
म्हारो अन धन लेग्या

***

२१ भजन राम मुक्ती मत्र

राग-खमाच

राम मुक्ती मत्र है घडी ना बिसारिये।
आप जपो ओरो को जपा के भव तारिये॥ राम मुक्ती मत्र
माया का बहाव हे जीन्दगी एक नाव हे।
तूफा में आ भी जाए हिमत ना हारिये ॥
राम मुक्ती मत्र हे घडी न बिसारिये
माटी का बना हे घर भजनो से पवित्र कर।
आलस तज होश में आ जलम सुधारिये।।
राम मुक्ति मत्र है घडी न बिसारिये
राम पडे भनक कान पाप भागे छोड आन।
जोगी बन जोग रमा वासना को मारिये॥
राम मुक्ती मत्र है घडी न बिसारिये

राम अमृत को न अत पी के तरे साधू सत।
कोटि नमन कर के चरन आरती उतारिये॥
राम मुक्ती मत्र है घडी न बिसारिये
निरधन को राम धन अरपन कर तन मन।
"शिव पाण्डे" धारो तो राम ही धन धारिये।।
राम मुक्ती मत्र है घडी न बिसारिये

***

२२ देश भक्ती गीत

राग-झझोटी

भारत गोरव शाली मस्तक आवो नमन करे।
श्री चरनो में भारत मा के मिल सब नमन करे॥
मत्र उचारन करे देव किरना माला पहनाये।
शख बजाए गगन दिशाए गीत खुशी के गाये॥
पवन पुष्प बरसाए धरती महके ध्यान धरे। १
कुदरत आशीर्वाद दे सूर्य नया सवेरा लाये।
मनमोहन की बसी जगजननी की माग भराये॥
सत्य शपथ ले हम हाथो भारत निरमान करे। २
सागर खुश होकर के हाथो बाट रहा है मोती।
हिमालय के तले जल रही सब धरमो की जोती॥
एक दूसरे की झोली खुशिया खूब भरे। ३
माताओ की कोख पुजाए सस्कृति का नाम॥
और विश्व को देश भक्ती का गाकर दे पेगाम।
लिखकर के अपने हाथो सुन्दर इतिहास धरे॥ ४

***

२३ भजन राम नाम की कमाई कर ले

राग-काफी नाव कागद की गहरा है पानी

राम नाम की कमाई कर ले, काम आयेगी कर के धरले
ऐसे बीज ना कभी बोना।
हसते हसते पडजाये रोना॥
भक्ती कर के प्रभु से वरले। राम नाम की कमाई करले
धीरज धरम को नही तजना।
कहती सजनी सुनो सजना॥
कब पल में होजाए परले। राम नाम की कमाई करले
नीयत नईया सभल के खेना।
इसकी आदत हे डुबो देना॥
बात लिख के हृदय मे धरले। राम नाम की कमाई करले
"शिव पाण्डे" प्रभु विश्वास में।
डूब जावो ऊसी की प्यास मे॥
बनके आशिक प्रभु का मरले। राम नाम की कमाई करले

***

२४ भजन करमा बाई री खीचड़ो

राग-मिश्र माड

बापु मन्ने तो भोळाय गयो पूजा, गाव गया दूजा जीमो क्यो आट की
करमा म्हारो नाव ओई हे गाव मे बेटी जाट की
दिनुगे सी मे सिनान में कीयो, खोल मिन्दर बुहारो दीयो।
लाई गोरडी गाय रो दूध उठो, प्रभु मूढो धोकर पीयो॥
फेर जीमो खीचडो आप घी री काई बात कढी घालू छाछ की।

काल थारै ताई सिरो बणासू , पाणी मीठे कूवै रो लासू।
मूगा री दाळ मे घी री लाळ छोटा छोटा फुलका जिमासू॥
थानै भावै ज्योइ लेलिया म्हने के दिया कमी काइ बातकी।
करमा म्हारो नाम

बापु केया केया हुकम उठावू जीमलो तो मेइ रोटी खाऊ।
लो धाबळियै रो पडदो लगाऊ जी पीठ फोर खडजाऊ॥
प्रभु हस हस भोग लगाए देखती जाए प्रेम से बात की।
करमा म्हारो नाम

पडदो उठार भोळी बोली के लाऊ थे धापग्या तो हाथ धुवावू।
काल जल्दी जीमण आया मे डोवै री राबडी बणाऊ॥
प्रभु बोले करमा अब जाऊ काल जल्दी आऊ बसरिया
भूले आपकी। करमा म्हारो।

बापु बार गाव सू आयो करमा सो हाल सुणायो।
बो सुणर अचम्बे मे पायो कै करमा अब आयो कायो॥
यो कहते प्रभु आजावे भरम मिटावै अरज शिवलाल की।
करमा म्हारो नाम

***

२५ भजन गनेशजी का

राग-मिश्र खमाच

म्हे थानै शीस निवावा ओ गजानद, म्हे थानै सीस निवावा
सिर सोनै रो मुकट चमक र्‍यो।
सूड सुडाळा रूप दमक र्‍यो॥
केसर तिलक लगावा ओ गजानद। म्हे थाने सीस निवावा
थै अन धन स्यू भरो भडारा।

सदबुद्धि रा हो थे दातारा॥
मोदक भोग लगावा ओ गजानद म्हे। थानै सीस निवावा
धूप दीप स्यू कर नित पूजा।
थासा नही कोइ हे दूजा॥
दरशण कर हरसावा ओ गजानद। म्हे थाने सीस निवावा
महिमा गाया पाप कटै हे।
दुख दाळिदर दूर हटे है॥
अमर बधावो गावा ओ गजानद। म्हे थाने सीस निवावा
हित चित स्यू कोई दै फेरी।
''शिव पाण्डे'' कै बीकानेरी॥
मन ईछा फल पावो ओ गजानद। म्हे थानै सीस निवावा

***

२६ भजन धरम रो मायरो

राग-झझोटी

चानणिया म चमकै चीर, चीर ओढासी धरम रो बीर।
चन्दा रे सनेसो ल्यादै म्हारी मायरो॥
रस्ते बेहतो एक बिणजारो गाव बिणजवा आयो।
जाणू नई परायो जायो काइ काइ लदकर लायो॥
बिसराम करै पीपळ के तळै बीरी छाया गेर गभीर।
चन्दा रे सनेसो
तिस लागी बिणजारो फळसे पाणी पीवण आयो।
सासू हुकम स्यू भरकर लोटो ठडो पाणी पायो॥
भाई री याद काइ करी घाट आख्या सू बैग्यो नीर।
चन्दा रे सनेसो

बिणजारो सब बिणज भूलग्यो रोटी भूल्यो खाणी।
गूघटो उठार बाई दुखडो सुणादो नई थांरै मनडे री जाणी॥
बीरा बण कर दुखडो सुणस्यू केवो तो पोचायदू पीर।
चन्दा रे सनेसो

हस हस काम करू रे बीरा दुख सहता सुख आई।
सब कुइ दियो भगवान दियो ना मा री जायो भाई॥
मायरिये री मन मे म्हारे कुण तो ओढावै चीर।
चन्दा रे सनेसो

सूरज साक्षी मे धरम रो भाई फिकर करो क्यू बाई।
मायरिये मे काइ काइ चाइजै जल्दी करो लिखाई॥
आगणिये चढ भरु मायरो जद आवैलो धीर।
चन्दा रे सनेसो

थे मती बहावो नीर ओढो लो चीर भाई सिर हाथ धरै।
बिणजारो भाणू रै ब्याव मे मामो बण मायरो भरै॥
"शिव पाण्डे" धन कदियन घटियो बढग्यो नदिया नीर।
चन्दा रे सनेसो

***

२७ भजन स्तुति

राग-मिश्र पीलू

जनम जनम का दास मा तुम्हारा, तुम्हारा में तुम्हारा तुम्हारा
जो ना महर करोगी कैसे होगा मेरा गुजारा।।
जनम जनम का दास

मन मन्दिर की जोती तू कभी न बुझती जलती
पवन झकोरे सागर मे तूफा तन मचलती।।

नदियो में बह अन उपजाती करते हम गुजारा।

जनम जनम का दास

अनहोनी से होनी बन करती दूर अधेरा।
जहर भी अमृत बन जाता ऐसा साया तेरा॥
ममता महके हर जीवन में नाम बडा ही प्यारा।

जनम-जनम का दास

शकर की पटरानी रूप अनेको ही रूप है।
उतर गगन से धरती पर खिलती बनकर धूप है॥
देवो ने भी पार न पाया देत्यो को यू मारा।

जनम जनम का दास

चरनो का चरनामत ले हम नतमस्त करते।
दरशन मागे ना धन दोलत ध्यान मगन हे धरते॥
"शिव पाण्डे" भक्तो की विनती और न कोई हमारा।

जनम जनम का दास

***

२८ गीत इन्सानियतपन

राग-देशी भैरवी

छोड मत इन्सानियत पर काम तेरे आएगी।
वक्त लेता है परिक्षा एक दिन रग लाएगी॥
मुश्किले डालेगी डोरे हर सुहानी राहो में।
बेडीया डालेगा वक्त बढते हुए पावो में॥
मन्जिलें छाती चढेगी और तू घबरायेगा।

छोड मत इन्सानियत

ठोकरे किस्मत की खा हारना हिम्मत नहीं।

सत्यता के ओ पुजारी हिम्मत की कीमत नहीं॥
जिनगी विरान करने सरपे तूफा छाएगा।
छोड मत इन्सानियतपन
गम के घेरो में घिरेगा दम लगेगा टूटने।
अपने बेगाने बनेंगे आर लगेंगे लूटने॥
होसला तेरा बुलन्दी कामयावी लाएगा।
छोड मत इन्सानियमपन
मौत तक पे आ बनेगी यार तू झुकना नहीं।
मुश्किले आसान होगी हार के रुकना नहीं॥
रूक गया शिव पाण्डे प्रभु की नजर से गिरजाएगा।
छोड मत इन्मानियतपन

***

२९ गीत

राग-ला मैं हारी पीया होई तेरी जीत रे

दिल के भी चोर निकले मन के भी चोर निकले
करी मो से घात रे
देकर के झूठे दिलासे छोडगये साथ रे
जबसे छोडगये मनमोह बीते कठिन कठिन से रेन।
सुद्ध बुद्ध सारे तनकी भूली लूटा मेरा सारा चेन॥
सुखसे बसना रे ग्वाली देखी तेरी जात रे।
मथरा छोडगये हो जबसे गाये वाट तेरी जोती
तुम बिन सूने रास के ग्वाली मेरी प्रीत यहा रोती॥
सूना गोकुल का जगल सूना घाट घाट रे।
इतना लिख भेजो मनमोहन कब मिलने तुम आओगे।

हमे छोड तुम निरदेई क्या बस्ती नई बसावोगे॥
जसोदा के लाल तुझसे कहनी मनकी बात रे।
मुरली की धुन सुन ने को नित मेरा मन तरसता है।
ऊधो ने उपदेश सुना के हालत करदी खस्ता है॥
"शिव पाण्डे" कहे बीकानेरी लाज तेरे हाथ रे।

***

३० नयनो तले अधेरा

राग-तोडी भजन

पछी ये पिजरा नहीं तेरा तरे नयनो तले अधेरा
मनवा ये पिजरा नहीं तेरा तेरे नयनो तले अधेरा
अभिमानी अभिमान को तजकर निरमल करले काया।
इस पिजरे की काम न आये तेरे सुन्दर छाया॥
चारो तरफ लगा है इसके कालबली का घेरा।
पछी ये पिजरा नहीं
पर घर आखिर पर घर प्यारे, अपना घर ही खोज।
राम नाम रट मिटजायेगा आना जाना ये रोज॥
ये टूटेगा तू छूटेगा जिसमे है तेरा बसेरा।
पछी ये पिजरा नहीं
कितने जनम लिये ओर लेगा मोह माया को छोड।
तेरी मुक्ती इसी में प्यारे प्रभु से नात जोड॥
शिव पाण्डे जिन चरन कमल से लाता सूर्य सवेरा।
पछी ये पिजरा नही

***

३१ भजन शकरजी का

राग-झझोटी

देवो में देब महादेव दूसरा न कोई रे।
मेरे तो एक भोलेनाथ दूसरा न कोई रे॥
जिनके गले नाग राज तिलक चन्द्र शोभिते।
दरशन से मुक्ती होत विश्वनाथ वोई रे।। मेरे तो एक महादेव
सीस गग पीये भग विष धर नील कठ हे
देवों को अमृत पिलाया, अमृत राज वोई रे। मेरे तो एक महादेव
अग पे बभूती रमे चन्द्रमा सोये छवी।
तीनों नेत्र तीनो लोक नाथो के नाथ वोई रे।। मेरे तो एक महादेव
माला जपे प्रसन्न होके करते हे नीहाल भी।
सुख करन दुख हरन दाता दातार वोई रे।। मेरे तो एक महादेव
सब को देत कुछ ना लेत महिमा जो अपार हे।
शिव पाण्डे महिमा गाए भूत नाथ वाई रे॥ मेरे तो एक महादेव

***

३२ हिन्दी सब की माता

राग-खमाच

अहसान चुका न सकते इससे जनम जनम का नाता है।
कोटि कोटि का नमन करे हम सबकी हिन्दी माता हे॥
पवन दिशाओ को महकाती गुणवन्ती गुण खॉन ये।
हर घर आगन स्वर्ग बनाती दे पावन वरदान ये ॥
इसकी गोरव गाथा से ससार तलक महकाता हे।
कोटि कोटि का नमन
यही बोलना सिखलाती मुख उगली पकड चलाती।

माटी के पुतले में सुन्दर ग्यान की जोति जलाती॥
आशीर्वाद लेकर के इनशा क्या से क्या हो जाता है।
कोटि कोटि का नमन
जीवन सफल बनाया इसने इसका नाम पुजाये।
ससार हमे धिक्कारेगा पीकर गर दूध लजाये।
उसकी मुक्ती नहीं होगी जो इसका नाम लजाता हे।
कोटि कोटि का नमन
तुलसी मीरा सूरदास नै लिखकर दीप अमर जाये।
विवेकानन्द नै परिचय देकर विश्व जनों के मन माये॥
"शिव पाण्डे" धिकार दूसरी भाषा जो गले लगाता है।
कोटि कोटि का नमन

***

३३ भजन धन गुरु राम राम रस पावो

राग-देश तिलक

धन गुरु राम राम रस पावो।
उळझ्यो जीवन सुळझावो॥
भगती रो मारग हे बाँको।
सारथी बण जीवन रथ हाँको॥
थेई म्हारा धन्य भाग हो किरपा कर अपनावो।
धन गुरु राम राम
मेली काया कचन करदो।
सिर धर हाथ गुणा सू भर दो॥
घट रो दूर अधेरो कर के ग्यान री जोत जगावो।
धन गुरु राम राम

मनवो वृन्दावन वन रो वासी।
आत्मा चरण कमल री दासी॥
चरणा रो चरणामत देकर जीवन सफल बणावो।
धन गुरु राम राम

अमरनाथ अमरापुरा वासी।
''शिव पाण्डे'' घट घट रा वासी॥
एक घडी ना भूलू आगण सावण बणकर छावो।
धन गुरु राम राम

***

३४ माताजी की स्तुति

राग-कोन जाए काशी कोन जाये मथुरा

हिमत नहीं तोडना छम्पू नही छोडना, लाखो प्राणियो हाथ में लगाम है।
पापी धरमी भरे नइया पार करये मइया तेरे चरनो में मेरा ध्यान है॥
पूजा की ना अधूरी फिर पुकारु हमेसा बधन से आरती उतारू।
रस्ता मिलता नहीं जो तेरे द्वार आवू तूफा ने घेरा कैसे छुटकारा पाऊ॥
आकर बनजावो खेवइया मेरी पार लगावो नईया।
तेरे विल्म में लगाई मैंने जान है।। पापी धरमी भरे नई पार करये मइया तेरे चरनों
लाखो भक्तो को तुमने मा उबारा ऋषि मुनि जन गावे गुन थारा।
सारी सृष्टी में नाम उजियारा एक सचा दरबार है तुम्हारा॥
सूरज चाद और सितारे दरशन करने आये द्वारे।

सारे देवो में मा पूजा सनमान है। पापी धरमी भरे नइया
पार करये मइया

नाम सब की जुबा पे देखो आया त्रिशूल हाथ सोये सिघ
को उठाया।

देवो ने शकर का डमरू बजाया फिर विकराल रूप हे बनाया॥
समुदर बोला जे जेकार भक्त की नइया करदी पार।
लीला देखो केसी मा की महान है। पापी धरमी भरे नइया
पार करये मइया

देखो सचे मन से रटना लगाके मा के द्वार आके मागो जुबा से।
खाली गोद भरती है घर आके सुख सम्पती दे हाथ से उठा के॥
बीकाणो सारो थाने ध्यावे सुबे ओर श्याम आरती गावे।
शिव पाण्डे करे नित गुण गान है। पापी धरमी भरे नइया
पार करये मइया

***

३५ भजन बाई सुगना री

राग-बाबा सा री लाडली कठीनै चाली रे

सुगना के बीरा पिवरिये री ओळू आवै रे
में थकगी मारग देख देख कोइ लेवण आवे रे
दूर दूर कोसा परणाई बाबल धोरा पार रे।
कागदियो तक देवे कोनी मायड बार तिवार रे॥
जद आवै सब री याद नींद म्हारी उडजावे रे।
सुगना के बीरा पिवरिये

बेमाता रा लेख लिखोडा दोष किणा ने देऊ रे।
सास नणदरा मेणा सुण सुण गूघटे मे रोऊ रे॥

करू अणेसा मन ही मन कुण लाड लडावै रे।

सुगना के बीरा पिवरिये

सासरिये पिवरियै सै ने लागी आज अदावणो।
आभै पटकी धरती झेली जाऊ किणर रै पावणी॥
उफती ने मन में जहर खार मरणै री आवै रे।

सुगना कै बीरा पिवरिये

थे मनडे री थका जाणता नई जे लेवण आवोला।
नाक कटेली बेनडली ने अब जीवत नी पावोला॥
आ मन में सोच परी सुगना आसू ढळकावै रे।

सुगना कै बीरा पिवरिये

झुझक नींद सू उठ्या रामदे सुण बैनड री बात रे।
ऊट पिलाण कसा रतने नै भेज्यो रातों रात रे॥
बा देख परी हरषी "शिव पाण्डे" ओळ्यू गावे रे।

सुगना कै बीरा पिवरिये

***

३६ राग-चन्दे मेरी पतिया लेजा

हम भारत के लाल लाडले तुम हो मा तेरी सरन पडै
खडे है द्वारे आज हमारे बोल सुनो दो दरद भरै
शक्ति दया मा ओ शिव रानी प्रथम पूजा करते है।
पुष्प की माला ओर नारियल तेरी भेट में धरते है॥
धुनि शख की सुनकर नर ओर नारी जै जैकार करे।

खडै द्वारे आज

समय के खेल खिलाये खेले यह ना बसकी बात है।

भारत का भव तुम्हीं सुधारो मा ये तेरे हाथ हे॥
लाल लाडलो के नयना क्यो आसूडो से आज भरे।
खडे हे द्वारे आज
शक्ति भगति दो हम सबको राणा सेवा से हम होवे।
उज्जवल करे देश को अपने ऐसा दीप अमर जोवे॥
इस धरती की तू धनवन्ती क्यो न सरपे हाथ धरे।
खडे हे द्वारे आज
तुम्हे देश की भारत मा कह सारा भारत ध्याता हे।
तेरे होते भक्त जनो पर फिर क्यो सकट आता हे॥
शिव पाण्डे सग दोस्त सभी मिल हाथ जोडकर अरज करे।
खडै हे द्वारे आज

***

३७ माताजी की स्तुति

राग-चाहूगा मैं तुझे श्याम सबर

ओ भारत की मा महारानी तुझको सुनाने आज कहानी।
हम आये तेरे द्वारे, हम आये तेरे द्वारे॥
हम भूले ना मा तुझको कभी।
सरन पडे हें तुम्हारी सभी॥
सुन मा तुझको बार बार तेरे लाल यू पुकारे।
हम आये तेरे
किसको कहे हम दुख की कथा
कहा जाये ये तुम्ही तो बता
सुन मा तुझको बार बार तेरे लाल यू पुकारे।
हम आये तेरे

अब भारत में कोई ना सुखी।
पशु पक्षी तक सब है दुखी॥
सुन मा तुझको बार बार तेरे लाल दुख से हारे।
हम आये तेरे

अब भक्तो पे मा महर करो।
सद बुद्धी दे सुख भी करो॥
सुन मा 'शिव' भी बार बार तेरे चरनो को नित पखारे।
हम आये तेरे

***

३८ भजन टींटोड़ी रा अडा

राग-श्याम कल्याण

काकरिया कुन्डाळे राख्या पाच अड पाचू ही पाक्या।
टींटोडी के रूखोळो राम म्हारे बच्चा नै पाळो राम॥
ठाराक्षण सेना झूझेली कुरक्षेतर धरती धूजैली।
जोधा साम्ही जोधा लडसी अणगिणतीरा माथा झडसी॥
होयसकै जुध टाळो राम, टींटोडी कै रूखाळो राम।
बाणारी बोछाडा होसी बहती तरवारा मू धोसी।
आपो आपरी रक्ष्या करसी म्हारा बच्चा बचै न मरसी॥
लोई रा बहसी बाळा ओ राम, टींटोडी कै रूखाळो राम।
अडा उपर उडारी भर री हाफी लाऊ झाऊ कर री।
टळक टळक आसूडा ब्हवै काळजीयो कळपै आ केवै॥
दूजो कोई ना चारो राम, टींटोडी के रूखाळो राम।
टेर सुणी प्रभु स्याय करै है बचन दियोडा न्याय करै है।
हाथी पसोडै सू घटो टूटै अडा ढकिजै एक न फूटै॥

पालर पाणी पीळो आटो गूदयो कुदरत देखयो।
कर मन कोड मुळती हाथा मेजळ खीरा सेक्यो॥
शक्कर बुरका करमा ज्यू घी घाल्यो बेजारे। मा थाळी पुरस्यो
कानूडे ने छप्पन भोज फीका लाग्या ई आगे।
महके ममता माय भावना मूघया भूखडली भागै॥
कढापरो मोहरत आवण कानामे केजा रे। मा थाळी पुरस्यो
कू कु आगण मड्या पगलिया इचरज कर सै पूजसी।
ढोला ढमकारा सोनलिया सूरज धोरा ऊगसी॥
सपना साचो हाय पावणो घडिएक रेजारे। मा थाळी पुरस्यो दई
गठजोडै सू दुनिया बिणजै पूरो पुनमनै ऊगतो।
च्यारू खूट पगा सू नापे धग्मजला अथूण पूगतो॥
कोई थन्ने पाबूजी के कोई क तेजारे। मा थाळी पुरस्यो दई
ले थुथकारो न्हाख सरावू चाँदी बरणै रूप न।
तेज तपै लिलाड धोक दयू लुळ भूपा से भूप ने॥
शिव कागद कविता ऊगै बै आसीसा देजारे। मा थाळी पुरस्यो

***

४२ भजन-मत भटक रे भागी

राग-देशी तोडी

मारग सू मत भटक रे भागी भटक्या सू दुख पावलो।
हरि बाधी मिरियादा तोडया सिर धुण धुण पछतावैलो॥
आधी छोड सापती ताक प्रभु दौना स्यू राखे।
हाथी नै मण ससाग्कि घण कीडी न कण न्हाख॥
आदतडी फोडा घालेली जे तू नियत डिगावैलो। भटक्या
स्यू दुख

बधा चिन्ते बोत घणेरी राम करै सोइ होवे।
जिण हाथा स्यू भलो होवणो बीज पापरा बोवे॥
आस परायी कदे ने पूरै पथ भ्रष्ट होजावलो॥ भटक्या स्यू
सबर सुलखणी सतोषी जी धीरज सू सो कीं होवै।
जुलम करोडा आय सामने सिर रे हाथ लगा रोवै॥
मिनख पणे रो मान करे हरि भवसागर तिरजावेलो। भटक्या स्यू
झूठा काढ परो आडम्बर दे दुनिया न धोको।
'शिव पाण्डे' के ओ लाखिणो मत जावण दो धोको॥
देवा जेडी जुण सुलखणी कुण जाणे कद पावैलो। भटक्या सू

***

४३ भजन शकर जी का

राग-जय काफी

भोळा थारै दरशण ताई मन म्हारो हरसायो।
मे छोड धोरा री धरती बीकानेर सू जी आयो॥
ओ भगता रा अतरयामी सुणजो म्हारी बात जी।
साचोडै मनडे स्यू दाता दोनू जोडू हाथ जी॥
भाव भक्ति रा पुष्प चढावण सागे स्वामी लायो।
मै छोड धोरा री धरती
म्हारे मरूधर थे पावणिया एकर भोळा आवो।
नदेश्वर असवारी सागै मा गवरा ने लावो॥
जनम जनम स्यू हिवडो हरखे दरशण बिना तिसायो।
मे छोड धोरा री धरती
रूत रूत रै मेवा री शोभा गाइ गीता मे जावै।
छप्पन भोजन छोड देवता माखण मिसरी खावे॥

छाछ राबडी ओर दई रो स्वाद न जाय सरायो।
मे छोड धोरा री धरती
सावण सुरगो इमरत बरसे मीठा मोरीया बोलै।
सुणकर अेकर ध्यान लगाता ऋषि पलक ने खोलै॥
जाणे कोई रस को प्यालो हे बेठा ने पायो।
मै छोड धोरा री धरती
मन मोहन नै मुरली दीनी भजन किया दुख भागे।
कलकत्ते मे धाम ताडकेश्वर मे मेळो लागे॥
शिव पाण्डे मेळै री शोभा गाकर भजन सुणायौ।
मे छोड धोरा री धरती

***

४४ माताजी की स्तुति

राग-चन्दा रे मेरी पाति लेजा

हम भारत के लाल लाडले तुम हो मा हम तेरी सरन पडे।
खडे हे द्वारे आज हमारे बोल सुनो दो दरद भरे॥
शक्ती दया मा ओ शिव रानी प्रथम पूजना करते हे।
पुष्प की माला ओर नारियल तेरी भेंट में धरते है॥
धुनि शख की सुनकर नर ओर नारी जै जे कार करे।
खडे है द्वारे आज
समय के खेल खिलाए खेले ये ना बसकी बात हे।
भारत का भव तुम्ही सुधारो मा ये तेरे हाथ हे॥
लाल लाडलो के नयना क्यो आसूडो से आज भरे।
खडे हे द्वारे आज
शक्ती भक्ती हम सबको दो राणा सेवा से हम होवे।

उज्वल करे देश को अपने ऐसा दीप अमर जोवे॥
इस धरती की तू धनवती क्यो न सरपे हाथ धरे।
खडे हे द्वारे आज
तुम्हे देश की भारत मा कह सारा भारत ध्याता है।
तेरे होते हे जग जननी फिर क्यो सकट आता है॥
शिव पाण्डे सग दोस्त सभी मिल हाथ जोडकर अरज करे।
खडे है द्वारे आज

***

४५ भजन कोई न हमारो हे

राग-भैरवी

आप बिना प्रभु कोई न हमारो हे।
भव से तरन को और न चारो हे।।
आप बिना प्रभु कोई न हमारो हे
विनती करता प्राण पखेरू।
डूब न जाऊ मैं नहीं तेरू॥
पापन को मेरे सरपर भारो है।
आप बिना प्रभु कोई न हमारो हे
तन मन आप रग रग दो जी।
कैसे जीऊ बतावो ढग जी॥
बिगड गयो दुनिया को धारो है।
आप बिना प्रभु कोई न हमारो है
जीवन रथ प्रभु आप ही हाको।
पाप आप स्यू खावै चाको॥
नाम ही नयनन को उजियारो है।

आप बिना प्रभु कोई न हमारो है
तन चादर पर दाग न लागै।
मे मागू कुछ ओर न आगे॥
'शिव पाण्डे' को इसी में गुजारो है।
आप बिना प्रभु कोई न हमारो है
***

४६ भजन दरपन का पानी

राग-काफी

उतर न जाए तेरे दरपन का पानी।
पानी की कीमत पडेगी चुकानी॥
जो तूने मागा प्रभु ने दिया है।
बदले में प्यारे कुछ ना लिया है॥
वो महरवा करते ह मेहरवानी।
उतर न जाए तेरे दरपन का पानी
कर युग करम कर खे अपनी नोका।
नीयत पे सारा ह तोला जोखा॥
मोजो पर तूफा की उठती जवानी।
उतर न जाए तेरे दरपन का पानी
अरदाश अरपन भाव ही निराले।
प्रभु के चरन पर रख गुन गाले॥
आरती कर मुख बोल मीठी बानी।
उतर न जाए तेरे दरपन का पानी
जितने हे दरपन उतने ही चहरे।
सब पे लगे है प्रभुजी के पहरे॥

''शिव पाण्डे'' तुच्छ ये जिन्दगानी।
उतर न जाए तेरे दरपन का पानी

***

४७ गीत प्राण देवता, प्रीतम

राग-पीलू

प्रीतम मेरे प्राण देवता मैं प्रीतम की आरती।
सावरिया के मैं चरनो पर तन मन अपना वारती॥
मुस्काती कोमल बाहो में मुझे निराला प्यार मिला।
स्वर्गों से सुन्दर महकाता एक नया ससार मिला॥
जिनके पावन प्यार से नित अपनी माग सवारती।
मैं प्रीतम की आरती
वो माझी ससार सागर में तो उनकी नौका हू।
तूफानो ने भी नहीं देखा ऐसा प्यार अनोखा हू॥
मन मन्दिर में पुजू मन से वो है मूरत प्यार की।
मैं प्रीतम की आरती
मेरी बिंदिया मेरी निंदिया मेरे दिल का चैन वो।
सूरज चन्दा कगना अगना सदा सुहानी रैन वो॥
तारो की झिलमिल छाया में, रातो रूप निहारती।
मैं प्रीतम की आरती
छाया बनकर साथ चलूगी दुख सुख मेरा गहना है।
अपने पथ से नहीं भटकूगी मरियादा में रहना हे॥
'शिव' पति को परमेश्वर समझे वो हे नारी भारती।
मैं प्रीतम की आरती

***

४८ गीत गो हत्या पर

राग-भैरवी

ऐ भारत माता के बेटो क्यो गफलत में सोये।
कटती गउवे सास सास में बाट तुम्हारी जोये॥
धरती माता यही देख अति मन म दुख उपजाये।
आसमान भी मोन खडा नयना स नीर बहाये॥
सूरज चाद सितारा न दुखडा के दीप सजाये।
कटती गउव सास

जिस माता ने हस हस करके तुमको दूध पिलाया।
उसकी गरदन पर चलती है आज मौत की साया॥
उन बछडा से बिछड बिछड माता की ममता रोये।
कटती गउवे सास

पावन गगा यही दखकर अब मरियादा तोड रही।
यमुना की लहरे लहराती तुमसे मुखडा मोड रही॥
स्वर्ग लोक में बैठी सतिया दुख की माला पोय।
कटती गउवे सास

अरे इन्सानो क्या भूल हो गउमाता का प्यार।
गीता रामायण का गोरव तुम्हे रहा ललकार॥
पवित्र धरती में पापी बैठे बीज पाप के बाये।
कटती गउवे सास

सब मजहबो के लाल लाडलों जागो करो न देरी।
गउवे कटनी बन्द होय 'शिव' कहता बीकानेरी॥
काटो बेडिया मोत की माँ का सुख में जीवन होये।
कटती गउवे सास

***

४९ भजन सीया राम बन माय चले

राग-देशी भैरवी

सीया राम लखन बनवास चले, लिखने को नया इतिहास चले।

सूर्य सा मुख पर चमके तप।

चले पिता वचन पालन कर नृप॥

जोगी के वस्तर धारन कर हसते मुख छोड के ताज चले।

सीया राम

गुरु बोले ये अहिला नारी।

बरसो से सिल्ला है बेचारी॥

प्रभु मन ही मन दे आशीर्वाद अहिला का श्राप उतार चले।

सीया राम

केवट बोला सिर रखवा कर।

भव पार मुझे करना रघुवर॥

राम गले लगा दे उतराई इस पार से फिर उस पार चले।

सीया राम

भिलनी जब बेर खिलाती है।

माँ कोशल्या याद आती है॥

हकदार दार स्वर्ग की हे ममता,भिलनी को देविश्वासचले।

सीया राम

होनी ने खेल रचा ये सारा।

करवाया केकई के ही द्वारा॥

'शिव पाण्डे' रघुकुल रघुनन्दन धरती का उतारने भारचले।

सीया राम

***

५० देश भक्ती का गीत

राग-मिश्र देश

हिन्द मिट्टीका तिलक चमकता जैसे मस्तक चन्द है
और पानी में उठती भी कुरबानी की उमग है
जनम देश भक्तो को देती धरा पूजनी कोख
उनके ऐलानो पर कोई लगा न पाया रोक
आजादी के परवानो ने लडा अनोखा जग है।

और पानी में

प्राण न्योछावर कर शहीदो ने लिया गगन को चूम
गुलशन मे फूलो के लब पर नाम रहा है झूम
इतिहास में लिखा खून से मरने का भी ढग है।

और पानी में

अब दुश्मन ना खींच सकेगा भारत माँ का चीर
मोत हथेली लिये खडा है हर भारत का वीर
जिनको प्राणों से यारी ना सासो की कहे तरग है।

और पानी में

सभी धरम के नारे छूते भारत माता के पाव
एकता और मेहनत महके खुशहाली हर गाव
'शिव पाण्डे' कुदरत की आशीर्वादे सब के सग है।

और पानी में

***

५१ भजन दुपट्टा

राग-इन्ही लोगा ने ले लिया दुपट्टा मेरा

मोहन ने अजी मोहन ने अजी, मोहन ने रग दीया दुपट्टा मेरा।
मेरी ना मानो तो द्रोपदी से पूछो।

जी द्रोपदी से पूछो द्रोपदी से पूछो॥
चीर बढा के चल दिया मन मोहन मेरा।
मोहन ने रग दीया दुपट्टा मेरा
मेरी ना मानो तो अर्जुन से पूछो।
अर्जुन से पूछो जी अर्जुन से पूछो॥
गीता का ग्यान दे दिया मनमोहन मेरा।
मोहन ने रग दीया दुपट्टा मेरा
मेरी ना मानो तो मीरा बाई से पूछो।
मीरा बाई से पूछो मीरा जी से पूछो॥
विप अमृत कर दिया मनमोहन मेरा।
मोहन ने रग दीया दुपट्टा मेरा
मेरी ना मानो तो ध्रूजी से पूछो।
ध्रूजी से पूछो जी ध्रूजी से पूछो॥
जिनको अमर कर दिया मनमोहन मेरा।
मोहन ने रग दीया दुपट्टा मेरा
मेरी ना मानो तो नरसी जी से पूछो।
नरसी जी से पूछो नरसीजी से पूछो॥
हुन्डी चुका के चल दिया मनमोहन मेरा।
मोहन ने रग दीया दुपट्टा मेरा
मेरी ना मानो तो नानी बाई से पूछो।
नानी बाई से पूछो नानी बाई से पूछो॥
भरके माहेरा चल दिया मनमोहन मेरा।
मोहन ने रग दीया दुपट्टा मेरा

मेरी ना मानो तो शिव पाण्डे से पूछो।
'शिव पाण्डे' से पूछो शिव पाण्डे से पूछो॥
जिसको दिवाना कर दिया मनमोहन मेरा।
मोहन ने रगदीया दुपट्टा मेरा

***

५२ भजन-राजा भरतरी

राग-छुप गया कोई रे दूर से पुकार के

सुनलो भरतरी राजा रानी की पुकार रे
जोग ना रमावो रईयत कहे बार बार रे
ऐसी क्या दिल में धारी जोग जो रमाते हो।
भूल है क्या बन्दगी में क्यो न ये बताते हो॥
चुप क्यो खडे हो जोग देवो नी उतार रे।
जोग ना रमावो रईयत कहे

ब्याही मुझे भोलापन मे पकडा मेरा हाथ जी।
माग मे सिन्दूर भरा जिन्दगी का साथ जी॥
मुझको किसको भोळाई देवो ये बातय रे।
जोग ना रमावो रईयत कहे

राज पाट धन ओर दोलत सभी छोड जाऐंगे।
रूदन ना मचावो जोगी नहीं भरमाएगे॥
कोई न कसूर तुम्हारा होई होनहार रे।
जोग ना रमावो रईयत कहे

जोगी तो जगमें फिरते जगल के है वासी रे
प्रीत की ये रीत छोडी हुवे अविनाशी रे
राजा को देखे रानी रोए झार झार रे।
जोग ना रमावो रईयत कहे

होनी तो होके रहेगी कैसे टल जाऐगी।
जोग सफल होगा जब तू भिक्ष्या लेके आऐगी॥
नाम सारे जुगमे जोगी भरतरी पवार रे।
जोग ना रमावो रइयत कहे
इतनी सुनी का रानी भिक्ष्या लेके आई हे।
भिक्ष्या डाल कर पति के चरन पखाई है॥
तेरे योग यही में रहूगी क्यो न जान जाए रे।
जोग ना रमावो रईयत कहे
भिक्ष्या ले वहा से राजा जगल को धाये है।
साथ गुरु गोरख राजा भभूती रमाये हे॥
राज तो विक्रम को दिया शिव महिमा सुनाऐ रे।
जोग ना रमावो रईयत कहे

***

५३ भजन-श्री रामदेवजी का

राग-झूले मे पवन के आई बहार

दुखियारी बाबा आए तेरे द्वार, आकर के करते तुमसे पुकार।
महिमा गाते अरे हो हो महिमा गाते॥
अरे हो हो हो जगमग जोत ज्यो जोए पूजा बन्धन से होए
मूरत मनडै ने भाए लीले असवारी सोए
दरशन कर के हरसाते महिमा गाते। अरे हो हो हो महिमा गाते
अरे हो हो हो सच्चे भावसे आते खाली हाथ ना जाते।
अधे आख भी पाते कोढ उनके झड जाते।
जोती जतन से लगाते महिमा गाते। अरे हो हो हो महिमा गाते
अरे हो हो हो हिन्दवा रो है थारै। धाम पीरा में हे साचो नाव।

मक्का में हे थागे काम थे हो अजमल जी रा श्याम॥
परचा पल में दिखलात महिमा गाते। अरे हा हो हा महिमा गाते
अरे हो हा हो सुणजो दुखिया रा हेलो सुखरो दिखलाओ गेलो।
शिव पाण्डे चरणा रो चेलो धणी थे नाळ मे खेलो॥
ध्याते वाही फल पाते महिमा गाते। अरे हो हो हा महिमा गाते

***

५४ भजन किण बिलमाया

राग-मिश्र काफा

किण बिलमाया क्या नहीं आया ओ भगता रा स्वामी।
खडा अडीके एक रगीलो थाने राजस्थानी॥
किण दिश आसो आतो कदो उण दिश नेणा बिछाऊ।
हिरदे रै सिगासण बठ्या मे थान लेवण आऊ॥
प्रभु थ कू कू र पगल्या आया सुणजो अतरस्यामी।
खडो अडीके एक रगीलो
म्हार धारा री धरती ऊपर में चढ दवू हेलो।
काकड माथ खडो अडीकू थे मत भूल्या गेला॥
थारी आवण सुणर मारीया देख गेला खानी।
खडो अडीके एक रगीलो
थारी आवण सुण पिणहास्या भर घडा ने छोड्या।
हरख हरख कर टाबर टोळी गाव रै गेले दोड्या॥
दई जीमा सा दूध पासा माखण री मिजमानी।
खडो अडीके एक रगीलो
भादू मे निपजोडा मेवा थे कद आकर खास्यो।
आ नद जी रा कान कवर या सगळो गाव हसास्यो॥

नई सेर सा गटका म्हारै म्हेतो हा किरसानी।

खडो अडीकै एक रगीलो

अगूण मे तो किरत्या ऊगै सूरज साम्हो गाव हे।
मोहल्लो हत्थो बीकानेरी शिव पाण्डे म्हारो नाव है॥
थारी गाऊ मुरली गळी गळी म्हारै है राधा सी राणी।

खडो अडीकै एक रगीलो

***

५५ माताजी की स्तुति

राग-भीम पलासी

मेरी दौड तेरे तक माँ तेरे पे है दारोमदार।
तेरे द्वार खडे लाल के तू जानती विचार॥
जग मग की जोति जोवै अटल दिवलो थारै।
घटी आर घडियाल गूजे शख के नगारे॥
जब तेरे भवन से मा उठे धूप की महकार।।

तेरे द्वार खडे लाल के

अपने हित की सब ही कहे सुनलो हो मईया।
मेरे जीवन नोका की तुम ही हो खेवईया॥
हे सिध वादनी मा चढो सब की मदद गार।

तेरे द्वार खडे लाल के

तेरे बिना कोन सुने गरीबो के दुखडे।
जिनके दुखी लाल उनके मुरझा गए मुखडे॥
जो हिम्मत नहीं हार रहे दुखडो को जार।

तेरे द्वार खडे लाल के

अगर तू ना भक्तो की मदद चढके आएगी।
हम हे लाल तेरी लाज दुनिया में जाएगी॥
शिव पाण्डे सग महिमा गाए दोस्त मिलके द्वार।
तेरे द्वार खड लाल के

***

५६ भजन चूनडी

राग-काफी

म्हारी रग दो चूदडी रगदो घनश्याम चूदडी रगदो।
रग दिन दिन लावे रगदो मन भावण चावण रगदो॥
मैं ओपगी सुख पाऊ नित महिमा थारी गाऊ।
मनडै में उमग उठावे भगती रा भाव जगावै॥
जुग जग नही फाटै रगदो। घनश्याम चूदडी रगदो।
पापी तिरजावै ओढया सुरगा री पोचे डोळ्या।
सगळा रै मन नै भावै ओढ्या थारो होय जावै॥
भव पार करै इसी रगदो। घनश्याम चूदडी रगदो।
पापी ओढण ने तरस धरमीडा ओढर हरसे।
रग इशो अनोखो होवै घट ग्यान रो दिवलो जोवै॥
मन चावण भावण रगदो। घनश्याम चूदडी रगदो।
ओ बिनती कर के केणो, मरियादा माई रेणो।
'शिव पाण्डे' न आ रग प्यारो ओढ्या सू सुधरे जमारो॥
चरणा रो हू चाकर रगदो। घनश्याम चूदडी रगदो

***

५७ भजन-मे अवगुन की खान

राग-झझोटी

सुनो जी हरि मे अवगुन की खान।
मोसे जाय तज्यो ना अभिमान॥

नजर महर की आप निहारो मन मन्दिर मे होय उजारो।
द्वार आप के दौडा आऊ स्वामी जय माला पहनाऊ।।
रोम रोम फूलो सा महके उपजे हिरदै ग्यान।
सुनो जी हरि मैं

डूब रहा हू दामन पकडो करम छुडाए छूट न जाऐ।
सास भवर में भटक रहा है तार मिलन के टूट न जाऐ॥
गाऊ आर गवावू हरि हर है सुखकारी नाम।
सुनोजी हरि मैं

अप बल तप बल थाक्यो भुजबल स्वारथ को बल काम न आयो।
आश की नइया डूब न जाए चारो तरफ अधेरो छायो॥
आशीर्वाद खाली नहीं जाये तुम पर हो कुरबान।
सुनो जी हरि में

सत्य भाव के पुष्प महकते कोटि नमन कर चरन चढाऊ।
आप दया के सागर स्वामी रीझो गाकर गीत रिझाऊ॥
'शिव पाण्डे' की सफल हो भगति दाता आप महान।
सुनोजी हरि

***

५८ भजन-श्री रामदेवजी का

राग-देश माट

आओ आओ भाइडा आपा तीरथ चाला न्हावण ने।
तीरथ चाला न्हावण ने बाबे रे धोक लगावण न॥
सुरग सरिसो गाव रूणिचो सोभा राजस्थान री।
राम पीर रमे धोरा पर ढिगल्या लागै धान री॥

भगत आपनै मन स्यू माळा लाव ह परावण न। तीरथ चाला
राम सरोवर रो निरमळ जळ धरम धजारी छीया।
कचन काया होवे कोढिया री चरणामत लीया॥
दातारी दातार केवावै मन ईच्छा फळ पावण न। आओ आओ
हाथ डागडी ले टुरजावो चीकाण सग साथ।
मन मे राख भरोसो सब कुछ छोडो बाबे माथे॥
थकजावै तो सगति देव निज दरगा पोचावण ने। तीरथ चाला
धन दोलत सू गम नी रीझ रीझ भक्ती भाव सू।
साचे मन स्यू ध्याकर देखा दरशण दव चावसू॥
शिव पाण्ड बाबे री महिमा गावै जनम सुधारण न। तीरथ चाला

***

५९ भजन-प्रेम रस

राग-शिव रजनी

गाते रहो प्रभु गुन गाते रहो प्रेम रस पियो पिलाते रहो
जीवन रथ का यही मारथी सुमिरन कर मन करो आरती।
बिन सुमिरे जग से जावोगे पशु जनम लेकर आवोगे॥
सागर में गोते खाते रहो प्रेम रस पियो पिलाते रहो।
महामत्र मत्रों में ये प्यारा लेते करला अगर गुजारा।
चाहे समझो काठ की नोका भवसागर में देत न धोका॥
बिगडा जीवन बनाते रहो गाते रहो प्रभु गुन गाते रहो।
मन दरपन में दरशन देता मन की बात समझ सब लेता।
सब देवा का ये ह स्वामी इसको कहने अतरयामी॥
इससे जीवन महकाते रहो प्रेम रस पियो पिलाते रहो।

कभी लगन खाली ना जाये शिव पाण्डे लिख महिमा गाऐ।
दुनिया एक मुसाफिर खाना मिटजाएगा आना जाना॥
मन में ही मनाते रहो प्रेम रस पियो पिलाते रहो।

***

६० भजन-मालिक रीझ्या

राग-खमाव

मालिक रीझ्या सब कोइ रीझे मा रीझ्या सू मायलो पतिजे।
दुनिया रीझेली मीठे बोल्या सू भरम गाठ रो जाय
दर दर डोल्या सू॥

आदर आप गुणा मे मोटो तुरत फुरत देवै लेखो।
दुश्मण झुकै बिये रै आगै नहीं कियो तो कर देखो॥
बिश इमरत बणजावै मीठे बोल्या सू। भरम गाठ रो जाय
दर दर डोल्या सू

मित्र किया तो रहो मित्र सग मित्र फळा ने चाखो।
भली बुरी सब बात मित्र री हिरद माया राखो॥
दुनिया हासेली पडदो खोल्या सू। भरम गाठ रो जाय
दर दर डोल्या सू

पर हाथा मे दालत देकर अधूरी चीज मगावे।
केवण आळे साच केयी खुद मरया सुरग मे जावै॥
मनरा बिशवा खोवे बेने तोल्या सू। भरम गाठ रो जाय
दर दर डोल्या सू

भरम भरम मे दुनिया खोई भरम भेद नी पावे।
प्रभु चरणा मे होय लीन शिव यो मस्ती मे गावे॥
नर थारो कल्याण साचो बोल्या सू। भरम गाठ रो जाय
दर दर डोल्या सू

***

६१ भजन-पछी ये पिजरा नहीं तेरा

राग-मिश्र माड

पछी ये पिजरा नहीं तेरा, तेरे नयनो तले अधेरा।
सूवा ये पिजरा नहीं तेरा क्यो करता मेरा मेरा॥
अभिमानी अभिमान छोड कर निरमल करले काया।
इस पिजरे की काम न आये कोमल सुन्दर छाया॥
चारो तरफ लगा है प्यारे काल बली का घेरा।
पछी ये पिजरा नहीं।
पर घर भाई आखिर पर घर अपना ही घर खोज।
राम राम रट मिट जाएगा आना जाना ये रोज॥
यह टूटेगा तू छूटेगा जिसमें तेरा बसेरा।
पछी ये पिजरा नहीं।
कितने जनम लिए और लेगा, सारा काढ निचोड।
थक जाएगा मिले चैन ना कहीं मिले ना ठोड॥
प्रभु की महिमा देख जहा से लाता सूर्य सवेरा।
पछी ये पिजरा नहीं।

अपने हाथो करम करे और दोष वक्त को देता।
अनहोनी को होनी कहता दोष न खुद पर लेता।।
शिव पाण्डे ससार सपन है जिस में तेरा बसेरा।
पछी ये पिजारा नहीं।

***

६२ भजन-राधा श्याम का

राग-देश माड

राधा श्याम की जीवन धारा, राधा यमुना श्याम किनारा।
गगन श्याम तो राधा धरती।
बन कर प्रेम हृदय उतरती॥
चरनों में मुक्ती का द्वार। राधा श्याम की जीवन धारा
श्याम चद्रमा राधा चकोरी।
श्याम श्याम रग राधा गोरी॥
प्रिया प्रेम का अमर उजारा। राधा श्याम की जीवन धारा
श्याम योगेश्वर राधा भक्ती।
श्याम तपो बल राधा शक्ती॥
बिन सुमिरन नहीं होए गुजारा। राधा श्याम की जीवन धारा
श्याम होठो की राधा मुरली।
पाके प्रेम भव पार उतरली॥
शिव पाण्डे नयनो ने निहारा। राधा श्याम की जीवन धारा

***

६३ गीत कोई आता कोई जाता

राग-दशा भग्जा

कोई आता है तो कोइ जाता ह कोइ जाता ह तो काई आता हे।
ये दुनिया हे दुनिया चलती रहगी जीवन जोति नहीं बुझेगी
जलती रहेगी॥

इस धरती पर थक कर जाने कितने कितने सोये।
नही निसा कदमो के मिलते जाये तो कहा जाये॥
दुनिया हाथ मलती आई मलती रहेगी।
जीवन जोति नहीं बुझेगी

इसी गगन की छाव रहे यों कितने प्रेम अधूरे।
डूब गये गम के दरिया में हुए ख्वाव ना पूरे॥
रोज यो बाराते निकलती रहगी।
जीवन जोति नहीं बुझेगी

तूफाना के मेलो में अनगिनती प्रेमी हे खोये।
और पवन ने प्यार के दीपक कितन फूक बुझाय॥
परवाने से प्रीत समा की पलती रहेगी।
जीवन जोति नहीं बुझेगी

फूल चमन कांटों के मग जाने कितने खिलते।
पतझड में पत्ते भी बिछड कर कहीं नहीं फिर मिलते॥
शिव होगी सुबह तो श्याम ढलती रहेगी।
जीवन जाति नहीं बुझेगी

***

६४ भजन-पतिव्रता

राग-दश माड

पति चरन की वेरान लो बन बन सती फिरे
में तो नगर ढढोरो पीटू पति ने कोई सन्देश करे
मोहे भोली उमर में ब्याही हाथ ये पति पूजा ना पाऐ।
माता ने समझाया बेटी वो तो स्वरग सिधाऐ॥
चिन्ता मणी चतुर नारी की विपता कोन हरे।
में तो नगर ढढोरो पीटू

मति मामरिय अर पीवरिय दाना रो कीनो त्याग।
हाथो में करताल बजाती गाती जाये अनुराग॥
देख सती क दुख न बम्ती डब डब नयन भरे।
मैं नगर ढढोरो पीटू सती

पति चरन की बेरागन कहे पति चरन कहा पाऊ।
पति चरन को चरनामत ले जीवन सफल बनाऊ॥
जाकर पहुची द्वार कपिल के रो रो रुदन करे।
मैं नगर ढढोरो पीटू

सती ने सच्ची करूना कीनी जाकर हरि के धाम।
करूणा सुनकर मोहन आए छोड के गोकुल गाव॥
सती स्वर्ग में मिली पति से चरनन सीस धरे।
मैं नगर ढढोरो पीटू

नेम धरम और पति की पूजा ये ग्रसती तिरिया का काम।
सती बने अनसुइया जेसी होए सारे जग में नाम॥
मीरा ने पद भक्ती पायो 'शिव' लिख भजन धरे।
मै नगर ढढोरो पीटू

***

६५ भजन-रामदेवजी का

राग-झुले में पवन के आइ बहार प्यार छन्के

दुखियारी बाबा आये तेरे द्वार आकर के करते तुमसे पुकार।
महिमा गाते अरे हो हो महिमा गाते॥
अरे हो हो हो जग मग जोत ज्यो जोवे पूजा बनदन से होवै।
मुरत मनडे ने मोये लील अमवारी सोवे॥
दरशन कर के हरसाते, महिमा गाते।
अरे हो हो हो महिमा गाते
अरे हो हो हो सचे भाव से आते, खाली हाथ ना जाते।
अधे आख भी पाते कोढ उन के झड जाते॥
जोती जतन से लगाते, महिमा गाते।
अरे हो हो हो महिमा गाते
अरे हो हो हो हिन्दवा रो थारो धाम, पीरा में हे साचो नाम।
मक्का में है थारो काम थे हो अजमल जी रा श्याम॥
परचा पलमें दिखलाते, महिमा गाते
अर हो हो हो महिमा गाते
अरे हो हो हो सुणजो दुखिया रो हेलो, सुख रो दिखलावो गला
'शिव पाण्ड' चरना री चेलो धणी थे नाळ मे खेलो
ध्याते वो ही फल पाते, महिमा गाते
अरे हो हो हो महिमा गाते

***

६६ भजन-हनुमानजी का

राग-दशा भरवी

राम जी के दूता पवन के पूता सारी दुनिया ध्यावै महावीर बका
सिर पे मुकट सोहे लाल लगोटा।
लिलट तिलक कुण केवै दव छोटा॥

चारु तो दिसा में बावा बाजै थारा डका।

सारी दुनिया ध्यावै

सीता मा की सुध लेने ध्याये।

कूदे समुन्द्र पल में नहीं घबराये॥

माता को मुद्रिका दे मेटी सब सका।

सारी दुनिया ध्यावे

रूप विशाल कर बाटिका उजारी।

रावण दूत मार ब्रम फास डारी॥

घर एक छोड वीभिषण जारी सारी लका।

सारी दुनिया ध्यावे थानै

अक्ष को मार के रामा दल के आये।

हाल सुना के सारे शीश निवाये॥

शिव पाण्डे महिमा गाए मन में उमका।

सारी दुनिया ध्यावे थानै

***

६७ भजन-श्रवन कुमार का

राग-मेरा मन डोले मेरा तन डोले (फिल्म-नागिन)

यही बचन जान पुत्र सुनो गे मान, तीरथ की मनमे हमारे।

शरवन लेवोनी हमारी कावडिया॥

बारह माश से एक साल दुनिया दे देश की फेरी।

चलना फिरना छूटगया है जब से आख गई मेरी॥

पहले गगाजी न्हाए बदरीजी जाए गुरु रिषी केश के द्वार रे।

शरवन

हुकम उठाए तुमने बेटा समज जभी से पाई।

अध मा बापा की सेवा जग म तूने कमाइ॥
वह जव म व्याइ नहीं खीर खाइ दिन वहुत लगगे वहारे।
शरवन
चतुर नार थी शरवर की और करती रोज वडाई।
ठठे र के जाकर उसने आडी एक घडाइ॥
खण दा कर दा पत्ता किमि को नहीं शखू रावडी खीर बणाय रे।
शरवन
शरवन न नारी से जाकर के तीनो थाली पुरसाई।
बाप की थाली खुद ने रखली अपनी आग सिरकाई॥
तिरिया की कुटळाइ शरवन आख पाइ मा बाप के दा पाचय र।
शरवन
शरवन न नारी को बुलवा कर झूठ लबज समझाई।
फरजी चिठ्ठी दे क कहा तेरी मा ने तुझ बुलाइ॥
कहा डाली वालो से छिटकादो जहा इस जगल पानी पार र।
शरवन
डोली में वठी तिरिया दीवानी मा की विमारी सुणताई।
डाली वाला ने लेजा कर के जगल बीच छिटकाइ॥
वहा रुदन कर नना नीर भरे आधी रात भर अधार।
शरवन लावो
भोर भई तो तिरिया देखे एक ऋषि नदी पर न्हाये।
सकल देखकर ऋषि न कहा तूनै सास ससुर को सताये॥
पति घर से निकल गया कन्धे कावड धर मा बाप को तीरथ कराने। शरवन

वहा से चलदिया शरवन देखो आगे को अब जाऐ।
काशी मथरा हरिद्वार अडष्ठ जो तिरथ काराऐ॥
ऋपि कश महिमा देखो बदरीजी की शीमा, आए सरयूनदी के पार रे।

शरवन

मात ने घेरा शरवन को अब नीर भरन को जाये।
राजा दशरथ अचुक निसाना सीकार खेल ने आये॥
डभ डभ की आवाज पर तीर दिया लाज, शरवन के सीन पार रे।

शरवन

तीर को देखे राजा दशरथ तीर कलेजा चीर गया।
मुरछित शरवन ने कहा राजा मा बापो को नीर दिया॥
अधे अधी जो जीये अर सराप दिये, दशरथ मरे राम के विलाप रे।

शरवन

गुरु की सिक्ष्या पाकर तिरिया ने धरम पति का ध्यान दिया।
आके अयोध्या में सति होकर के अपने पति का मान किया॥
कोइ तिरिया अगर पति पूजा लेवे कर, तो होजाव कल्याण रे।

शरवन

शरवन की महिमा जो कोइ गावै मात पिता सग लावे।
राम किशन जी पाण्डे गुरु मुझको सगीत सिखाये
शरवन को सजाया मा सुरस्ती का गया शिव गाए छन्द बनाय रे।

शरवन

***

पाव थक गए चलते चलते द्वार आपक पहुच न पाया।
अब गिनती क सास रहगए जीने का आनन्द न आया॥
लूट रही हसकर तृष्णाए डूब न जाऊ भजन विना।
जीवन सूना।

ग्यान ध्यान दो हे यागे स्वर धन होते ही मैं निरधन हू।
झोली अरदासा से भरदा दिया हुवा तेरा ही मन हू॥
शब्द नहीं कहने को आगे राह ना पाऊ भजन बिना।
जीवन सूना।

धरा गगन गाकर गुन्जाऊ मुक्ती देवे नाम आपका।
सब को प्रेम पिला कर के रस होजाऊ भगवान आपका।
जिभ्या फीकी फीकी लागे शिव पाण्डे कहे भजन बिना।
जीवन सून

***

७१ भजन-माताजी की स्तुति

राग-तुम्हार प्यार की बात हमें साने नहीं देती

जगत जननी मा जगदम्बा तेरी जे हो तेरी जे हो।
सदा गुन गान हम करते तेरी जै हो तेरी जै हो॥
त्रिषि मुनी देवता सारे सदा गुन गान करते है।
तेरी भक्ति तेरी शक्ति से पापी भव से तरते हे॥
ओ ममता बाटने वाली तेरी जे हो तेरी जे हो। जगतजननी।
तुम्हारे द्वार हर एक को दया की भीख मिलती है।
चमन फूल ओर कलिया महर से तेरी खिलती है॥
ओ भोले नाथ की रानी तेरी जे हो तेरी जै हो। सदा गुन गान।
सूरज चाद तारो में शक्ती का उजाला ही है।

तूही है तारनी गगा मा तेरा नाम प्यारा ह ॥
स्वर्ग ह तेरे चरनो में तेरी ज हो तेरी ज हो। मदा गुण गान।
पिलाऊ प्रेम रस सवको शिव पाण्डे शक्ती दो।
खडे ह द्वार भक्तो को मा सची देश भक्ती दो॥
सार मसार की माता तेरी ज हो तेरी ज हो। सदा गुन गान।

***

७२ भजन-इनसान तेरी माटी के ढाचे ढली काया

राग-कालिगडा

इन्सान तेरी माटी के ढाचे ढली काया
इतने तू ना जुलम कर कुछ तो विधाता से डर
देख चादी के टुकडे क्यो लुभाया रे।
इन्सान तेरी माटी के ढाचे ढली।
देखता हे छुपके तुझे बादलो की ओट में।
कर के पाप छुपना चाहे तीसरे परलोक में॥
छुपा हे न छुप सकेगा उसकी नजर से भला।
एक पेट भरने के लिये तू पाप करने को चला॥
तेरे सर पे ही काल मडराया रे
इन्सान तेरी माटी के ढाचे ढली।
जीवन के सागर मे उमगों पे लहर है।
रास्ता न भूल हुइ सुबह से दुपहर है॥
चलता चल रुकना नहीं अपनी ही शान में।
पवन तूझे ले चलेगी अपनी ही उडान में॥
सूरज नभ के शिखर चढ आया रे।
इन्सान तेरी माटी के ढाचे ढली।

७४ भजन-बडभागी

राग-देशी भैरवी

लागी जारे दीसे कोनी लागी बारे लागी।
राम श्याम भजे बोई है बड भागी॥
आवतोडो जावतोडो बिडलो ही जाणे।
हीयै ने टटोळे नहीं अर पाप छाणे॥
प्रभु रै चरण पूज बणजा रे पागी।
राम श्याम भजे बोई है बडभागी
तेरू होयर डूबसी रे कर कोई चारो।
झझटा स्यू दूरो होय पावे नी किनारो॥
मोह माया छोड कर बणजारे त्यागी।
राम श्याम भजै बोइ हे बडभागी
जहर में स्यू इमरत काढ बोइ पीवै।
ऊचा बोल बोलै कोनी नीचो लुळ जीवे॥
मोत एक एक कर सगळा नै खासी।
राम श्याम भजै बोइ है बडभागी।
ग्यानी है तो ग्यान गगा कर स्नान रे।
ध्यानी हे धर ध्यान मिल सनमान रे॥
शिव पाण्डे राम भज रेवे क्यो अभागी।
राम श्याम भजेबोइ हे बडभागी।

***

७५ देश भक्ती गीत-हिन्द गगन का तारा हू

राग-भोपाली

सासों में वो मूल मत्र हे हिन्द गगन का तारा हू।
बर्फ में भी आग लगा दू मानो वो अगारा हू॥
पानी है खूखार धरा का शब्द भेदी तीर में।
कलम से पहरा देता इस भारत की तकदीर में॥
जिन्हें देश पर मरना आया उसी खून की धारा हू।
बर्फ में भी आग लगा दू।

पत्थर को पानी करदे उस सस्कृति की राग भी।
रहे न जिन्दा जिसको डस लू वो जहरीला नाग भी॥
अमृत से मीठा हू तो फिर जहर से भी खारा हू।
बर्फ में भी आग लगा दू।

मरियादा का पुत्र कहाता काल नहीं महाकाल वो।
जुलमो का भक्षण करता नित शक्ती एक विशाल वो॥
मानवता से प्यार हे मुझको सब धर्मो का द्वारा हू।
बर्फ में भी आग लगा दू।

पडोसी को जीवन दान दे कई मरतबा छोड चुका।
वो हठ धर्मी कर समझोता कई मरतबा तोड चुका॥
अबके नामोनिशा मिटा दू यही आखरी चारा हू।
बर्फ में भी आग लगा दू।

दुखो की उगली पकड चला उन अधेरों ने पाला।
पीठ भूख ने थपा थपा कर बना दिया मतवाला॥
मौत हथेली पर रखता 'शिव' वो तूफा आवारा हू।
बर्फ में भी आग लगा दू।

***

७६ गीत–तुम आदमी हो

राग–भूप

तुम आदमी हो आदमी का काम तो करो।
इन्सानियत का इस तरह बदनाम ना करो॥
इतिहास में सुनहरी लिख दो अपनी दासता।
ओर आने वाल राही भी ना भूल राम्ता॥
शरम से सिर झुके वो यारो काम ना करो।
इन्सानियत को इस तरह

जीओ ओर जीने दो खाओ ओर खिलाओ।
कुदरत के दिये हुवे में जहर ना मिलावो॥
नफ्रत से ना देखा दिलों में प्यार तो भरो।
इन्सानियत को इस तरह

लहू सभी का एक धरम तो राह एक हे।
हमको बनान वाले की निगाह एक हे॥
धरती सभी की एक मा लड लड के ना मरो।
इन्सानियत का इस तरह

दुश्मन ह कान किसका यह जानते नहीं।
अपनो को कहत पराया पहचानते नहीं॥
बच्च बच्चे के दिल में राष्ट्र भावना भरो।
इन्सानियत को इस तरह

पावन है जिसका प्यार माँ गगा क लाल हो।
भारत महान देश के मूछो के वाल हो॥
'शिव' देश ही है स्वर्ग इसे श्मसान ना करो।
इन्सानियत को इस तरह

***

७७ भजन-माताजी की स्तुति

राग-तुम्हार प्यार की बात हम सोने नहीं देती

जगत जननी मा जगदम्बा तेरी जे हो तेरी जै हो।
सदा गुन गान हम करते तेरी जे हो तेरी जे हो॥
ऋपि मुनि देवता मिलकर मदा गुनगान करते है।
तेरी शक्ती तेरी भक्ती से पापी भव से तिरते है॥
ओ ममता बाट ने वाली तेरी जे हो तेरी जै हो।
सदा गुन गान हम।

तुम्हारे द्वार हर एक को दया की भीख मिलती हे।
चमन में फूल और कलिया महर से तेरी खिलती है॥
ओ भोलेनाथ की रानी तेरी ज हो तेरी जे हो।
सदा गुन गान हम।

सूरज चाद नभ तारो में शक्ति का उजाला है।
तूही है तारनी गगा मा तेरा नाम प्यारा हे॥
स्वग है तेरे चरनो में तेरी जे हो तेरी जै हो।
सदा गुन गान हम।

पिलाऊ प्रेम रस सबको 'शिव पाण्डे' भक्ती दो।
खडे हे द्वार भक्तो को मा सच्ची देश भक्ती दो॥
सारे ससार की माता तेरी जे हो तेरी जे हो।
सदा गुन गान हम।

***

७८ भजन-रामदेवजी का

राग-भैरवी

चालो चालो रूणिचे गाव रे चालो चालो रूणिचे गाव रे।
धजा देखिया आनन्द होवे बिगड्या सारे काम र॥

रात चानणी दूज भादवो मनडा उमग उठावै।
भक्त जाना रै कोडा रा पग गूघरिया बधजावे॥
बीकाणे सू टुरै सग करे जगा जगा बिसराम रे।
चालो चालो रूणिच।
लीलै चढ साम्हा आ परखै सब भगता री भगती।
बूढा टाबर थकज्या बाने दे चालण री सगती॥
भूल्या ने मारग दरसाक पोचावे निज धाम रे।
चालो चालो रूणिचे।
केशरिया जामो तन शोवै जोत जगे दिन राती।
पग पग पर डडोत करै हे मेळे में गुजराती॥
मनोकामना पूरी करत्या अजमलजी रा श्याम रे।
चालो चालो रूणिचै।
भाव ही म्हारा धूप दीप हे अर पुष्पा री माळा।
साचे मन सू करू ध्यावन सुणो धजाबद धारी॥
'शिव पाण्डे' ने थारो सरणो लुळ लुळ कर प्रणाम रे।
चालो चालो रूणिचै।

***

७९ भजन-केवट

राग-दशी भरवी

कर पिता वचन का पालन बन गगा तट आते ह।
हमें पार करो श्री राम केवट को समझात हैं॥
केवट को विश्वास हुवा नयनो से रूप निहारा।
तभी राम ने लक्ष्मन को धीर से किया इशारा॥

उन पुष्पो के भाग्य बडे जो लखन तोडकर लाये।
सिया राम ने पूजन कर गगा के बीच बहाये॥
फिर नतमस्तक कर तीर नीर चरमत पाते हे।
हमें पार करो श्रीराम केवट।
केवट सोचे आज हाथ से चला न जाए मोका।
राम नाव में लगे बैठने हाथ जोडते रोका॥
सीता ने दी काढ अगूढी पहले लो उतराई।
सीस झुका बोला शरमिन्दा क्यो करती हो माई॥
नहीं मान नै पर लक्ष्मन जी आख दिखाते हे।
हमें पार करो श्रीराम केवट।
गुस्से क्यो होते हो लाल सच बोलना हक हे।
किया इशारा राम तरफ इनके चरनो पर शक है॥
नोका पत्थर ना बनजाये आप कहो तो धोलू।
राम राज्य में रहने वाला झूठ कभी ना बोलू॥
यह सुनकर लक्षमण हो शरमिन्दा नयन झुकाते है।
हमें पार करो श्रीराम केवट
कहा राम ने हसकर भइया समझ गया चतुराई।
अपनी शका दूर करो और पार करो झट भाई॥
चरन धोय गद गद हो बोला ये उतराई देना।
मेरी जीवन नोका भव के बीच आप आ खेना॥
'शिव पाण्डे' राम उठा केवट को गले लगाते है।
हमें पार करो श्रीराम केवट।

***

रात चानणी दूज भादवो मनडा उमग उठाव।
भक्त जाना र कोडा ग पग गूघरिया बधजावे॥
बीकाणे सू टुरै सग करे जगा जगा बिसराम रे।
चालो चालो रूणिचे।
लीलै चढ साम्हा आ परखे सब भगता री भगती।
बूढा टाबर थकज्या बान दे चालण री सगती॥
भूल्या ने मारग दग्माक पोचावे निज धाम रे।
चालो चालो रूणिचे।
केशग्यिा जामो तन शोवै जोत जगे दिन राती।
पग पग पर डडोत करे हे मेळ में गुजराती॥
मनोकामना पूरी करचा अजमलजी रा श्याम र।
चालो चालो रूणिचे।
भाव ही म्हारा धूप दीप ह अर पुष्पा री माळा।
साचे मन सू करू ध्यावने सुणो धजाबद धारी॥
'शिव पाण्डे' ने थारो सग्णो लुळ लुळ करै प्रणाम रे।
चालो चालो रूणिचे।

***

७९ भजन-केवट

राग-दशी भेरवी

कर पिता वचन का पालन वन गगा तट आत ह।
हमे पार करो श्री राम केवट को समझाते हैं॥
केवट को विश्वास हुवा नयनो से रूप निहारा।
तभी राम ने लक्ष्मन का धीर से किया इशारा॥

उन पुष्पो के भाग्य बडे जो लखन तोडकर लाये।
सिया राम ने पूजन कर गगा के बीच बहाये॥
फिर नतमस्तक कर तीर नीर चरमत पाते हे।
हमें पार करो श्रीराम केवट।

केवट सोचे आज हाथ से चला न जाए मोका।
राम नाव में लगे बैठने हाथ जोडते रोका॥
सीता ने दी काढ अगूढी पहले लो उतराई।
सीस झुका बोला शरमिन्दा क्यो करती हो माई॥
नहीं मान ने पर लक्ष्मन जी आख दिखाते ह।
हमें पार करो श्रीराम केवट।

गुस्से क्यो होते हो लाल सच बोलना हक है।
किया इशारा राम तरफ इनके चरनो पर शक है॥
नोका पत्थर ना बनजाये आप कहो तो धोलू।
राम राज्य में रहने वाला झूठ कभी ना बोलू॥
यह सुनकर लक्षमण हो शरमिन्दा नयन झुकाते है।
हमें पार करो श्रीराम केवट

कहा राम ने हसकर भइया समझ गया चतुराई।
अपनी शका दूर करो और पार करो झट भाई॥
चरन धोय गद गद हो बोला ये उतराई देना।
मेरी जीवन नोका भव के बीच आप आ खेना॥
'शिव पाण्डे' राम उठा केवट को गले लगाते है।
हमें पार करो श्रीराम केवट।

***

८० भजन-रामदेवजी का

राग-रूमाल म्हारा लेता जाइजा छोटी नणद बाइरा बीर रूमाल

देता जाइजो जी परचा देता जाइजो, बाई।
सुगना रा बीर रामा पीर आळू आव परचा देता जाइजो॥
गगाजळ स्यू धोर धणिया पूजा जी पगलिया।
अजमल जी र आगणे अवतार लियो छलिया॥
भाग लगावा भोग लेता जाइजो। बाई सुगना रा बीर रामा
पीर ओळू आवै परचा
बिणजारे गे मिसरी बणायो लूण आपजी।
भगता रा काम सर थाग ही परतावजी॥
जोत करा हा जोत देता जाइजो। बाइ सुगना रा बीर रामा
पीर ओळू आव परचा
रूपादै तन्दूरो ले जम्मे मे किया यादजी।
परचो दियो आप बण्यो फूला रो परसाद जी॥
अैडो परसाद परचो देता जाइजा। बाइ सुगना रा बीर रामा
पीर ओळू आव परचा
थारा जम गावै होवै आगणिये आनन्द जी।
'शिव पाण्डे' गावै कदे जनमा रा ही फद जी॥
पावणिया म्हारे दो दिन रेता जाइजो। बाई सुगना ग बीर
रामा पीर ओळू आवै परचा

***

८१ भजन-श्याम थारी काळी कामळिया

राग-पालू

थे हो काळा मुरली आळा म्हानै भी ओढावा नी।
श्याम थारी काळी ओ कामळिया॥

सुदर्शन चरखे पर कुदरत तार ग्यान रो कात्यो।
होणी विधी सू बणा मत्र दे कामळ माई घात्यो॥
बेमाता सी रगरेजण, रग तीनलोक स्यू न्यारो जी।
थारी काळी ओ कामळीया
ब्रमा विशनू महेश सरावे देवा रे मन नै भावे।
चॉद सूरज थुथकारो न्हाख निजर लाग नी जावे॥
सतिया रे तप बल सूकोडी मन मोह लीनो म्हारोजी।
थारी काळी ओ कामळीया
रूखमण निरखर राधा निरखे कामळ कामण गारी।
शस त्रिषि अर धू राजा के भगत उबारण आळी॥
नवल तारा ओढण तरसे राश मडल गण सारोजी।
थारी काळी ओ कामळीया
अमर सुहागण भागण कामळ मेली होय ना फाटे॥
जनम जनम रा पाप करोडा कामल फाटै।
'शिव पाण्डे' सरणागत मोहन ओढ्या होय गुजारो जी।
थारी काळी ओ कामळीया

***

८२ गीत-इन्सानियत का

राग-ताडी

छोड मत इन्सानियत पन काम तेरे आयेगी।
तेरी मेहनत सफल होकर एक दिन रग लायेगी॥
मुश्किले लेगी परीक्षा हर सुहानी राहो मे।
बेडिया डालेगा वक्त बढते हुवे पावो मे॥
मन्जिले छाती चढेगी ओर तू घबरायेगा।
छोडमत इन्सानियत

ठोकरे किम्मत की खाके हारना हिम्मत नहीं।
सत्यता के ओ पुजारी हिम्मत की कीमत नहीं॥
जिन्दगी वीरान करने सरपे तूफा छायेगा।

छोडमत इन्सानियत

गमके घेरो मे घिरेगा दम लगेगा टूटने।
अपन वेगाने वनके और लगेगे लूटने॥
होमला तेरा बुलन्दी कामयाबी पायेगा।

छोडमत इन्सानियत

मोत तक पै आबनेगी यार तू झुकना नहीं।
मुश्किल आसान होगी हारके रुकना नहीं॥
रुकगया तो 'शिव' प्रभुकी नजर से गिरजायेगा।

छोडमत इन्सानियत

***

८३ भजन-श्री माताजी स्तुति

राग-एक वो भी दीवाला थी एक ये भी दावाला है

मा मनकी मुरादे लेकर तेरे द्वार आऐ
दा पुष्प तेरे चरनो में हम चढाने लाऐ
मा मा की हो तुम ममता सागर हो प्यार का।
ह सच्चा बोल वाला सुख तेरे द्वार का॥
कण कण में तेरी शक्ती सृष्टी को तू रचाऐ।

दो पुष्प तेरे चरनो

नभ पृथ्वी पाताल में भी राज ह तेरा।
ओर शक्ती सूरज चाद में होए रात सवेरा॥
तारे भी खडे अधर गगन भक्ती से चमकाऐ।

दो पुष्प तेरे चरनो

भारत की बाग डोर को मा तुम्ही सम्भालो।
दुखियों के दुख में मदद चढो आके सम्भालो॥
होनी भी खडी पग पग पर जाल है बिछाऐ।
दो पुष्प तेरे चरनो

ऐसा न कभी होगा के हम तुमको भुलाऐ।
हित चित से करे दरशन नित दोड के आऐ॥
'शिव पाण्डे' तेरे द्वार खडा सबके हित की गाऐ।
दो पुष्प तेरे चरनो

***

८४ गजल

मिश्र-झझाटी

प्रभु तेरा नाम नहीं भूलेगे हम।
दाता तेरा नाम नहीं भूलेंगे हम॥
सबके घट घट बोलने वाले।
पाप धरम को तोलने वाले॥
छुप छुप देखता है सब के करम।
दाता तेरा नाम नहीं भूलेगे हम

छप्पर फाड के देने वाले।
चाम उधेड के लेने वाले॥
किसी को दे खुशिया किसी को दे गम।
दाता तेरा नाम नहीं भूलेगे हम

खबर सभी की झट पट ले रे।
नेक अनेक है आखे भी तेरे॥
राजा ओर रक का मिटाता भरम।
प्रभु तेरा नाम नहीं भूलेगे हम

दुनिया चमन के ओ सुन माली।
जोति मोती की शान निराली॥
'शिव'पाण्डे चरनों में करता नमन।

प्रभु तेरा नाम नहीं भूलेगे हम

***

८५ भजन-राम राम रस

राग-दश माड

चाखो रे भाई राम राम रस चाखो।
थे नेम धरम मन ही मन राखो॥
दया दान सो दान नहीं है।
भटक गुरु बिन ग्यान नहीं ह॥
ओर सभी फळ काचा होवे राम राम फळ पाको।

चाखो रे भाई राम राम

खोटा मत घड प्रभु जी सू डर।
दूर नहीं है मुगती रो घर॥
मन री माळा खोले ताळा फेर धिकावो धाको।

चाखो रे भाइ राम राम

सतोषी मन चढसी सिख्खर।
राम राम इमरत रस पीकर॥
लोगा री देखा देखी कर, सिर सू लाज मत न्हाखो।

चाखो रे भाई राम राम

भगती निसफळ जाय सके ना।
काळ नाम न खाय सके ना॥
मिनख जमारो मिल्यो मुसकला मती नरक मे न्हाखो।

चाखो रे भाई राम राम

अत सुधरसी पत सुधरसी।
'शिव पाण्डे' सत सग सुधरसी॥
चमतकार न निमसकार ह पाणी मे तिरग्यो भाटो।
चाखो रे भाई राम राम

***

८६ भजन-दिन काटू गिण सास

राग-खमाच

प्रभुजी दिन काटू मे गिण गिण सासा, था दरशण री आख्या तिसाई।
सारो दिन रेवे हे उदास।
प्रभुजी दिन काटू मे गिण गिण सास

मन की मती जाणो के केवै।
दरशण बिन हियो रो मू धोवे॥
थेई म्हारा धन्य भाग हो रस्ता करो नी उजास।
प्रभुजी दिन काटू

लगन सावरा था रग राची।
लिखू स्वामी लेवो अब बाची॥
कद मिलणो सजोग होयसी नेण बुझावे प्यास।
प्रभुजी दिन काटू

आसूडा स्यू में पग धोस्यू।
नेणा पलक धर दिवलो जोस्यू॥
केवो कद आसो पावणिया बेठ्यो लगाया आश।
प्रभुजी दिन काटू

दोउ कर जोड कहू सुनो मेरी।
'शिव पाण्डे' कहे वीकानेरी॥
थेई उगतडा सूरज हो मे चरणा री दास।
प्रभुजी दिन काटू

***

८७ भजन-धाम चारू जोया

राग-देश खमाच

धाम चारु जोया प्रभु दिन बोळा होया, म्हारो हिवडो
दरशण रो प्यासो।
धोरा चढ चढ हेलो देऊ कद म्हार मरूधर मे आसो॥
धाम चारू

गेलो अगूण गाव री डाडी सीधा सीधा आया।
हरियोडा रूख सुहाणा लागै दिखणादा मत जाया॥
जल्दी आया बिसर मत जाया थे म्हारोडी बात।
कद आकर बात निभासो॥ धोरा चढ चढ हेलो देउ
कद म्हारे मरूधर

मरूधरियो मनडे ने मोवै सावण सदा सुहाणो।
रूत रूत रा थाने मेवा खाडा सू पाछो भूलो जाणो॥
चानणिये मे बेळू चमकै लागे सुहाणी रात।
कद आकर मुरली बजासो ॥ धोरा चढ चढ गेलो देखू
कद म्हारै मरूधर

झड मड छाछ बिलो सू माखण धरसू माहन आगे।
फळिया रो साग बाजरी रोटी स्वाद घणे री लागे॥
केरूदा मोती सा होव सागरिया री काइ बात।

थे जीमर खुश होय जासो॥ धोरा चढ चढ हेलो देउ
कद म्हारे मरूधर

काकडिया अर मतिरा जिमाय स्यू सिट्टा देसू मोर।
काचर बोर खेजडे खोखा मिसरी री आवै ओळ॥
भोळा रा भगवान जीम जो देख्या जात न पात।
या सपना में ही रिझासो॥ धोरा चढ चढ हेलो देउ
कद म्हारै मरूधर

पीवण ताई मैं थारै लासृ बो पालरियो पाणी।
रूच रूच जीम्या झोपडिये में, कर सू बात लुभाणी॥
'शिव पाण्डे' ने थारो सरणो आप राखजो लाज।
या दुनिया नेइ हसासो॥ धोरा चढ चढ हैलो देउ
कद म्हारे मरूधर

***

८८ राग-मेरा नाम है चमेली में हू मालन अलबेली

सुणलो रूणिचे रा राजा दरगा नोबत बाजे बाजा।
दरशण देवो मे आयो हू बीकानेर सू॥
केशरिया जामो तन सोवे मूरत भगता रा मन मोवै।
दरशण देवो में आयो हू बीकानेर सू॥
मैं भगति रै पुष्पा री माळा पैराऊ पोकर।
इष्ट देवता करू आरती हिवडै दिवलो जोकर॥
म्हारी अरज सुणो अन्नदाता केवा चरणा धोक लगाता।
दरशण देवो में
हाथ जोड कू अेकर सपनो साचो करदो म्हारो।

था ठाकर नै बेटो दीयो हो हो हो।
था ठाकर नै बेटो टूठ्यो, धरती पर ओ हाको फूट्यो
सरणै आया रो दुख लूट्यो मायड इन्द्राणी
जद स्यू मेळो लागण लाग्यो डको चारू खूट मे बाज्यो।
मायड इन्द्राणी
मन स्यू गगासिग जी ध्याई हो हो हो।
मन स्यू गगासिग जी ध्याई मिन्दर बणवा भेंट चढाई॥
पूजण लाग्या मरद लुगाई मायड इन्द्राणी।
महिमा 'शिव पाण्डे' गावै भगती चरणा पुष्प चावै।।
मायड इन्द्राणी

***

९१ गजल इन्सानियत

राग-खमाच

ठोकरे खाकर सम्भलना आदमी का काम हे।
अपनी करतूतो से होता आदमी बदनाम है॥
प्रभु तेरी प्रभुताई का चमकता नूर हे।
आज लिखने को मुझे तूने किया मजबूर हे॥
चमडी के पुतले पे लिख्खा आदमी का नाम हे।
ठोकरे खाकर सभलना
अकल तेरी है सरानी समझ में आती नहीं।
पेट में ज्वाला भडकती बुझाई जाती नहीं॥
ओर मजबूरन कहाता तू सुवे को श्याम हे।
ठोकरे खाकर सभलना

क्या अनोखी राजनीति हर बहाना मोत है।
मत खुला आगे जुबा इतना ही कहना बोत है॥
क्यो न कहता आदमी का आना जाना काम है।
ठोकरे खाकर सभलना।
रख ले ये जागीर अपनी मुझको रहना है नहीं।
ये मेरी इन्सानियत कुछ आगे कहना है नहीं॥
तू जहा का सहनशा शिव पाण्डे का पैगाम है।
ठोकरे खाकर सभलना

***

९२ भजन-मुरली

राग-नखराळो देवरियो भाभी पर जादू करग्यो

सवरो लेके अवतार बजावै मुरली।
रे बजावै मुरली रे बजावै मुरली
मोहन लेके अवतार सुणावे मुरली॥
रीझ परा शिव शकर दीनी।
योगेश्वर भगती स्यू लीनी॥
देवता रो मनडो लुभावे मुरली,।
सवरो लेके अवतार बजावे मुरली
होठा धर बन अधर बजावे।
ऋषि मुन्या नै इमरत पावे॥
भगती रा भाव जगावै मुरली।
मोहन लेकै अवतार बजावै मुरली
सुण बागा में कळिया खिलगी।
गगा जमना त्रिवेणी मिलगी॥

हेमाळ ने गीता जी सुणावे मुरली।

सवरो लेकै अवतार बजावे मुरली

बनरो वास बज बन माया।
काधै कामळ कदम री छाया॥
नन्दजी री धेन चरावै मुरली।

मोहन लेके अवतार बजावे मुरली

सुर पर पवन तान सुण झूमे।
कोयल पपईयो दरखत लूमे॥
'शिव' पछीडा न बोलणो सिखावे मुरली।

सवरो लेके आवतार सुणावे मुरली

***

९३ राजस्थानी भजन अर गीत

अलोप दुकान लगाकर बठो देखा नई दरसावै रे।
आप मतेइ प्रभु घडे रमतिया घड घड पगा चलोवे रे॥
नाव अनेकू गाव अनेकू जोवण आळो के जाले।
बिना ताकडी सूज बूझ कर सेरा पाप धरम तोलै॥
कह के नी दरसाया भरम री भीतर काकरया बोवे रे।

आप मतेई प्रभु घड रमतिया

लीलाडा पर पडी लकीरा लिख्यो लाग से सूनी।
बाचण आळो के मिर बाचे बोत पढाई है जूनी॥
उथल पुथल कर रोज ही करमा सारू खेल खिलावे रे।

आप मतेई प्रभु घड रमतिया

केइ कूरूपा केई सूरूपा अणगिणती रा ही घडरयो।
केइया के फुरसत र मायी रूप सोवणा ही जडरयो॥
हया दया नइ पाछा ढा ढा माटी माय मिलावै रे।
आप मतेई प्रभु घडे रमतिया
आभो अधर नी दीसे नाको माया जावे नइ पकडी।
फूका स्यू फटकार र मीन्तर सै नै दे गोडा लकडी॥
अकल काढले रस्त बहता कर कर कोप हिलावे रे।
आप मतेई प्रभु घडे रमतिया
कुदरत रे हेले रे सागै होणी काम करै चटके।
जीवनडा री गिलडया फासी फन्दा न्हाखे है फटकै
शिव पाण्डे के मनचायोडा काइ काइ नाच नचावे रे।
आप मतेई प्रभु घडे रमतिया

***

९४ भजन-दिल के भी चोर निकले

राग-ला में हारी पीया होई तरी जीत रे

दिलके भी चोर निकले कीनी मुझसे बात रे।
झूठे देकर के दिलासे छोडगये साथ रे॥
जब से छोडगये मनमोहन बीते कठिन कठिन की रेन।
सुद्ध बुद्ध सारे तनकी भूली लूटा मेरा सारा चेन॥
सुखसे बशना रे ग्वाली देखी तेरी जात रे।
दिलको दिये झूठे
मथरा जाय बसे निरदेयी गइया बाट यहा जोती।
तुम विन सूने राश के ग्वाली मेरी प्रीत यहा रोती॥
सूना गोकुल का जगल सूनी घाट घाट रे।
दिलको दिये झूठे

होटो पर मुरली रख कर तुम मीठी तान सुनाते थे।
मेरे आसू पूछ रहे क्या झूठी कसमे ही खाते थे॥
दिन काटे से ना कटते लागै सूनी रात रात रे।

दिलको दिये झूठे

इतना लिख भेजो मोहन कब हमसे मिलने आओगे।
हमे छोडकर या कहदो तुम बस्ती नयी बसाओगे॥
'शिव पाण्डे' बिन दरशन के कैसे बुझे प्यास रे।

दिलको दिये झूठे

***

९५ भजन-श्री रामदेवजी का

राग-पीळो तो ओढ जच्चा पाटे जी बैठी

धन धन धणिया चरना धोक लगावा।
हित चित सू ध्यावा महिमा गावा रामदेवजी॥

सरणे आया रो हेलो साभळो।

कोई मागै बेटी-बेटा कोई मागै माया।
कोई केवै कचन म्हारी करदेवो काया॥
कोई केवै बिगड्या कारज सारो रामदेवजी।

सरणे आया रो हेलो

कोई मागै आख्या ज्योति जोत लगाकर।
कोई मागै सगति चिरणामत पाकर॥
पग दिया पैदल फेरी देस्यू रामदेवजी।

सरणै आया रो हेलो

कोई केवै सोनेरो बावा छतर चढास्यू।
कोई केवै जात गठजोडै री वे लगास्यू॥

कोई केवै डूबी नइया तारो रामदेवजी।

सरणै आया रो हेलो

मन स्यू ई ध्यावै जे कोई मन सू दे फेरी।
परचो दे शिव पाण्डे केवे बीकानेरी॥
आगणियै पावणिया पधारो रामदेवजी।

सरणे आया रो हेलो

***

९६ भजन-हस हस करू मनावणा

राग-पीलू

उठत सवारै हेलो देऊ हस हस करू मनावणा
म्हारोडे मरूधरिये प्रभुजी दो दिन आओ पावणा
इण नेणारी नींद बिसरगी थकगी कर कर कोड जी।
पगा माय गूघरिया बधग्या हरख हरख री होड जी॥
थारै बिना जीवणो कूडो मनडो करे मनावणा।

म्हारोडै मरूधरिये

गायारा गिवाळिया थारी सूरत न भूली जावै जी।
चलता फिरता उठता करता नेणा साम्ही आवै जी॥
सोणो तो अणसोणो होयो भोजन है अणभावणा।

म्हारोडे मरूधरिये

थारोडी मुरली रो म्हारै हिवडे माया है हेत जी।
ज्यो सावणरी बादळी ने खडा अडिकै खेत जी॥
ज्यू चन्दे बिन सूनी चानणी लागे दिन अणखावणा।

म्हारोडे मरूधरिये

जै आ हळदी रग तज तो 'शिव पाण्डे' सू टूटेजी।
चाए धोबणिया मल मल धोवे चढ्यो रग नी छूटे जी॥
थारी आवण सम्पत कर हरख हरख गुण गावणा।
म्हारोडे मरूधरिये

***

९७ भजन-शकरजी का

राग-पीलू

निरमल जल से महादेव में तुमे न्हवाने आया।
चरन आप के पुष्प चढाने साथ में स्वामी लाया॥
तीनलोक क अतरयामी पशुपति नाथ कहाते।
मन्दिर हे नेपाल में सुन्दर दरशन कर हरसाते॥
धरती के कण कण में चमके भोले तेरी माया।
चरन आप के पुष्प चढाने
सारे जग के परमपिता माता गवरा कहलाती।
अर्ध चन्द्रमा जटा में चमके सतिया मगल गाती॥
जल थल अगन आकाश सूय में वेग आपका छाया।
चरन आप क पुष्प चढान
ब्रमा तुम हो विशनू सब ही ध्यान आपका धरते।
केशर चन्दन तिलक लगा नर नारी पूजा करते॥
हेमगिरी पर रहते बाबा क्यो हमको विशराया।
चरन आप के पुष्प चढान
हम को अपने दुख सुख की कहनी हे तुम को स्वामी।
जरा मेहर की नजर निहारो मेर अन्तरयामी॥
'शिव पाण्डे' ने भजन बना अपनी मस्ती में गाया।
चरन आप क पुष्प चढाने

***

९८ भजन-मीरा छोड्यो मेडतो

राग-माड

हरमिन्दर मे मीरा ऊभी, ऊभी ऊभी देवे हरि ने हेलो।
म्हारो हेलो झरोखे सवरा झेलो॥

भगती देवो भजन करू प्रभु थारी महिमा गाऊ।
पाच सहेल्या बस कर राख्यो आ सू पिन्ड छुडाऊ॥
झूठो देखलियो जगरो झमेलो।
म्हारो हेलो झरोखे सवरा झकलो

पिवरिये रा लोग ठगोरा झूठा बोलर लूटै।
म्हारी चूदडी दाग लगायो छोडाऊ नइ छूटै॥
लागे सासरियो सुरगो पाछो मेलो।
म्हारो हेलो झरोखे बैठा सवरा झेलो

आशीश दो मे करू तपस्या था आख्या नी खटकू।
ईये पार स्यू बिये पार अधबिच मे नाही लटकू।
जीवन नइया नहीं डूबै थे धिकेलो।
म्हारो हेलो झरोखे बेठा सवरा झेलो

था रै राख्या पत रेवेली नई तो प्रभु जी जासी।
मुगती रो मारग हे बाको जगमे होसी हासी॥
'शिव पाण्डे' ह था चरणा रो चेलो।
म्हारो हेलो झरोखै बैठा सवरा झेलो

***

९९ भजन-ओम सरन गुन गा रे

राग-हूझाझ

मन हरि ओम सरन गुन गारे।
तू मत बिरथा जनम गमा रे।।

१०४ देश भक्ती का गीत

राग-खमाच

न जाने जीवन में ऐसे कितने तूफा आएगे।
जीवन जीवन नहीं रहेगा जो गर हम घबरायेंगे॥
सच होनी को जाल बिछाते इन्सानो पर देखा।
हमे भरोसा है खुदपर ना मिटै भाग्य की रेखा॥
हिम्मत की कीमत होती हे कर के कुछ दिखलायेंगे।
जीवन जीवन नहीं रहेगा
मरद कभी ना रूक कर दुखके आगे सीस झुकाते।
वक्त पडे बम्बों की बाछारों पे चल दिखलाते॥
डालेंगे हथियार नहीं रन मे रनभेरी गायेंगे।
जीवन जीवन नहीं रहेगा
अरे सलामत जबतक बाजू आगे बढकर काम करो।
तोड निरासावो के पहरे तुम दुनिया में नाम करो॥
दूर अधेरा हो जायेगा दीपक नया जलायेंगे।
जीवन जीवन नहीं रहेगा
नहीं कुदरतपर आज तलक भी विजे किसि ने पाई।
आने जाने वालो को हसकर देती हे रोज विदाई॥
वक्त बडा बलवान 'शिव पाण्डे' गाकर गीत सुनायेंगे।
जीवन जीवन नहीं रहेगा

***

१०५ भजन-हरि राम बाबे रो

राग-काफी

थे मरूधर रा मोती जोती बाबा हरि राम जी।
पूज पगलिया धोक लगावा सुरग सरिसो धाम जी॥
गाव झोरडो धोरा धरती मिन्दर मन ने मोवै।

दातारी दातार केवावो जोती घीरत सू होवे॥
गाजा बाजा होवै आरती सिवरा लेकर नावजी।
थे मरूधर रा मोती
धोती पेरण हाथ डागडी शिव शकर सो रूप।
तेज तपे लिलाड सूरज सो थे भूपा सा भूप॥
धरम धजा फैराय देवळे, झूम रैयो असमान जी।
थे मरूधर रा मोती
जगळ मे मगळ कर दीनो भगती रै परताब सू।
साप डस्ये रा प्राण उबारो जेर पीयो सास सू॥
धोरा री धरती रा राजा पूजे गाव गाव जी।
थे मरूधर रा मोती
धोक लगा 'शिव पाण्डे' चरना मे महिमा मन सू गावै।
साचे भावा रै पुमबा सू माळा पैहरावै॥
तारा री झिल मिल छीया में आप करो आराम जी ।
थे मरूधर रा मोती

***

१०६ भजन-सावणरा बादळिया

राग-काफी

सावणरा बादळिया म्हारो एक काम तो कीजे रे।
राम मिलै धनश्याम मिलै तो पगै लागणा दीजे रे॥
लक्ष्मी वैकुठ बिराजै मारग थने बताऊ।
पर होवै तो थारै सागे मैं उडकर हो जाऊ॥
झझट मे उळझोडो जीवन काया दिन दिन छीजे रे।
राम मिले घनश्याम मिलै
जनम सुधर सी गुण गाऊलो भूल मती न जाई।

मनमोहन रे दरसण तार्यों आख्या घणी तिसाई॥
ओ ससार सवारथ भरियो मनडो नई पतिजे रे।
राम मिल घनश्याम मिले
कहजे थेई मायड बाप हो में तो थारो छोरो।
थास्यू नातो चदन चाकर ज्यो मिणिये में डोरो॥
मारग देखू आसूडा सू से पगडड्या भीजे रे।
राम मिलै घनश्याम मिले
झिर-मिर, झिर-मिर बरस परो तू हरि चरणा न धाये
त्यारण री आदत हे'बामे पार पुरबला होये॥
'शिव पाण्डे' कल्याण चरण धो ला चरणामत दीजे रे।
राम मिले घनश्याम मिले

***

१०७ भजन-मीरा बाई का

राग-देश माड

मीरा छोड्यो मेडतो जोगणग ई बण रे।
धरती री गोदी मे होया श्याम सू मिलण रे॥
पगा बाजै गूघरा दिवानी रेयी नाच रे।
तनडो सक्यो मनडै माथे भगति गई राच रे॥
तनदूरे तारा पग हेलो लागी ह करण रे।
मीरा छोड्यो मेडतो जोगण
जहर स्यू मारी न मरी लिख्या टळ न लेख रे।
त्याग रै खीरा पर चाली दुनिया रेयी देख रे॥
मनड ही मनडै ध्यान लागी ह धरण रे।
मीरा छोड्यो मेडतो जोगण
हाल रा बेहाल होग्या जीद नहीं छोडरी।

महला री महाराणी सेज छोड नीचै पोढरी॥
अरदासा स्यू तीनू लोक लाग्या हे हिलण रे।
मीरा छोड्यो मेडतो जोगण
त्रेता में अेठोडा बोर खायपरा कै रामजी।
द्वापुर में तू मीरा बणसी दीयो वरदानजी॥
लेकर के आशीश भिलणी पूजे हे चरण रे।
मीरा छोड्यो मेडतो जोगण
छोड्यो हे सरीर भगती मीरा री बतावे ह।
आणो जाणो मिटगयो वेद आ बतावै हे॥
'शिव पाण्डे' प्यारो श्याम पड्यो हे सरण रे।
मीरा छोड्यो मेडतो जोगण।

***

१०८ भजन-एक ही सहारो हे

राग-झझोटी

आप बिना प्रभु कोई न हमारो हे।
भव से तरन को एक ही चारो है॥
विन्ती करे नित प्राण पखेरू।
डूब न जाऊ में नहीं तेरू॥
पापन को मेरे सरपर भारो है।
आप बिना प्रभु कोई न हमारो है
नीयत को आपकी रग मे रगदो।
उतरे खरी, कसौटी में ढगदो॥
आनन्द कद कोई और न चारो है।
आप बिना प्रभु कोई न हमारो है

सुहानी भोर मन आगन तुम्हीं हो।
भक्तन के चित चोर तुम्हीं हो
नयन कहे नयनन उजियारो है।

आप बिना प्रभु कोई न हमारो है

डूबते का तिनका बन जाते।
सतरक रह कर जान ही बचाते॥
'शिव पाण्डे' को चरन में सहारो है।

आप बिना प्रभु कोइ न हामारो हे

***

१०९ भजन-हनुमान जी का

राग-आयो ओयो तीज त्यौहार रमसा आगण में

ध्यावा जी ध्यावा ध्यावा ध्यावा म्हेतो गुण गार।
बजरग बाला नै, बजरग बाला नै॥
लाल लाल सोवे लगोटे।
कारज सारे हाथ में घोटे॥
देवता बडाई बलवान। बजरग बाला ने।

धन्य अजनी मायड रा पूता।
अजर अमर हो रामजी के दूता॥
सीता माता दियो वरदान।

बजरग बाला ने

रोम रोम में राम दिखायो।
छाती चीरी जद निजरा आयो॥
धर्‍यो इष्ट देव रो ध्यान।

बजरग बाला नै

राम ध्यान धर लका में कूदया।
बाळ झाळ रामा दल में पूग्या॥
रावण रो गाळयो अभिमान।

बजरग बाला नै

घर घर माया थारी होसी पूजा।
राम प्रिय कोई और ना दूजा॥
'शिव पाण्डे' थारी महिमा गाय।

बजरग बाला नै

***

११० भजन-रामदेवजी का

राग-देशी भैरवी

धर मजला धर कूचा चालतोइ जा।
पूरी होसी यातरा बाबेरा गुण गा॥
साठ कोस नर नारी पाळो टुरै सग।
दरशण री उठे मन सगळा रै उमग॥
हाथ धजा नाचै जै बोलातई जा।

पूरी होसी यातरा बाबेरा गुण

परचा दे भगता रा बिगड्या सारे काम।
तीरथ सुरग सो अेक रूणिचो धाम॥
कोढ झाडै जतन सू जे जोत लै लगा।

पूरी होसी यातरा बाबेरा गुण

राम कहो श्याम कहो महीमा एक है।
चाये रामदेव कहो माया अनेक है॥
हित चित सू पूजा कर सरण माय आ।

पूरी होसी यातरा बाबेरा गुण

हिन्दू मुसळमान धोक लगा देवे फेरी।
चरण सरण धजाबन्द 'शिव' बीकानेरी॥
सद बुद्धी माग रयो दरगा पे गा।

पूरी होम्सी यातरा बाबेरा गुण

***

१११ भजन-पीवे नी कटोरो

राग-लोग धुन सूवटा

पीवै नी कटोरो हरि नाम रो प्रभु नाम रो।
जनम सफल होय जाय रे राम नाम रो॥
काया र नगरिये में ग्यान री जोत जगाओ म्हारा भाई रे।
जोत स्यृ मिलार जोत दूर अधैरै नै भगावो म्हारा भाइ रे॥
तीरथ करो नी सुख धाम रो रे हरि नाम रा।

जनम सफल होय जाय

प्रेम रस सींच कर भगती बाडी बावो म्हारा भाई रे।
चढ कागद री नईया निरभै भव सू पार लगावो। म्हारा भाई रे।
तू तो नइ रे मुसाफिर ईये गाव रो रे प्रभु नाव रो।

जनम सफल हाय जाय

जुगति स्यू मुगति हो मुगति रे मारग बेवो म्हारा भाई रे।
मरियादा ही नाम राम रो मरियादा मे रवो म्हारा भाई रे।।
नकली धन कोई काम रो रे हरि नाम रो।

जनम सफल होय जाय

पग पग माया जाळ विछाव सुख री नींद क्यों सोवो म्हारा भाई रे।
हीरो मिलसी सासरिये मे पीवरिये मे काई जोवो म्हारा भाइ रे।
'शिव पाण्डे' सहारो राम नाम रो रे सुख धाम रो।

जनम सफल होय जाय

***

११२ नखरो देवरिया भाभी पर जादू करग्यो

राग- पटकली

थारो पति रै केवावै भोळानाथ ओढण मा चीर चमकै।
थारी जोत जगै दिन रात ओढण मा चीर चमकै॥
अरदासा स्यू करा आरती दियो लगन रो जोकर।
सुद्ध भाव पुष्बा री माळा गा पेराऊ पोकर॥
बोला धजा तळे जेकर ओढण मा चीर चमके।
थारो पति रे केवावे

थारी महिमा मूढे लुळ लुळ धोक लगावा।
चरणामत में चमतकार लेताई दरशण पावा॥
पत राखो हाथ हजार ओढण मा चीर चमक।
थारी जोत जगै दिन

निरमल नेण परख के पाणी दुख रो सुख कर देवो।
देशनोक में आप बिराजे पग पग परचा देवो॥
केवै चरण चढ्या दोय नेण ओढण मा चीर चमकै।
थारो पतिरे केवावे

ग्यान ध्यान दो भारतिया नै धरती सुरग बणाबै।
भगता सागै 'शिव पाण्डे' लिख नित रा महिमा गावै॥
था करी बळध री गाय ओढण मा चीर चमके।
थारी जोत जगै दिन

***

११३ भजन-गउमाता रो

राग-खमाच

अब गाया दुखडो पावे कान्हा आर तो उबारो थारी गाया ने।
क्योनी आरो हेलो झेलो।
जीवन दिन दिन होरयो मेलो॥

घोर नींद माय क्यो सोया कान्हा।

आर तो उबारो थारी गाया ने

पाप्या रै पापा सू धरती।
सिसक रयी है भारा मरती॥
आकर भारा उतारो कान्हा।

आर तो उबारो थारी गाया ने

बाछडिया भूखा गरळावै।
तळक टळक आसू टळकावे॥
ममता रा प्राण उबारो कान्हा।

आर तो उबारो थारी गाया नै

बेटा होय कर मा नै काटै।
बेच बेच तन पइसा बाटै॥
अै कठै पिन्ड छोडासी कान्हा।

आर तो उबारो थारी गाया नै

सुणो आप भगता मू बाणी।
राखो उतरतो मा रो पाणी॥
शिव पाण्डे गार बुलावै कान्हा।

आर तो उबारो थारी गाया नै

***

११४ भारत भारती माता पिता

राग-देशी भैरवी

एक पिता है एक हे माता सबके भारत भारती।
सारी कौमें मिलकर रहती बाते करती प्यार की॥

हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई मिलकर देते पेहरा।
हर सैनिक सिर बधा हुवा हे आजादी का सेहरा॥
काशमीर पर आख उठाने वाले को ललकारती।
एक पिता है एक है माता
सब धरमो के फूल चमन में खिलकर के मुसकाते।
जान लुटाने वाले पूजे इतिहासो में जाते॥
नहीं देश पर मरना आता उसे धरा धिकारती।
एक पिता है एक है माता
शहीदो की कुरबानी हिन्द आगन महकाता।
नाज से उनका नाम गीतो मे बच्चा बच्चा गाता॥
स्वतत्रता के रथ का होशला हमारा हे सारथी।
एक पिता है एक है माता
तिरगे के नीचे खडे होकर एक लागाते हम नारा।
सब मजबो का एक गगन के नीचे खुलता हे द्वारा॥
नतमस्तक कर 'शिव' हिमालय की रोज उतारे आरती।
एक पिता है एक हे माता

***

११५ शहीदो के नाम दो जाम

गीत-हिन्दी

दो जाम पीले आवो शहीदो के शान के।
तुम भाग्यशाली पुत्र हो भारत महान के॥
कधे से कधा टकरा मिला पाव पाव से।
सुरूर रग लाएगा पीना निगाहो से॥

कसमे खा दामन बढावो सीना तान के।

तुम भाग्य शाली पुत्र हो

तन मन अमानत देश की इतिहास बोलता।
अनमोल खून देश दिवानो का बोलता॥
जो मरना नहीं जानते आशिक क्या काम के।

दो जाम पीले आवो

कुदरतने दिया प्यार प्यार करना सीखलो।
मुक्ती मिले मरने से तो मरना सीखलो॥
मजहबो के ताले लगादो जुबान के।

तुम भाग्य शाली पुत्र हो

हो एक भेद भावकी दीवारे गिराओ।
मा एक सबकी धरती दे बाट के खाओ॥
'शिव' पहरेदार हें पुजारी आन बान के।

दो जाम पीले आवो शईदो

***

११६ भजन-मेरे नयन तरसते हे

राग-देशी भैरवी

हे राम तुम्हारे दरशन को नित मेरे नयन तरसते हैं।
मिलने की आशा में स्वामी उमीदे हाल हरसते हे॥
में कोन हू क्या हू किससे कहू दिल पल पल दुख उपजाता है।
हे अमरनाथ जगदीश जगत में यही जानना चहता है॥

ये नैन झडी ज्यू सावन की दरशन हो राह बरसते है।

हे राम तुम्हारे

विधना हित दीन दया मानू तिहु लोक आपका बसा हुआ।
मायावी माया तुमहारी परमाणु तक नहीं बचा हुआ॥
उपकार करो अपना कर के दिन कसौटी कसते है।

हे राम तुम्हारे

अहसान किया जीवन देकर इस जीवन से में बोझ मरु।
चिन्ता जीवन में चिता बना फूक फूक कर पेर धरु॥
जो दिया आपने स्वीकार 'शिव पाण्डे' सदा हरसते हे।

हे राम तुम्हारे

***

११७ स्तुति माताजी की

राग-अव तू ही बचा लाज मेरी कृष्ण कन्हैया

हम द्वार खडे विन्ती करे ध्यान धरो मा।
नईया पडी मजधार में भव पार करो मा॥
पूजा में हाथ जोड के गाते है आरती।
शक्ति प्रदान हमे करो हे मात भारती॥
सब माग रहे झोलियो में ग्यान भरो मा।

नईया पडी मजधार में

एक झलक दिखा सबके लब पे तेरा नाम हो।
इस हिन्द में करोडो पेदा फिर से राम हो॥
हर घर में सुख की लहर हो दुख दर्द हरो मा।

नईया पडी मजधार में

हम भूले हुवे राह दिखा दे दो सहारा।
नइ जाति जले जीवन में मिल जाये किनारा॥
धन सम्पति भक्तो का भडार भरो मा।
नईया पडी मजधार में

है अष्ट भुजी माता सच्चा तेरा द्वार है।
कोई पास का न पार महिमा ही अपार है॥
'शिव पाण्डे' चरन सरन सग्पे हाथ धरो मा।
नइया पडी मजधार मे

***

११८ माताजी की स्तुति

राग-गारी तेरा गाव बडा प्यारा

मा ए तेरा नाम बडा प्यारा जाए न विसारा।
लते जाएग नाव खेते जाएग॥
स्वग से मुन्दर भवन सुहाना धरम धजा फहराये।
अटल जोति के दरशन करने नर नारी नित आते॥
जै जैकार तेरी करते ध्यान तेरा धरते।
लते जाएग नाव खेते जाएगे

राह दिखादो हम भारत की नइया खेते जाये।
करे उन्नती तूफानो से कभी नहीं घबराये॥
धरती गगन को गुजाते लहरो को सुनाते।
लेते जाएगे नाव खेते जाएगे

चीर को तेरे दुश्मन खींचे उसका दामन तोडे।
मार गोलिया चीर के सीना हाथो प्राण निचोडे॥
बाजी जान की लगाते रणभेरी गाते।
लेते जाएगे नाव खेतेजाएगे

तेरे अहसनो का हरगिज मोल चुका न पाये।
कोटि कोटि का नमन चरन पर हम बलिहारी जाये॥
'शिव पाण्डे' बीकानेरी भक्त सरन तेरी।
लेते जाएगे नाव खेते जाएगे

***

११९ गीत हिन्दी सबकी माता हे

राग-झझोटी

अहसान चुका न सकते इससे जनम जनम का नाता है।
कोटि कोटि का नमन करे हम सबकी हिन्दी माता है॥
गगन धरा तक महकाती गुणवन्ती गुण की खॉन ये।
हर घर आगन स्वर्ग बनाती देकर के वरदान ये॥
इसके पावन गीतो से ससार सभी गुजाता हे।
यही बोलना सिखलाती, नित उगली पकड चलाती।
मिट्टी के पुतले में सुन्दर ग्यान की जोति जलाती॥
इसी आशीर्वाद से इनसा क्या से क्या हो जाता है।
कोटि कोटि का
जीवन सफल तभी होगा हम मा की माग सजाये।
ससार हमे धिकारेगा गर इशका दूध लजाये॥
इसकी गौरव गाथा से भारत महान कहलाता हे।
कोटि कोटि का
तुलसी मीरा सूर कबीर ने इसके दीप अमर जोये।
विवेकानन्द ने गीता सुनाकर विश्व जनों के मन मोये॥
'शिव पाण्डे' यमना तट मोहन बसी रोज बजाता है।
कोटि कोटि

***

१२० भजन-चोर एक चोरी कर ग्यो रे

राग-पाडी

थारी काया नगर र माय चोर एक चोरी कर ग्यो रे।
तू चेतो करले मिनख ओ जोरा जोरी कर ग्यो रे॥
असली धन तो दाय न आवै नकली धन नित जोडे।
चचल चतर चटोरो दिन में लाखू कोसा दोडै॥
चोट चढावै दिन धोळे केस्यूइ नी डर ग्यो रे।
थारी काया नगर रे

राम नाम नी लेवण देवै सुख री सेजा पर सोवे।
दुख पड्या मू कर कर ऊची ओ आगळिया रोवै॥
घडो पाप रो टपक टपक हाथा स्यू भर ग्यो र।
थारी काया नगर ग

ईरा नखरा देख मिनख होजावै हक्को बक्को।
दया करै ना मोको लाग्या दै कूवे में धक्को॥
अजर अमर ओ केस्यू ही मार्‌यो न मर ग्यारे।
थारी काया नगर र

सबडै नइ मतोष लालची राख घाल सिर राखी।
लाज सरम अर ह्या दया माथे सू उतार न्हाखी॥
'शिव पाण्डे' कै ग्यान श्यान दिन धोळै चर ग्यो रे।
थारी काया नगर रै

***

१२१ भजन-मुझको जगाई

राग-पहाडा

आके अटरिया पे मारक ककरिया श्याम न जगाई।
चुप चुप के किया जो इशारा सरम से मैं तो घबराई॥
ओ री सखी मे बाली न चाली।

हाए राम कह के नजर झुकाली ॥
और पीछे से आ के अचानक रस्तो रोक के पकडी कलाई।
मैं तो घबराई।

जहा जाऊ वहा पीछे आये।
नयनो का तीर जीगर पे चलाये ॥
जीना भी कर दिया हराम नट खट नै मैं तो तग आई।
मैं तो घबराई

रातो ही आये निदिया में वो।
दरपन देखू बिदिया मे वो ॥
लाज का पहरा तोड चली में जब पनघट पर बशरी बजाई।
में तो घबराई

सोई यू प्रीत अचानचक जागी।
होके बावरी नाचने लागी ॥
तन मन की सुद्ध बिसर गई 'शिव' होश में लाई पवन पुरवाई।
में तो घबराई

***

१२२ भजन-सूवे ने पाठ पढाय दे रे

राग-पीलू

पछी ने पाठ पढाय द रे राम नाम नइ भूले।
भवरे ने मतर सुणा द रे राम नाम नइ भूले ॥
इ करणी सू छुट ना पिजरे में आणो जाणो।
बुद्धी कीया करे काम तू खाय इसो ही दाणो ॥
दाणे पर नाव लिखोडो रे। राम नाम क्यों भूल।
सूवै ने पाठ पढा

खुद री छोड पराई झउ कै छाण न पीवे पाणी।
तनडो उजळो मनडो मेलो मीठी बोले बाणी॥
इमरत में विशडो घोळे रे। राम नाम क्यो भूले।
भवरे नै मतर

बरसा रो समान बाथरयो लिछमण रेखा तोड।
रावण बण सत सीता रो ले दोड कठ तक दाड॥
के किसे लोक में लुकसी रे। राम नाम क्यो भूले।
सूवै ने पाठ पढा

पिजरे बडतो आर निसरतो उडतो उडतो थकग्यो।
'शिव पाण्डे' के सरण राम री ले लीनी बो लखग्यो॥
नेकी मारग पग धरल रे। राम नाम क्या भूल।
भवरे नै मतर।

***

१२३ भजन-तन दीयो मन बाती

राग-आशावरी

तन दिवलो तो मनडो बाती सास ही जोत जग दिन राती।
पल रो नयीं भरोसो कद बुझ जाव रे॥
सत्य धरम री क्यो नी जोत जगावे रे।
ई लाखीणे मिनख पणे न मती न लाजा मार।
आ देवा सी जूण सुलखणी ऊडी बाता विचार॥
जीवन रथ न क्यों नी सूल चलावे रे।
पल रो नयी भरोसो कद बुझ जावे रे

प्रभु थप्पड मारै है खडको होवे आ तैं जाणी।
काया कागद री नइया हे भवस्यू पार लगाणी॥
ई पर धरम धजा क्यो नी फेरावै रे।
पल रो नयी भरोसो कद बुझ जावै रे

फूक फूक धरती माथै पग धरणे में ही सार हे।
ओ जीवन माग्योडो मालिक थन्ने दियो उधार हे॥
कचन सी काया क्यो काट लगावे रे।
पल रो नयी भरोसो कद बुझ

'शिव पाण्डे' तू समज सेन में के लायो लेजासी।
नई भरासो कद मोतडली आर लगादै फासी॥
उळझ्ये जीवन नै क्यों नीं सुळझावै रे।
पल रो नयी भरोसो कद।

***

१२४ भजन-राम रूखाळो

राग-झझोटी

मन मरियादा तोडर भाईडा मतना आपो राळो।
मिनख मिनख स्यू प्रेम करो रे सबरो राम रूखाळो॥
माग परो मालिक स्यू लीनो लाजा मारो मत ना।
कर कर माजनो देवो थारी रेवैली पतना॥
करनी काटा बणकर गडसी मिले नी काढण आळो।
मिनख मिनख स्यू

जीवो अर जीवण दो सुख सू खावण अर खाओ।
स्वार्थ अेक दूसरे रै मत पगा कवाडी बावो॥
चूच दी बोइ चुग्गो देसी मन मत राखो काळो।
मिनख मिनख स्यू

अवगुण जडा मूळ सू उखाड जशरो झडो गाडो।
असली भगती मिनख मिनख रे दुखम आव आडो॥
जीवन सफल बणाणो है लेवो थे पाप स्यू टाळो।
मिनख मिनख स्यू

नैण नेह बरसा मुखडै सू से नै इमरत पावो।
आदतडी रै राम चाबका मार थे मारग लावो॥
'शिव पाण्डे' कै गति फरक नी दुख दे जासी टाळो।
मिनख मिनख स्यू

***

१२५ माताजी की स्तुति

राग-निणजारी ये हस हम बोल बाता थारी रै जासी

म्हारी लाज राखजो मा थारा गुण गावाला।
जनम जनम सू नातो जननी बोल जे जै कार।
थारा गुण गावाला

धरम धजा फरावे सीखर बसरया तीनू लोक।
ममता प्यारी कोख सराणी दा चरणा म धोक॥
नाम आपरो कुदरत करणी भोळो शकर भरतार।
थारा गुण गावाला

हर हर गगा जमना सरयू मन सू प्यारो न्हाया।
रग सुरगी चुनदडली रै म्हे से बैठ्या छाया॥
जीव जन्तू देत्या ने पाळो निज दूधडलो पाय।

थारा गुण गावाला

बेटा पाप करै नित झेलो पण नई मूढे बोलो।
धरम हारतो दीसै जद थे थोडा डग मग डोलो॥
सूरज चाद सितारा में शक्ति रो नहीं अपार।

थारा गुण गावाला

चरना सरना गत री भक्ती किस्मत आळो पावे।
द्वार दया रा झट पट खोल रग चिरनामत लावे॥
'शिव पाण्डे' री लाज राखजो थारो हे आधार।

थारा गुण गावाला

***

१२६ भजन-मुरली

राग-तोडी

होठा पर धर अधर बजावै मोहन मुरली
राधा नै नाच नचावै नखनाळी मुरली
सोळा गुण ईयेमें होवै ना हिवडे सू आधी।
मनडै सू गुणगान करे नित बो नर है बडभागी॥
मुगती रो मारग देखावै जादू गारी मुरली।

राधा नै नाच नचावै

तीन लोक तक गूजी गाया मस्त होयगी चरती।
छोड घडा पिणहारया नाचण लागी पाणी भरती॥

जमना तटपर धूम मचारी रे मोहन री मुरली।

राधा ने नाच नचावै

भणक पडी भवरा रै काना बागा कळिया खिलगी।
चरण चढी सावर सा रै बिना माग्या मिलगी मुगती॥
सुरगा गुघरिया घमकायरी मोहन री मुरली।

राधा ने नाच नचावै

मेडतणी रै राणो हाथा जर देर मुळकायो।
मोहन भेजी लो परसादा पीवो पावण आयो॥
बिश नै इमरत खूब बणायो रे मोहन री मुरली।

राधा ने नाच नचावै

राधा राणी अरज करे 'शिव पाण्डे' महिमा गावे।
रू रू माया रस घोळर भगती रा भाव जगावे॥
भजन लिखावै देकर ग्यान आ मोहन री मुरली।

राधा ने नाच नचावै

***

१२७ हिन्दी गीत देश भक्ती पर

राग-बरवा

ये मेरा देश ही महान ह गीता का देता ग्यान है।
मजहबों का सरपै ताज है सपूतो पे इसको नाज है।
प्राणो से उतारे आरती हौंसल बुलन्द भारती।
सीस बेधडक करते दान हे, ये मेरा देश ही महान है॥
हम शान्ती का बिगुल बजाते भारत मा की माग सजाते।
प्यार धरमो की राह एक हे देते आवाज हम एक हैं॥
धरती मा वीरो की खान है ये मेरा देश ही महान हे।

वन्दे मातरम की बोलीया चढती गगन बैठ डोलिया।
देश भक्तो के नाम चूमती विश्व को गूजाती झूमती॥
अमर गान की निराली तान हे ये मेरा देश ही महान है।
और खून से चमन सींचना शहीदो ने हमे सिखलाया।
चीर गगा का पावन बढा पिता हिमाले को दिखलाया॥
जानता ये सारा जहान हे ये मेरा देश ही महान है।

***

१२८ कविता निर्जळा ग्यारस

एक लाल आठ साल रो मॉ स्यू अकडग्यो है।
कर सू निरार निरजळा जिद कर र खडग्यो है॥
मा केयो बेटा जेठ री गरमी नी सैय सके।
तू फूल मुरझा जाय रे भूखो नइ रैय सकै॥
का बोलो फेर जेठ री गरमी तो सेय सकू।
भूखो तो काई तिस्सो दिन दोय रैय सकू॥
तू ही तो कहती कृष्ण सगति देर करावै।
बै सगति दे कराय सी फेरू क्यो डरावै॥
मत मना कर अे मावडी प्रभु सगति सरण दै।
ध्रू तपस्या कर तिर्यो मनै ग्यारस तो करण दे॥
तिरिया हठ जोगी हठ बालक हठ है तीसरो।
करलीनी बिये इग्यारस खारो हो रीसरो॥
मा केणो हो सो कै थकी ना मानी अेक बीं।
गरमी पडी का तिस्से री घबरायो मे स्यू जी॥
मा भी गिलास पाणी री पावण ने ल्याई हे।

बीं सुत्ये सुत्ये पीऊ ना के नस हिलाई है॥
तडफे हो बुरि तरिया सू पण जिद न छोडग्यो।
दिन पडगडा पडगडा हो घोड ज्यू दोडरयो॥
सूरज रो रथ सिज्या रै धोरा सू ढळरेयो।
तपति रो बेग डठ रै सागै हो रळ रेयो॥
का मा बोली रे बेटा ईसो जिद न धारणो।
उठ दूध पी र पडा स्यू तू खोल पारणो॥
का बोल्यो हैं तुतळायतो में दूध नी पीऊ।
तोंडू न करी इग्यारम चाऐ मरू जीऊ॥
ईतो कैय होयो चुप गरमी न सय सक्यो।
बोली भी बन्द होयगी कीं केय ना सक्यो॥
आखडल्या बद होइ ह का कूकी मावडी।
अधबीच मत डुबोवो प्रभु म्हारी नावडी॥
गोदी में उठार बोली लाल आख खोल रे।
छाती स्यू लगा कय री मूढे स्यू बाल रे॥
लिपट परी अर बेटे रे इणतरिया रोय री।
बा लाडल रै मुखडे ने आसू स्यू धोय री॥
अणेसा करती केरी बोल आख्या रा तारा।
म्हारोडै बूढा प क्योनी बोलै सहारा॥
बा लाडलै री छाती पर कै पटक कर माथो।
तू अंकर मू स्यू बाल थारी मायड सू जातो॥
ममता री आख्या में स्यू लागी आसुवा री झड।
लाडेसर री छाती पर गइ रोती रोती पड॥

जे प्राण बी में होवता उठ मू स्यू बोल तो।
बोली क्यू बद होवती आखडल्या खोलतो॥
पण मा रो लाल आण पर इणतरिया अड्यो है।
मनमोहन ने लेर बसरी आणो ही पडयो हे॥
जोगी रो रूप अग पर भभूति सोवे हे।
आकर कै बोल्या डोकरी तू किया रोवै हे॥
बा बोली आसू न्हाखती भगवान रूठ ग्यो।
लेलीनो म्हारै लाल ने रै भाग फूट ग्यो॥
का बोल्या श्याम मुळकता क्यू झूठी रोवे हे।
थारोडो लाल नीद मे निशक ही सोवे हे॥
हरि हेलो ज्योई दीनो अर लाल जागियो।
उठकर के मारी छाति सू झटकै से लागियो॥
घनश्याम देखो भगत ने खोलावै पारणो।
जिमाता कैया इसो जिद कदी नई धारणो॥
भगत री बात राख के जीमावै हाथ स्यू।
मा बेटे न दरशण दिखा रिझावे बात स्यू॥
'शिव पाण्डे' बीकानेरी रग राचणो पडै।
नचावै ज्योई भगत प्रभु नै नाचणो पडे॥

***

१२९ भजन-भैरूजी का

राग-शिव रजनी

कोडाणेरा भेरू नाथ सरन में आयो थारी।
कर जोड चरण देऊ धोक लाज राखो म्हारी॥

करू आरती में हित चित सू पेराऊ गळ माळा।
भोग लगाऊ चूर चूरमों जीमो गोरा काळा॥
बोला इष्ट देव जेकार धजा फेरावा न्यारी।

कोडाणरा भेरूनाथ

थे भगता रै मूढै बोल कर पग गूघरिया नाचो।
सरण पडये री लाज राख के मन री बाता जाचो॥
मनडे सू दे आशीष विपत मेटो मारी।

कोडाणैरा भेरूनाथ

भादूडे री रात चानणी चन्दो चवर ढुळावे।
तिथ तेरस रो मळो लागे घणा यातरी आवै॥
देवे जात झडूलो नर नार छबी देखा न्यारी।

कोडाणेरा भेरूनाथ

लखासर तोळियासर रगतमळजी थारो नाम।
न्यारा न्यारा रूप आपरा न्यारा न्यारा धाम॥
'शिव पाण्डे' महिमा गाय चरण पर बलहारी।

कोडाणैरा भेरूनाथ।

***

१३० भजन-अरे मान मन

राग-शिव रजनी

अरे मान मन अरे मान मन अबतो कहना मान।
तेरा साथी राम नाम जिसका नहीं रखता ध्यान॥
छोड के अपने करतव्यो को होता जाये अधा।
जान बूझ कर चिन्तावो का डाल रहा गल फदा॥

पल की खबर नहीं चाधे सौबरसो का सामान।
अरे मान मन अरे मान मन

डूब रहा स्वारथ सागर में ढ़ूढ रहा आनन्द।
अपने ही हाथो मुक्ती के दरवाजे करता बद॥
भक्तो के विश्वास की नइया खेते हे भगवान।
अरे मान मन अरे मान मन

भरम भरम में भटक रहा है सपनों में सुखनाय।
कउवे जैसी बोली बोल करता काय काय॥
नीयत डामा डोल न बसमे क्या करलै गुरु ग्यान।
अरे मान मन अरे मान मन

तपबल नहीं महकने देती चकमा देती भूल।
प्रभु चरनो पर चढ नहीं शक्ती ये बनकर के फूल॥
'शिव पाण्डे' प्रभु आशीर्वाद से मिल सकता वरदान।
अरे मान मन अरे मान मन

***

१३१ भजन-जीवन बुलबुला

राग-खमाच

समय तो हे मेहमान बन्दा क्यो न हरि गुन गाये।
जीवन बहता एक बुलबुला क्यो न लाभ उठाये॥
दीनदयालू दयावान है दुनिया के रखवाले।
आठो पहर खुले रहते हैं जिनके खुले द्वारे॥

प्रेम के पुष्प भावना सची जाकर कोई चढाये।

जीवन बहता एक

कल ता किसी का आइ नहीं अब भी नहीं आने की।
चन्द मिन्टो में आये थे वो सोच रहे जानेकी॥
जानेवाला रूक नहीं सकता लाखो जतन जताये।

जीवन बहता एक

मोत तुजे आकर घेरगी नहीं ह तू निरदोष।
पाप गिनायेगा मन दरपन तब आयेगा होश॥
होनी के है हाथ हजारों क्यों न भला मनाये।

जीवन बहता एक

चेत मके तो चेत मुसाफिर अब भी मत कर देरी।
नीयत ले डूबेगी छोडदे करनी ये हरा फेरी॥
'शिव पाण्डे' क्यो कायर बन कर अपनी जान गमाये।

जीवन बहता एक

***

१३२ भजन-श्री रामदेवजी का

राग-माड

मोरूजी रे बाबो मिलतो कहजे दरगा आवाला।
अनदाता मनडे री बात बतावाला॥
धोक लगा कर अरज करा अब सुणजो धणिया हेलो।
एकघडी नी भूला हेलो दरगा बेठया झेलो॥
मोरूजी रे कहजे आ भगती रा पुष्प चढावाला।

अनदाता।

पीरा थारी ओट भगता रो राखे उतरतो पाणी।
चारु खूट में डको बाजे नेतल सी महाराणी॥
मोरूजी कहजे चरणा लुळ लुळ धोक लगावाला।
अनदाता।

सगती देयर डोर खींच जो रूणीचे रा राजा।
दरशण ने आख्या तरसावे नोबत बाजे बाजा॥
मोरूजी रे मिन्दर धरम धजा फरावाला।
अनदाता।

थारी जोत री रिख्या आधलिया री आख्या खोलै।
डाली बाई रा इष्ट देव 'शिव पाण्डे' गा जे बोलै॥
मोरूजी रे कहजे थे दरशण देसो सुख पावाला।
अनदाता।

***

१३३ भजन-नानी बाई री राखी

राग-पीलू

राखी तो बाधू किण बाबल रै जायोडै रे।
बीरेजी री याद आयगी, रोवै नरसी जी रै आगणै खडी॥
नरसीलो के पावणा नानी बाई आया।
चुप क्यू खडा काइ म्हारै स्यू रिसाया॥
के थानै नणदल ताना दिया हे काइ थानै सासूजी लडी।
रोवै नरसी

नानी बाई कै बाबल थानै न्योतण आइ।
सुमनारी राखी सागे लेकर आई॥
कुणतो बीरे बिना भरसी मायरो आसूडा री लगारी झडी।
रोवे नरसी

नरसीलो कै बाई मोहन धरम भाई।
भरसी मायरो देसी राखी री बधाई॥
बिसत्रू बिसवा राख भरोसो भूले नी सागी घडी।
रोवे नरसी जी

छप्पन क्रोड स्यू मायरो सवरे भरियो।
राखी बधा दे नेग नानी बाईरो धरियो॥
भगत बछल प्रभु कारज सार्‌यो शिव पाण्डे महिमा घडी।
रोवे नरसी जी

***

१३४ भजन-राम भजन कर प्रानी

राग-ध्यानी

तू राम भजन कर वक्त जा रहा प्रानी।
कोई न भरोसा कब हा जाए रवानी॥
अनमोल बोल हस बोल काम आएगे।
बन पुष्प प्रभु के चरनो चढ जाऐगे॥
गया बचपन आया बुढापा गई जवानी।
कोई न भरोसा कब हो जाय

हठ शीश काट अवगुन का चोवडै रख रे।
गुणवान की सगत कर के माया लख रे॥
तेरे अन्दर बेठा दुष्ट तेरा अभिमानी।
कोइ न भरोसा कब हो जाय

कागज पे बीज बो बोदे जगत फल चाखे।
यह नेक कामाइ तेरी याद सब राखे॥
उतरे ना मुख से मोती वाला पानी।
कोई न भरोसा कब हो जाय

प्रभु भक्ती हृदय उठकर के रग लाती।
मन की आवाजे खाली कभी नहीं जाती॥
'शिव पाण्डे' मन्जिल मिलती है आसानी।
कोई न भरोसा कब हो जाय

***

१३५ भजन-राम रट्या जा

राग-देश

चलता फिरता राम रट्या जा खाता पीता हरि भज्या जा।
थन्रे के लागे भार भाईडा सुखपासी॥
सीरो खावता दात घसै न राम रट्या सू मनडो।
भलो करया सू हाथ घिसेन धरम करया सू धनडो॥
दिल दरियावा जडा राखो पण तजदेवो खार
भाईडा सुखपासी।
मीठो बोल्यो मूढो घिसै न नेह राख्या सू नैण।
जीभ घिसै ना रस घोळया सू मिनख पणे री दैण॥
धरती पर दुशमण मत राखो मोह लेवो ससार
भाईडा सुखपासी।
धीरज तो धारयोडो आछो तजणो भलो तमोग।
आळस रो नरका सू नातो सुरगा बणै न जोग॥
नियत साफ तो मनजिल नेडी मन में लेवो धार
भाईडा सुखपासी।
बेठ धरम री छीया सगळा अर सबडो सतोष।
मन दरपण में झाक परा से देखो खुदरा दोष॥
'शिव पाण्डे' के बीकानेरी बुरी है जम री मार।
भाईडा सुखपासी

***

१३६ भजन-राम रस

राग-झझाटी

आओ भाई राम रस चाखो चाखो।
लेता मुखडो नहीं थाको थाको॥
राम राम रग रग में दोड असली धन जोडणियो जोडे।
हिरदै मायीं राखो राखो।
आओ भाई राम रस चाखो चाखो
चुपकै देणो चुप कै लेणो दे बिरथा चवडे कर देणो
सिर स्यू सरम मत न्हाखो न्हाखो॥
आओ राम श्याम रस चाखो चाखो
इये रस रो असर जबर है तीन लोक री राखै खबर है।
काई काचो काई पाको पाको।
आओ राम श्याम रस चाखो चाखो
निरधन चाख्या बिन अभागो 'शिव पाण्डे' रस मूढै लागो।
थे हरदम मू पर राखो राखो।
आओ भाई राम रास चाखो चाखो

***

१३७ भजन-राम राम रस नीको

राग-तिलक

सता राम नाम रस नीको थे इमरत पीणो सीखो
राणे जहर दे भक्ती तोली पी मीरा मन मस्त हो बोली।
ई मीठे इमरत रस आग आर सभी रस फीको।।
सता राम नाम रस

सूर हिर्दय के नयन नीहारे नकली थे वो तुमपर वारे।
हाथ कहा जाते मोहन आशिक हू मुरली को॥
सता राम नाम रस

नतमस्तक सृद्धा से कीयो मुरली छोड धनुष कर लीयो।
राम राम मन इतनी सृद्धा इष्ट देव तुलसी को।।
सता राम नाम

'शिव पाण्डे' निरभै होय जीयो भव तिरसी जो हरि मुखलीयो।
सब झझट की यही दवा है जे सुख चावो जी को।।
सता राम नाम

***

१३८ राग-देश देसी

सुण पन्छीडा रे रैया दिन बीत्या थारा जावै।
आज हे सो काल ना रे क्योंनी हरि गुण गावै॥
जी चावे जद भरे उडारी मन में खोटी धार।
आभै मार्यी बैठयो आख्या देख रैयो करतार॥
किता दिनारो जीवणो है लालच गळो कटावै।
सुण पछीडा रे

मत अपजश री बाध गाठडी धूजै थर थर हाथ।
दया धरम ते छोडदियो आ करी न आछी बात॥
करणी थारे करमा री प्रभु थारैइ हाथ लिखावे।
सुण पछीडा रे

भलो कियो न केरोई जस दुनिया मे लीयो।
आये द्वार दुखी ने ते ना हाथ रो ऊतरदियो॥

मोह माया ठगणी लगणी झूठा इ लाड लडावे।

सुण पछीडा रे

पाप पाळकर करमा आडी मती बाध र पाटी।
मिनख जमारो मिल्यो मुशकला ते चोरासी काटी॥
पीड पराई जाणे ना रे खोटा करम कमावे।

सुण पछीडा रे

दुनिया दुरगी कोई न सगी कान खोल सुण भाई।
'शिव पाण्डे' भजना मे केव करले नेक कमाई॥
भाई बन्धू कुटम कबिलो कोई न आडो आवे।

सुण पछीडा रे

***

१३९ भजन-मीरा बाई का

राग-देसी माड

रूठे तो रूठा कुटम कबीलो चाए थे रूठो राणोजी।
में तो श्याम चरण री दासी बिसवू विसवा जाणोजी॥
इण महला सुख दखण मा बाप म्हन परणाई।
सिणगारोडी मेजा फूला म्हारै दया नी आई॥
इण महला में हेला दू तो मनमोहन कद आवे।
रीश ने मारो दया बिचारो मनरी बात पिछाणोजी।

में तो श्याम चरन री

दासी दास मोह अर माया म्हारो मन नई मोवे।
मे बरागण श्याम नामरी भगवा बस्तर सोवे॥
धरती सोवणो रेत बिछोणो काम न आवै काया।
बाधो तो बाधी न रेऊ मत ना वश बखाणाजी।

मैं तो श्याम चरन री

कै राणो मैं जद जाणू मोहन नै आप बुलावो।
इकतारे लेकर हाथा मे बाने भजन सुणावो॥
म्हारी बदनामी करणे स्यू काई आनन्द आवे।
भगवा छोड परा केशरिया क्यो नी पैरो बानोजी।
मैं तो श्याम चरणरी

कै मीरा नीजरा स्यू देख्या श्याम सुणण ने आसी।
दूध पाय सू निज हाता सू गट गट बे गटका सी॥
नइतो जैर खाय खाय के मरसू बिसवू बिशवा जाणो।
हेलै रै हाजर खुद होसी पडजासी पछताणो जी।
में तो श्याम चरन री

उठत सवारै मीरा श्याम ने हिडदे गाय रिझाया।
सुण कर मोहन दूध पीवै राणेजी निजरा छाया॥
हाथ जोड कर राणे मीरा स्यू मागी हे माफी।
'शिव पाण्डे' कै भगत बछल नै इया होय रिझाणोजी।
में तो श्याम चरन री

***

१४० भजन-असली सासरो

राग-पीलू

पीवरियै धोरा रम्या घणा सासरियेरो सजलो सिणगार।
केवै बटाउडो सुणो बाईजी होजावो म्हारै लार,
अबैतो थानै चाल्या सरसी॥
सुणतो बटाउडै री बात बाई रोवे जननी सम्ही टुग टुग जोवै।
भोळी भोळी सूरत आसूडा सू धोवै काजळियो मनडे ने मोवै॥
हाथा मेंदी राचणी कोइ मुखडै लुमावै मा रो प्यार।
केवै बटाउडो सुणो बाई जी

मोह माया ठगणी लगणी झूठा इ लाड लडावे।

सुण पछीडा रे

पाप पाळकर करमा आडी मती बाध रे पाटी।
मिनख जमारो मिल्यो मुशकला ते चोरासी काटी॥
पीड पराई जाणे ना रे खोटा करम कमावै।

सुण पछीडा रे

दुनिया दुरगी कोई न सगी कान खोल सुण भाई।
'शिव पाण्डे' भजना मे केवै करलै नेक कमाई॥
भाई बन्धू कुटम कबिलो कोई न आडो आवे।

सुण पछीडा रे

***

१३९ भजन-मीरा बाई का

राग-देसी माड

रूठै तो रूठो कुटम कबीलो चाए थे रूठो राणोजी।
में तो श्याम चरण री दासी बिसवू विसवा जाणोजी॥
इण महला सुख देखण मा बाप म्हने परणाई।
सिणगारोडी मेजा फूला म्हारे दया नी आई॥
इण महला में हेला दू तो मनमोहन कद आवे।
गेश ने मारो दया विचारो मनरी बात पिछाणोजी।

में तो श्याम चरन री

दासी दास मोह अर माया म्हारो मन नई मोवै।
मै बैरागण श्याम नामरी भगवा बस्तर सोवे॥
धरती सोवणो रेत बिछोणो काम न आवे काया।
बाधो तो बाधी न रेऊ मत ना वश बखाणोजी।

में तो श्याम चरन री

कै राणो मैं जद जाणू मोहन ने आप बुलावो।
इकतारे लेकर हाथा मे बाने भजन सुणावो॥
म्हारी बदनामी करणे स्यू काई आनन्द आवे।
भगवा छोड परा केशरिया क्यो नी पेरो बानोजी।

मैं तो श्याम चरणरी

कै मीरा नीजरा स्यू देख्या श्याम सुणण नै आसी।
दूध पाय सू निज हाता सू गट गट वे गटका सी॥
नइतो जैर खाय खाय के मरसू बिसवू बिशवा जाणो।
हेले रै हाजर खुद होसी पडजासी पछताणो जी।

में तो श्याम चरन री

उठत सवारै मीरा श्याम ने हिडदे गाय रिझाया।
सुण कर मोहन दूध पीवै राणेजी निजरा छाया॥
हाथ जोड कर राणे मीरा स्यू मागी है माफी।
'शिव पाण्डे' कै भगत बछल ने इया होय रिझाणोजी।

में तो श्याम चरन री

***

१४० भजन-असली सासरो

राग-पीलू

पीवरियै धोरा रम्या घणा सासरियेरो सजलो सिणगार।
केवै बटाउडो सुणो बाईजी होजावो म्हारे लार,
अबैतो थाने चाल्या सरसी॥
सुणतो बटाउडै री बात बाई रोवै जननी सम्ही टुग टुग जोवे।
भोळी भोळी सूरत आसूडा सू धोवै काजळियो मनडै नै मोवै॥
हाथा मेंदी राचणी कोइ मुखडै लुमावै मा री प्यार।

केवै बटाउडो सुणो बाई जी

म्हारा प्राण भली स्यू लेवो पण मायड नै बेटो देवो।
म्हारी बात राखणी पडसी बेमाता नै को बा घडसी॥
आ आगणिये लागू अदावणी दयो बेटो लाग ज्यू पाणी।
रेस्यू जनम जनम अभारी रे।

था देर जनम लाजा मारी रे।

और कूई ना मागू थास्यू सुधरे जनम मा रे हस्या सू।
सूने मिन्दर में दिवलो चासो मा आगणे करदो उजासो॥
जद बाई रो रो रूदन ढळ्यो मा कोख प्रभु बेटो राळयो।
बाई वश बधावण आळी रे।

था देर जनम लाजा मारी रे॥

उडग्यो हसलो खुशी बाई साजी सालू घरा मे थाळ्या बाजी।
मायड कै बाई जलम सुधारयो ओ जश कीया जाय बिसारेस्या॥
'शिव पाण्डे' लिख ओळयू गावे आगणे मेंदी घुळजावे।
बाई सुरगा में आप सिधारीरे।

था देर जनम लाजा मारी रे॥

***

१४३ राम नाम बोपारी

राग-काफी

म्हे हा राम नाम बोपारी म्हे हा राम नाम बोपारी।
निरभे होकर भजन सुणावा फिर फिर नगरी सारी॥
हरिओम नम शिवा इमरत रस, राधा श्याम रस नीको।
सिया राम त्यारण रम आग, फेर सभी रस फीको॥
ऋषि मुनिया व्योपार कर्यो ओ महामत्र है भारी।

म्हे राम नाम बोपारी

जे कोई बोपार करै ओ होण मुनाफो लागै।
घर आनद री बसी बाजै दुख दाळिदर भागे॥
बिगड्ये करमा पर लागे है इयै रसा री कारी।
म्हे राम नाम बोपारी
ग्रस्ती ओ बोपार करे तो कदी न लागे घाटो।
टाबर टोळी सुख स्यू पाळे घर नइ खूटै आटो॥
सुरगा रो हकदारी बणजा छोड्या थारी म्हारी।
म्हे राम नाम बोपारी
सो भारत ब्योपार करे तो राम राज्य मुड आवे।
दूध दई री नदिया बेवे भाग गरीबी जावे॥
'शिव पाण्डे' ब्योपार खरो ओ क्यों भटके बिणजारी।
म्हे हा राम नाम बोपारी

***

१४४ भजन-नीयत पापणी

राग-जै जै वन्ती

प्रभु स्यू लो लागी तोडावै नीयत पापणी।
देख लेई पतियार न होवे आपणी॥
राम नाम री मार चाबका सीधे मारग लावो।
हिम्मत राखो और खोटा मत ना हुकम उठावो॥
सुखरी सेजा नइ सुवाणर राखणी।
देख लेई पतियार होय न आपणी
हित्यारण हित्या करवावे डिग परी दिन धोळे।
घडो पापरो आ भरवावे हाथा होळे होळ॥
ओरे केणै स्यू लाळा कदई नहीं न्हाखणी

म्हारा प्राण भली स्यू लेवो पण मायड न बेटो देवो।
म्हारी बात राखणी पडसी बेमाता नै को बा घडसी॥
आ आगणिये लागृ अदावणी द्यो बेटो लाग ज्यू पाणी।
रेस्यू जनम जनम अभारी रे।

था देर जनम लाजा मारी रे।

ओर कूइ ना मागू थास्यू सुधर जनम मा र हस्या सृ।
सूने मिन्दर में दिवलो चासो मा आगण करदो उजासो॥
जद बाई रो रो रूदन ढळ्यो मा कोख प्रभु बेटो राळयो।
बाई वश वधावण आळी रे।

था देर जनम लाजा मारी रे॥

उडग्यो हसलो खुशी बाई साजी सातू घरा मे थाळ्या बाजी।
मायड के बाइ जलम सुधारयो ओ जश कीया जाय बिसाररया॥
'शिव पाण्डे' लिख ओळयू गावै आगण मैंदी घुळजावे।
बाई सुरगा में आप सिधारीरे।

था देर जनम लाजा मारी रे॥

***

१४३ राम नाम बोपारी

राग-काफी

म्हे हा राम नाम बोपारी म्हे हा राम नाम बोपारी।
निरभै होकर भजन सुणावा फिर फिर नगरी सारी॥
हरिओम नम शिवा इमरत रस, राधा श्याम रस नीको।
सिया राम त्यारण रस आग, फेर मभी रस फीको॥
ऋपि मुनिया ब्योपार करयो ओ महामत्र है भारी।

म्ह राम नाम बोपारी

जे कोई बोपार करै ओ होण मुनाफो लागै।
घर आनद री बसी बाजै दुख दाळिदर भागे॥
बिगड्यै करमा पर लागे हे इये रसा री कारी।
म्हे राम नाम बोपारी

ग्रस्ती ओ बोपार करे तो कदी न लागै घाटो।
टाबर टोळी सुख स्यू पाळे घर नइ खूटे आटो॥
सुरगा री हकदारी बणजा छोड्या थारी म्हारी।
म्हे राम नाम बोपारी

सो भारत ब्योपार करे तो राम राज्य मुड आवै।
दूध दई री नदिया बेवे भाग गरीबी जावे॥
'शिव पाण्डे' ब्योपार खरो ओ क्यों भटकै बिणजारी।
म्हे हा राम नाम बोपारी

***

१४४ भजन-नीयत पापणी

राग-जै जै वन्ती

प्रभु स्यू लो लागी तोडावै नीयत पापणी।
देख लेई पतियार न होवै आपणी॥
राम नाम री मार चाबका सीधे मारग लावो।
हिम्मत राखो और खोटा मत ना हुकम उठावो॥
सुखरी सेजा नई सुवाणर राखणी।
देख लेई पतियार होय न आपणी

हित्यारण हित्या करवावै डिग परी दिन धोळे।
घडो पापरो आ भरवावे हाथा होळे होळे॥
ओरे केणे स्यू लाळा कदई नहीं न्हाखणी

कोठे री होठे केवावे बुद्धी रेवे छळती।
तावडिये सा लेवै तापडा छीया दीई ढळती॥
अेरी खोटी नहीं कमायी चाखणी।
देख लेई पतिया हाय न आपणी
ईनै कठ मिठाई दीया रेवे स्याणी स्याणी।
'शिव पाण्डे' भग्मा भरमी में से रो परखे पाणी॥
ललचाणी जुलमण पीड घणी ह पाकणी।
नीयत पापणी

***

१४५ देश भक्ती का गीत

राग-दशी तोडी

एक पिता ह एक हे माता सबका भारत भारती।
सारी कौमें मिलकर रहती बाते करती प्यार की॥
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई देते शरहद पेहरा।
हर सेनिक सिर बधा हुआ हे आजादी का सेहरा॥
काश्मीर पर आख उठाने वालो को ललकारती।
एक पिता हे एक माता
सब धरमो के फूल चमन में खिलकर यहा मुस्काते।
ज्ञान लुटाने वाले इतिहासो में पूजे जाते॥
नहीं देश पर मरना आता उसे धरा धिकारती।
एक पिता है एक माता
शहीदों की कुरबानी से हिन्द आगन महकाता।
गोरव से उनके गीतो को वच्चा वच्चा है गाता॥
शास्त्री जैसा आजादी का हुआ न कोई साग्थी।
एक पिता है एक माता

तिरगे के तले खडे हो एक ही देते हम नारा।
हर कोमों का एक गगन के नीचे खुलता हे द्वारा॥
नतमस्तक कर शिव हिमालय की रोज उतारे आरती।
एक पिता हे एक माता

***

१४६ भजन-मीरा बाई रो

राग-काफी

अब मुरली सू मोह न छूटै लागी प्रीत कद नई छूटै।
मोहन म्हारो में मोहन री बावरी बसी म्हारी में बसी री सावरी
मीरा राणे ने समजावै हाथ जोड थानै केऊ।
जीआवे बे जतन जावे बाधो बाधी ना रेऊ॥
महला रा भोजन नी भावे सोनो चादी दाय न आवे।
मोहन म्हारो में मोहन री
भूलू तो भूली ना जावै जादूगर री सूरतडी।
रै रै निजरा साम्ही घूमे गवाळीये री मूरतडी।
बसी वट री मैं पिणहारी हरगिज रेय सकू ना न्यारी।
मोहन म्हारो में मोहन री
राणो बोल्यो रीस रिसाकर महला श्याम बुलावो थे।
दूध कटोरे मिसरी घोळर म्हारी निजरा पावो थे॥
मीरा बुलायो श्याम आयो गट गट दूधडलो गटकायो।
मोहन म्हारो मै मोहन
राणो मायड बणा परो कै जनम मरण था तारियो।
मोहन थारो थे मोहन री थे जित्या मैं हरियो॥
'शिव पाण्डे' के बीकानेरी दरशण री हं चाह घणेरी।
मोहन म्हारो में मोहन

***

१४७ भजन-मारग सू मत भटक

राग-पालू

मारग स्यू मत भटक रे भागी भटक्या सू दुख पावेलो।
प्रभु बाधी मरियादा तोड्या सिर धुण धुण पछतावैलो॥
आधी छोड सापती ताक हरि दौना स्यू राखै।
हाथी ने मण कीडी नै कण ससारिक घण न्हाख॥
आदतडी फोडा घालेली सुणलै नियत डिगावैलो।
भटक्या सू दुख पावेला
बन्धा चिन्तै बोत घणे री राम करो सो होवे।
च्यार दिनारै जीणे खातर बीज पाप रा बोवे॥
आस पराई कदी न पूरै पत भ्रष्ठ होजावै लो।
भटक्या सू दुख पावेलो
सबर सुलखणी सतोषीजी धीरज स्यू सो की होवै।
जुलम करोडा सामने आया सिर रै हाथ लगा रोवे॥
मिनख पणे रो मान बढाया देवा सो केवावेलो।
भटक्या सू दुख पावेलो
काढ परो आडम्बर झूठो दे दुनिया नै धोको।
अठे रा अठे भरवासी प्रभु रो काम अनोखो॥
'शिव पाण्डे' के बिना भजन रै बिरथा जनम गमावैलो।
भटक्या सू दुख पावैलो

***

१४८ भजन-निदरा

राग-झझोटी

उडजाए निदरा में जोड केऊ हाथ।
सावरो आवे हे दो करण देए बात॥
रतन कटोरे थन्नै दूध दई पायसू।

गळे गळपटियो ए बोरलो घडायसू॥
हाथा मेदी राचणी तू निरख्ये दिन रात।
सावरो आवे हे दो करण देए बात
सोने रे बाजोट पीळो बेठये ओढ।
घेवर छटवाय देस्यू जीम्ये कर कोड॥
पग्गा में घडा सू पायळ नाच्ये दिन रात।
सावरो आवे हे दो करण दैए बात
प्रभु दरशण विना जूणा काटी लाख।
विरथा जमारो गयो होयो नी मिलाप॥
प्रभु सू मिलण दे जाय मत ए जात।
सावरो आवै हे दो करण देए बात
'शिव पाण्डे' अरज करै सुण ले नी टेर।
रेणो हनमान हथे शहर बीकानेर॥
चोखो वर ब्याय देसू मान लए बात।
सावरो आवै हे दो करण दैए बात

***

१४९ भजन-हरि नाम जप

राग-मिश्र काफी

बधा नाम हरि का जपरे ढूढते नयन गये थक रे
ध्यान लगा कर याद हरि को।
मन से कर फरियाद हरि को॥
घट की आखे खोल के पगले, माया वी माया लखरे।
बधा नाम हरि को

निरभै होजा प्रभु का होकर।
सास सास में मणिका पोकर॥
मोह माया का तोड के बधन सत्य की धूणी तप रे।
बधा नाम हरि को

प्रभु परखते सब का पानी।
अरे चेत मत कर नादानी॥
क्यो न प्रेम का बधन बाधे प्रभु पे तेरा हक रे।
बधा नाम हरि को

सीस कटा ने की है हिम्मत।
हिमत की होती है कीमत॥
मरियादा की नाव बेठ शिव पाण्डे पार उतर रे।
बधा नाम हरि को

***

१५० भजन-जीवन धारा

राग-देशी माड

जीवन धारा बहती जाये कभी नहीं रूक पाई।
दुख भी सुख बन जाता ये है प्रभुजी की प्रभुताई॥
मन में गगा मन में यमुना मन ही मन में न्हारे।
मन मन्दिर बैठे प्रभुजी निरभै दरशन पारे॥
मोहमाया के वशीभूत हो खोद रहा क्यो खाई।
दुख भी सुख बन जाता

मन चचल के कहने से तू मत मरियादा तोड।
लगाम लगाकर राम नाम की सत्य के रस्ते मोड॥

लोक और परलोक भी सुधरे इसमें तेरी भलाई।
दुख भी सुख बन जाता

उलझे जीवन को सुलझाले रहजायेगा धोका।
जश का झडा फहराकर ये करले काम अनोखा॥
प्रभु की माया प्रभु जाने ना समझ किसी के आई।
दुख भी सुख बन जाता

राम नाम की धूनी तपकर अब बन जा मतवाला।
चाबी लगाकर खोलदेगे तेरी किस्मत का ताला॥
गुरु कृपा से 'शिव पाण्डे' है शब्दो में सच्चाई।
दुख भी सुख बन जाता

***

१५१ भजन-ओ जादूगर

राग-झझोटी

ओ जादू चलाने वाले नहीं आता नजर किसी को।
ओ दुनिया चलाने वाले नहीं आता नजर किसी को॥
तेरा नाम बडा ही प्यारा लेना बडा ही मुश्किल।
तूफा में आई किस्ती को खेना बडा ही मुश्किल॥
हिमत ही तेरा इशारा न आता नजर किसी को।
ओ जादू चलाने

राहे भी बडी हे निराली चलना बडा ही मुश्किल।
उन पर बन कर दीपक जलना बडा ही मुश्किल॥
तू एक हम अनेक हें नहीं आता नजर किसी को।
ओ जादू चलाने

तेरे काम सभी हे सच्चे करने वडे ही मुश्किल।
दी सजा के जखम गहरे भरने वडे ही मुश्किल॥
तू हसाता ओर रूलाता नहीं आता नजर किसी को।

ओ जादू चलाने

कोई ढूढे तो कहा ढूढे पाना वडा ही मश्किल।
'शिव पाण्डे' रूठे यार को मनाना वडा ही मुश्किल॥
सच्चे आशिक को मिला नहीं आता नजर किसी को।

ओ जादू चलाने

***

१५२ भजन-हरि सुमिरन कर

राग-खमाच

हरि सुमिरन कर प्रभु सुमिरन कर हरि सुमिरन कर।
राम नाम ही मूल मत्र जो पापो का काटे फदा॥
स्वाश स्वाश रू रू महकाले अनमोल बोल ये बोल।
डूब के प्रेम के दरिया में फिर मनकी आखें खोल॥
मुक्ती का ये एक रास्ता कहते हैं सूरज चन्दा।

राम नाम ही मूल

नेक कमायी करनी भूला जिसपर नहीं पाबन्दी।
च्यार चाँद जीवन लागे प्रभु से कर तू सन्धी॥
इसी नाम से रईदास लाया कठोतरी में गगा।

राम नाम ही मूल

साकार है निराकार पहचान सके पहचान।
दाने दाने पर नाम लिखा फिर देख लगाकर ध्यान॥
इसी नाम से पत्थर तिरगये यह सौदा नहीं मदा।

राम नाम ही मूल

अगनी पवन गगन धरती में प्रभु का पुन्य प्रताप।
ऋषि मुनि सति देई देवता नित उठ करते जाप॥
आना जाना मिटजाये 'शिव पाण्डे' कर यह धन्धा।
राम नाम ही मूल

***

१५३ भजन-सरन पडे की लाज

राग-मिश्र माड

राखो हरी सरन पडे की लाज सत सहायक अति सुख दायक।
सारो सब के ही काज॥ राखो हरी सरन पडे की लाज॥
पिजरे में बठा जा तोता आपने बद किया कहे रोता।
जनम सुधारो अब नहीं भूलू ताजो के सिर ताज॥
राखो हरि सरन पडे
थक गया बदल बदल कर चोला कितनी बार उठा मेरा डोला।
सत्य धर्म की राह दिखाकर पार उतारो जहाज॥
राखो हरि सरन पडे
अवगुन भरे हुवे काया में भेंट चढाने प्रभु आया में।
दिलकी अरदासे सुन खोल द्वार मुक्ती के आज।
गखो हरि सरन पडे
आवागमन मिटे दो परसादी 'शिव पाण्डे' लेकर हो राजी।
भजना से कण कण गुन्जाये समझे दुनिया राज॥
राखो हरि सरन पडे

***

स्वासा की गति क्षण कम होऐ हाथ बढा थेई तारो।।
प्रभुजी भव से पार
साथ गठडिया जश अपजश की बात नहीं अब मेरे वस की।
मागत हू सद बुद्धि बगशो आर ना कोई चारा॥
प्रभुजी भव से पार
तुमरे नगर की कठिन डगरिया भटक रहा ना पाऊ नगरिया।
भवसागर में भवर पडत है डूबू नहीं मजधारो॥
प्रभुजी भव से
दया सिन्धू तुम कोटिक कण में भक्त तारते हो एक क्षण में।
'शिव पाण्डे' के तन मन धन तुम चाहू चरन सहारे॥
प्रभुजी भव से

***

१५७ भजन-चगड़ी

राग-पातू काफी

राम नाम धुन गाए मेरी चगडी राम नाम धुन गाये।
सब को भजन सुनाकर के भक्तों के भाव जगाये॥
जब ये चगडी मीठे स्वर में मित्रो ज्योंही बाजी।
सब धरमो का ग्यान सुनाकर ये करती ह राजी॥
कुदरत की आशीर्वादों स ताडाती नाराजी।
एक बनाया सबको इसने तभी मिली आजादी॥
भेद भाव का भरम मिटाकर सब को अमृत पाये।
राम नाम धुन गाए
सगे समधी ऋषियों को इसने अमृत पाया ह।
खोल पलक बोले ऋषि किसने ये अमृत बरसाया ह॥

भूख प्यास मिटगई हिर्द की ऐसा आनन्द छाया है।
धरती अम्बर चाद सूरज तारो तक को गुनजाया है॥
ये कुदरत की बेटी निस दिन करामात दिखलाये।
राम नाम धुन गाए

ग्रस्ती के दरम्यान बजी तो चीज अनोखी पाई।
धन्धा करना घर का भूले ऐसी धूम मचाई॥
लगन मगन हो लगे नाचनै जसे मीरा बाई।
'शिव पाण्डे' कहता है ये ही प्रभुजी की प्रभुताई॥
होकर के अलमस्त लीन लिखकर के भजन सुनाये।
राम नाम धुन गाए

***

१५८ भजन-बिरथा जीवणो

राग-देसी तोडी

अैडो जीवणो बिरथा जीणो खाकर सोवै रोटडी।
राम भजन बिन सूनी बावळा तन मायली कोटडी॥
सास पावणा कदयक जाणै बाळद बण लदजावे।
देवा रळती मिनख जूण तू बार बार नइ पावे॥
बोली माया सार कोयनी बाता कर स्यो खोटडी।
राम भजन बिन सूनी

पिंजरो होतो जाय पुराणो दिया धधुणी झडसी।
पाप करोडा एक दिन थारे बीछू दाया लडसी॥
झाडो नाइ लाग आगे जम पकडेलो चोटडी।
राम भजन बिन सूनी

चेत बगत हेलो दे कवै जश रो झडो गाड दे।
काया माया ललचाणी मन हरि चरणा पर चाढ दै॥
थोडो थोडो सुमरण कर कै क्योंनी भरलै लोटडी।
राम भजन बिन सूनी
आधे नै आख्या सी जीवन दिन दिन घणो अळूझे।
'शिव पाण्डे' सत सग रो सरणो सुळझ्या सू सुळझै॥
पेडो लम्बो राम नाम री क्योनी बाधे पोटळी।
राम भजन बिन सूनी

***

१५९ भजन-रामदेवजी का

राग-काफी पीलू

बाबा थारी मोहनी मूरत भगता रे मन भावै ओ।
मनसा पूरो यालरया री दोड दोड कर आवै ओ॥
धूप कपूर घीरत रो दिवलो जग मग जोत सवाय।
बाइ सुगना करै आरतो हरजी चवर डुळाय॥
झालर शख नगारा बाजे भगत आरती गावे।
मनसा पूरो यातरया री
सुवाग देर सेठाणी नै बज्या मारवाड रा पीर।
पीरा रा मगवाय कटोरा नेत जिमायी खीर॥
जद सू सगळी जाता दरगा लुळ लुळ धोक लगावै।
मनसा पूरो यातरया री
जिण दुखिया मन ओट राखकर धरलीनो हे धीर।
परचो देकर था पत राखी कचन कियो शरीर॥
सरधा रा दो पुष्प चढाकर फेरी रोज लगावे।
मनसा पूरो यातरया री

डालीबाई रा इष्ठ देवता बिगड्या कारज सारो।
'शिव पाण्डे' लिख भजन सुणावै गुण ना भूलू थारो॥
घर घर माई थारी भगती जै जैकार मनावै।
मनसा पूरो यातख्या री

***

१६० भजन-गुटका राम रसायन

राग-पीलू

गुटका राम रसायन भाई होठा माथे अधर अधर धर।
गट गट लो गटकाई गुटका राम रसायन भाई॥
ई गुटका में सार घणो हे जे कोई ले लेवे।
झझट में उळझ्योडो जीवन चटकै सुळजा देवै॥
पग पग माथे परचो देवै प्रभुजी री प्रभुताई।
गुटका राम रसायन भाई
माथो हथेळी रखवा देवै लेणा घणाई दोरा।
रू रू माया आवे ओळू होवे घणा जि सोरा॥
जनम मरण रा फदा काटै खरच ना लागे पाई।
गुटका राम रसायन भाई
खूटै लूटै नाई गुटका भरियो समद अथाग।
अण गिणती रा तिस्या भगत सै गया किनारे लाग॥
नई लिया तो लेकर देखो चुटक्या खूब जाई।
गुटका राम रसायन भाई
पाप जडा सू काटै लाटै बात एक ना झूठी।
ऊच नीच जिण लीन्हा गुटका बारी होगी छुट्टी॥
शिव पाण्डे निरभे लो गुटका ई रै माय भलाई।
गुटका राम रसायन भाई

***

१६१ भजन-बिगडी बणावो

राग-खमाच माड

म्हारी बिगडी बणावो दीना नाथ सरण पड्यो तारया सरसी।
तारया सरसी पार उतारया सरसी॥
म्हारी बिगडी बणावो दीनानाथ॥
थे पडदै रै ओलै बोलो क्योंनी दरशण देवो।
चरण कमल रो लीयो सरणो अव विन्ती सुण लेवो॥
म्हारी करणी रो काटो देवो काढ।
सरण पड्यो तारया सरसी
दातारी दातार दया कर झोळी भरदो ग्यान स्यू।
मन मिन्दर मे आनद उपजै ध्यान धरु सनमान सू॥
देवो भगती रो मागू वरदान।
सरन पड्यो तारया सरसी
आप राख सो तो पत रेसी ओर न कोई चारो।
निजर पसार पैर्‌य देख्यो दुनिया रो बिगड्यो धारो॥
म्हारो हेलो झरोखे झेलो।
सरन पड्यो तारया सरसी
लालच में आ काटा बोया चुभरया अब पछताऊ।
'शिव पाण्डे' कै हे परमेश्वर अब ना धोको खाऊ॥
जाण आपरो करो उपकार।
सरन पडयो तारया सरसी

***

१६२ भजन-सूवे ने पाठ पढाय दै

राग-काफी

सूवै नै पाठ पढाय दै रे राम नाम नहीं भूलै।
भवरे ने मत्र सुणादे रे श्याम नाम नहीं भूलै॥
ई करनी स्यू छूटै कोनी पिजरे आणो जाणो।
बुद्धि कीया काम करै तू इसो ई खावे दाणो॥
दाणे पर नाव लिखोडो रे।

राम राम क्यों भूलै

खुद री छोड पराई खोसे छाण नी पीवे पाणी।
मनडो मेलो तनडो उजळो मीठी बोले बाणी॥
पाणी रो एक बुल बुलो रे।

श्याम नाम क्यों भूले।

कुदरत लिछमण रेखा बाधी जाण बूझ कै तोडै।
रावण बण सत सीता नै ले दौड कठै तक दौडे॥
के किसे लोक में लुकसी रे।

राम नाम क्यों भूलै।

पिजरै बडतो ओर निसरतो उडतो उडतो थकग्यो।
'शिव पाण्डे' सुख सरण राम री लेलीनो बो लखग्यो॥
मुगती रै मारग उडलै रे।

राम नाम क्यो भूलै।

***

१६३ भजन-लावो लेय ले रे।

राग-देश माड

लावो लेय लै भजन रो लेय लै रे।
एकर राम नाम मुखडै सू कैय लै रे॥
इयै नाम स्यू इयै काम सू कोइ न ऊची सगती।

दया धरम हिडदै में राखो सफल होयसी भगती॥
राम नाम चम्पू स्यू नइया खैय लै रे।
लावो लेय लै भजन रो
घर फूक तमाशो देखणियो बिरलो ही होवै है।
खून पसिनै खीरा रोटी सेक खाय बो सोवै है॥
दुख सुख हाथा सू घडियोडा सैय लै रे।
लावो लेय लै भजन रो
दूजै रो मन दुखा परो अर होणो चावै न्याल।
जद खुद रै तन माथै लागे कीया आवै ख्याल॥
कद बुझ जावै दिवलो ध्यान देय लै रे।
लावो लेय लै भजन रो
हीरो जलम नियत चालणी मती काकरा छाण।
'शिव पाण्डे' कै बीकानेरी मन री मन में जाण॥
अब ही सीधे खीधे मारग बेय लै रे।
लावो लेय लै भजन रो

***

१६४ भजन-नइया लगाना पार

राग-भैरवी

नाथ मेरी नईया लगाना पार ये सागर ससार।
पग पग जाल बिछा माया का।
नहीं भरोसा इस काया का॥
कब पछी पिजरे से उडले रहजाऊ मझधार।
नाथ मेरी नईया लगाना

नाम आपका कभी ना भूलू।
चाए सुख झूलो में झूलू॥
में दीपक हू कब बुज जाऊ, तूफानो से हार।
नाथ मेरी नईया लगाना

जिस जुबान पर नाम आपका।
उस हिर्दय में धाम आपका॥
प्रेम की पूजा प्रेम मे करता, करलेना म्वीकार।
नाथ मेरी नईया लगाना

हे आनन्द कद परमेश्वर।
'शिव पाण्डे' को ग्यान दो कर धर॥
मन की बीना के तारो पर गाकर बाटू प्यार।
नाथ मेरी नईया लगाना

***

१६५ तालरिया मगरिया रे बाई थारा लारे रेया

राग-तालरिया

आवणिया जावणिया रे रामदे नै के दी जो।
बेगा लेवण ने आय सुगना जोवै बाटडली॥
जीवणो दुरलभ होय गयो अब रोटी लागै जैर।
सासू सुसरो नणदल काढै किसे जलम री बैर॥
बरसाई राखी रे बीरा मती छातडली।
बेगा लेवण नै आय

पुगळ गढ परणायर मायड म्हारा फोड्या भाग।
मिलणे रा सासा पड्या में खडी उडावू काग॥
केनै केऊ रे दुख सुख री बातडली।
बेगा लेवण नै आय

चरण धुवावो तो सरी धजाबद आवो तो सरी।

फेरू ले अवातार रामदे

भादूडे री दूज रा देवा सूरज बण कर ऊग्या।
म्हारि लाज सो थारि लाज हे बिसूवू बिसवा पूग्या॥
प्रीत निभावोतो सरी बाबा आवो तो सरी।

फेरू ले अवतार रामदे

दियो आसरो बुझ नी जावै जोयो दरसण ताई।
''शिव पाण्डे'' रो ध्यान मान है था चरणा रै माई॥
आप पधारो तो सरी पीरजी आवोतो सरी।

फेरू ले अवतार रामदे

***

१६८ भजन-आवड़ियो

राग-पील काफी

था बिन घडी ना आवडे प्रभु आवडियो घडवादो जी।
थारै नाम रा मोती म्हारै अग अग में जडवादो जी॥
रूप आपरो होवे बीमे धनुष बाण हो हाथा।
चाये मुरली धारण बाश री मन रैस्यू बिलमाता॥
लीलाडा पर नाव आपरो लकीरा पडवावो जी।

आवडियो घडवादो जी

आरतडो हित चित सू करस्यू चित चरणामत लेसी।
लगन मगन होकर के नीयत धूप ध्यान सू खेसी॥

नेण निरखसी किरपा कर नेणा सम्ही खडवावो जी।

आवडियो घडवादो जी

होसी धरम करम री हाणी सपने में नई जाणी।
जैर घोळ री है इमरत में नित मिनखा री बाणी॥
धोक लगा कू आरै चितडै सद बुद्धी चढवावो जी।

आवडियो घडवादो

मोठा सागै घुण पीसी जै दो पाटा रै माया।
कोइ बैठणो चावै कोनी धरम धजा री छाया॥
"शिव पाण्डे" था चरणा स्यू किस्मत नै अडवावो जी।

आवडियो घडवादो

***

१६९ नैणा रा लोभी कींकर आऊ रे

राग-नैणा

सावरिया सुध अेकर लेवो जी, दातारी दरसण अेकर देवो जी
नैण निरख सी आरती करसू।
थारो थारो अरपण करसू॥
सास सास री छीया में जोऊ बाट।

दातारी दरसण अेकर देवोजी।

भगती अग अग में राची।
लिख भेजू प्रभु लेवो बाची॥
म्हारा अवगुण सगळा देवो काट।

सावरिया सुध अेकर लेवो जी

चरण कमल पर मन अरपण है।
मेलो म्हारो नई दरपण है॥
मन भगती रा लागै ठाठ बाठ।
सावरिया सुध अेकर लेवो जी
'शिव पाण्डे' री दोड आप तक।
पर आगळया सू हो ना नख॥
जैर आप पावो किया जाऊ नाट।
प्रभुजी दरसाण अेकर देवो जी
***

१७० भजन-रामदेवजी का

राग-भूप

बाबो पग पग परचा देवै रे देवै रे,
नेतल रा भरतार रूणिचै में रेवे रे
कोई आपने सत बतावे कोइ बतावै पीर।
सभी धरम चोळे में चमकै बाइ सुगनारा बीर॥
डूबी झाझडल्या ने खेवे रे
नेतल रा भरतार रूणिचै में रेवे रे
राख सीरणी कोई धोके धर कर के परसाद।
छप्पन भोजन में बाबे नै आवै एकसो स्वाद॥
सुख दुख फेरी देता केवै रे।
अजमलजी रा लाल रूणिचै में रेवै रे।
अरदासा कर आसू न्हाखे दरगा आगे लोक।
खाली झोल्या भरै प्रेम सू कोई रोक न टोक॥
काकड आण आपरी बेव र।
मेणादे रो लाल रूणिचे में रेवे रे

हाथ जोडता पाळा पोचे बणकर ताबे दार।
''शिव पाण्डे'' बाबेरी महिमा सुणो सुणावे गार॥
सिवरया मन स्यू दरसण देवै रे।
लीले रा असवार रूणिचे में रेवे रे

***

१७१ भजन-राम नाम की नाव बैठकर

राग-देशी भैरवी

राम नाम की नाव बेठ के भव से होजा पार।
जीवन बहता एक बुलबुला बाट सभी को प्यार॥
तन मन भक्ती से महकाले त्याग तपस्या करले।
नेक कमाई कर झोली में असली मोती भर ले।।
राम नाम का दे दुनिया को तू मुख से उपहार।
जीवन बहता एक
दया धरम का लगा बगीचा सींच प्रेम का पानी।
मानव मन में आनद उपजे क्यों करता नादानी॥
यही हे मोका खाकर धोका मत ना जाना हार।
जीवन बहता एक
माया मन पर जाल बिछा कर मेली करती बुद्धि।
परमेश्वर की दया दृष्टि से ही होती हे सुद्धि॥
गर सब कुछ भक्ती मे झोके खुले मुक्ती के द्वार।
जीवन बहता एक
कलयुग नहीं है कर युग है करना कर से करले।
पावन प्रेम पुजारी बन कर भव से पार उतरले॥
''शिव पाण्डे'' प्रभु तब रीझेंगे क्रोध का कवच उतार।
जीवन बहता एक

***

१७२ भजन-याद प्रभु नै कर रे

राग-मिश्र माड

सभळ सभळ पग धर रे भाई सभळ सभळ पग धर रे।
दुनिया में आयो हे तो कीं याद प्रभु नें कर रे॥
तू परदेशी मैं परदेशी ओ जग हे परदेश।
हर प्राणी आवे अर जावै बदल बदल कर भेश॥
ओ थारो ना गाव मुसाफिर ओ थारो ना घर रे।
दुनिया में आयो है तो कीं
मिनख पणे नै मती लजाए दुख में जीते जीरे।
लुख्खी सुख्खी खार सबर कर ठडो पाणी पीरे॥
बण दातार गरीबा री तू खाली झोली भर रे।
दुनिया में आयो है तो कीं
मरते दम तक आण न तोड्ये प्रभु राखसी शान।
आच साच ने आवै कोनी जे करसी गुणगान॥
थारी म्हारी छोड परो सिर पाप उठातो डर रे।
दुनिया में आयो है तो कीं
भजन करया मू छूट जायसी चोरासी री फेरी।
बगत हाथ स्यू निसर रेयो शिव पाण्डे बीकानेरी॥
हिमत रो हथियार राख कर मौत मरद री मर रे।
दुनिया में आयो हे तो कीं

***

१४३ भजन-रामदेवजी का

राग-काफी

सरणे आया सो कीं टूठो हेलै रै हाजर दुख लूटो।
मेणा देरा लाल आपनै घणी खम्मा। आपनै घणी खम्मा॥
भादूडे री दूज नाळ मे भगत करे मिल सेवा।

बोल बोलवा मन सू चरणा धोक लगावे देवा॥
जागण माई महिमा गावे पेरा कर गळ माल।
आपने घणी खम्मा आपने
भोर गूघटो खोलै पग पग जेकारा ही होवे।
से रै हाथा धजा सगरी सरू यातरा होवै॥
देई देवता खोलपरा मिन्दरा रा देखे द्वार।
आपने घणी खम्मा आपने
तपा तावडो जाचो सैनै कुण कुण मन सू आवे।
खोटी नीयत आळा मे सू पाछा ही मुड जावै॥
चमतकार नै नमस्कार दरगा पर भीड अपार।
आपनै घणी खम्मा आपनै
थकजावे पग फाला होवे हार परो दे हेलो।
तोल भावना झटपट दरगा बैठया हेलो झेलो॥
"शिव पाण्डे" लिख महिमा गावै मन में हरख अपार।
आपनै घणी खम्मा आपने

***

१७४ भजन-बोले मेरे राम

राग-झझोटी

ध्यान लगा कर देखो हर घट बोले मेरे राम।
प्रेम के जल से राम चरन को धोले मेरे राम॥
उन नयनो को दरशन होगे जो ना भूले पल।
जिन भक्तों को बचन दिये हरगिज न सकते टल॥
अपने हाथो द्वार मन्दिर के खोलो मेरे राम।
ध्यान लगा कर देखो

उन कानो के भाग्य बडे हे जो प्रभु महिमा सुनते।
उस मुख पर हरि आप विराजे आशिक है इस धुन के॥
चाये सृष्टी तूफानो से डोले मेरे राम।

ध्यान लगाकर देखो

उन हाथो की शान निराली प्रभु की पूजा करते।
गले लगा गिरतो को थामे आशिक होकर मरते॥
पाप धरम को एक तराजू तोले मेरे राम।

ध्यान लगा कर देखो

जिन पावो का क्या कहना निज चलकर पहुचे द्वार।
चाए जमाना जोर लगाले होना सकती हार॥
''शिव पाण्डे'' भक्ती धागा मन पोले मेरे राम।

ध्यान लगाकर देखो

***

१७५ दरशण देवो सावरा

राग-खमाच

एकर एकर दरशण आकर देवो सावरा।
म्हे तो पुजारी सवरा थारे नावरा॥
आडम्बर करूतो दाता आवै जी सरम।
मरियादा रै माय रेणो मिनख रो धरम॥
मोती सो पाणी लाखीणो उतरै सावरा।

म्हे तो रे पुजारी सवरा

बुरो जे बिचारू मन में धरती धिसके।
सत्य वादी आभो केवे मनडो सिसके॥
इस्यू मोटो पाप काई ओर सावरा।

म्हे तो रे पुजारी सवरा

देखापै री माळा कूई कर नी सके।
आछी करणी आळो बात मायली लखे॥
दुष्टा नै ठिकाणै थे लगाओ सावरा।
म्हे तो रे पुजारी सवरा

भगती री फळ सोरे सास नी मिले।
"शिव पाण्डे" ईया सुरगा वास नी मिलै॥
मरूधर आयर बसरी बजाओ सावरा।
म्हे तो रे पुजारी सवरा

***

१७६ लोक गीत

राग-तावडा धीमो पडजा रे

अजमल जोवै बाट मारगा कद पावणिया आय,
मारगा कद पावणि आय
समदर सूत्या छोड द्वार का पगे उबाणा धाय॥
जद सोने रो थाळ दूसरो मेणा महल बजायो।
एक लाल स्यू दो होया सुण गाव देखवा आयो॥
कू कू आगण मड्या पगलिया सगळा धोक लगाय।
समदर सूत्या छोड

सूरज हाथा गगा झारी किण पूज पग धोवै।
भादूडे री रात दूज रा घर घर दिवलो जोवै॥
पाचू नोबत आभै बाज्या तारा चवर ढुळाय।
समदर सूत्या छोड

मारवाड रा भाग पुरबला जुगा जुगा स्यू जाग्या॥
धोरा धरती बाळ पणे में परचा देवण लाग्या॥
बिणजारे री मिसरी बाळद दीनो लूण बणाय।

समदर सूत्या छोड

अणगिणती रा भगत ओट ले पैदल फेरी बोलै।
बीकाणे स्यू टुरै सग भक्ता री भगती तोलै॥
"शिव पाण्डे" बाबे री महिमा हरख कोड कर गाय।

समदर सूत्या छोड

***

१७७ भजन-सावरे री मुरली

राग-खमाच

सावरे री मुरली मन हरलीयो।
सुरिले सुरा रो रस म्हारे कानी पियो॥
आज नहीं काल पावणा आप धेरै आसी।
पापी अभागो म्हारो जलम सुधर जासी॥
सपने में आर विश्वास रात दीयो।

सावरे री मुरली मन हर लीयो

श्याम श्याम श्याम गीत मनडै रै माय गाऊ।
हिवडै रो हार किया दूजै नै बताऊ॥
धू लीयो नाम मुख अमर कर दीयो।

सावरे री मुरली मन हर लीयो

ओई नाम म्हारोडै काळजे री कोर है।
जीवन री आपरै हाथा रै मायी डोर है॥

मीरा विश्वास राख मन जहर पीयो।
सावरे री मुरली मन हर लीयो
फूक फूक पग धरणो ईये मेइ सार है।
नगदी देवो लेवो नहीं राखणो उधार है॥
''शिव पाण्डे'' अठै रो अठेई मिलसी कीयो।
सुरिले सुरा री रस म्हारै

***

१७८ भजन-झोली भरदो मा

द्वारे आया नजर महर की करदो मेरी मा।
ना धन मागू ग्यान से झोली भरदो मेरी मा॥
धरम धजा फहराये चरनो नमन हिमाल करता।
भारत का हर बच्चा बच्चा ध्यान तुम्हारा धरता॥
सबके दिल मे देश भावना भरदो मेरी मा।
द्वारे आया नजर महर की
दुष्ट मारकर भक्त उबारे माया बडी निराली।
जिन नयनो से ममता बरसे ओ मा शेरा वाली॥
हम पापो से परे रहे वो वर दो मेरी मा।
द्वारे आया नजर महर की
राई को परवत कर के परवत को कीया राई।
वेष्णु भक्त को परचा दे वेष्णु देवी कहलाई॥
भटके ना राहों पे उजाला करदौ मेरी मा।
द्वारे आया नजर महर की
सींग पे चढ पाहडो में प्रगटी कहते पाहडों वाली।

मारवाड र
धोरा धरत
बिणजारे र

अणगिणर्त
बीकाणै स्र
"शिव पाप

सावरे री म्
सुरिले सुरा
आज नहीं
पापी अभा
सपने में अ

श्याम श्य
हिवडे रो
धू लीयो

ओई नाम
जीवन री

१८० भजन-दूर जावो मती

राग-भूप

प्रभु दूर दूर ईता दूर जावो मती।
दरसण देवो नेणा ने तरसावो मती॥
मन मिन्दर मेलो नी म्होरा भगती साबण सू धोयो।
धोक लगाकर चरणा सूरत आगे दिवलो हे जोयो॥
मिनख जूण दै घोडै जू भगावो मती।
दरशण देवो नेणा नै तरसावो मती
थेइ उगतडा चाद अर सूरज हो नेणारा उजियारा
देख लेवो पितियार परा प्रणा सू लागो हो प्यारा
थे छाने छाने बसरी बजाओ मती।
दरशण देवो नेणा नै तरसाओ मती
तीन तिलोकी मू देखायर माता ने करदी राजी।
जनम जनम रो चाकर पूछे म्हासू काई नाराजी॥
हाथी रा सा दातडला दिखावो मती।
दरशण देवो नेणा ने तरसाओ मती
पाप धरम नै तोलण आळा इतो काम तो कीया।
''शिव पाण्डे'' नै जहर हाथ सू मीरा दाई दीया॥
झूठा देर दिलासा अब हरसावो मती।
दरशण देवो नेणा नै तरसावो मती

***

१८१ भजन-राम नाव खेसी

राग-भैरवी

राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी।
नइतो किया पाप अधबिच में डुबो देसी॥
भूखे रो राम नाम ही अधार हे।

जोत में तेरी करामत कहते है जोता अे वाली॥
''शिव पाण्डे'' कोटि करे नमन दुख हरलो मेरी मा।
द्वारे आया नजर महर की

***

१७९ रामजी आवलै

भाइरे आज नई तो काल रामजी आवेला।
पलमे बचन दियोडा ले अवतार निभावेला॥
धरती मा आरतडो करसी आभो मगळ गासी।
कू कू आगण पग मडसी कुदरत गार बधासी॥
घर घर में आनन्द गे इमरत घोळर पावैला।
भाइरे आज नहीं तो काल
में नइ केऊ वेद बतावै माय लिख्योडी काणी।
आकर करमी दूध दूध न्यारो पाणी रो पाणी॥
दुष्टा सागे खुल्ली बै रणभेरी गावेला।
भाईरे आज नहीं तो काल
दातारी री माया कोई लख्यो नई लख पासी।
जुम्या नै गोडा लकडी दे नाक धरा रगडासी॥
आछी करणी आळा निरभै दरशण पावैला।
भाइरे आज नही तो काल
''शिव पाण्डे'' के मिनख पणा तू भजन राम रा कर रे।
काळ घूमरयो है सिर ऊपर अवसर मती बिसर रे॥
थारा करियोडा थन्नै ही नाच नचावैला।
भाइरे आज नही तो काल

***

नाव आपका कभी न भूलू।
चाऐ सुख झूलों में झूलू॥
में दीपक हू कब बुझ जाऊ तूफानो से हार।
प्रभुजी मेरी नईया

जिस जुबान पर नाम आपका।
उस हिर्दय में धाम आपका॥
प्रेम की पूजा प्रेम से करता कर लेना स्वीकार।
प्रभुजी मेरी नईया

हे आनन्द कद परमेश्वर।
'शिव' को ग्यान ध्यान दो कर धर॥
मन की बीणा के तारो पर सब को पाऊ प्यार।
प्रभुजी मेरी नईया

***

१८३ गीत-अकाल की आधी

राग-खमाच

अकाल की आधी अैसी चली जिससे हम टकराये।
छूटे घर देखे अब किस्मत कहा कहा लेजाये॥
फूल बने राहो के काटे शरपे दुखका साया।
छाले पड गये चलते चलते कदम न जाये उठाया॥
पत्थराई आखों को कोयी राह नजर नहीं आये।
छूटे घर देखे

तन पर न कपडा भूखे बच्चे थक कर बैठे रोये।
रोटी माग रहे खाने को आसू से मू धोये॥
माँ की ममता आसू बहाए धीरज कोन बधाये।
छूटे घर देखे

हरयो ले नाम करै भव सू पार है॥
मनडे सू लेर देख काई कम बेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
राम नाम गगा घट माय न्हायले।
लुख्खी सुख्खी परसादी समझ पायलै॥
चवडे मत कर आ कमाई सागै रेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
दान पुन कीयोडो अैळो नी जावै।
नई रै बराबर हे देय के गिणावै॥
इयै हाथ देसी तो बीये हाथ लेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
राम नाम चिरणामत जाण लेय ले।
हिवडै हरख उपजे मनडै सू केयले॥
"शिव पाण्डे" बोइ तिरसी तातो ठडो सेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
***

१८२ भजन-नईया लगावो पार

राग-देशा सारग

प्रभुजी मेरी नईया लगाओ पार, ये सागर हे ससार
पग पग जाल बिछा माया का
नहीं भरोसा इस काया का
पछी तोड पिजरा कब उडले, रहजाऊ मजधार।
प्रभुजी मेरी नईया

नाव आपका कभी न भूलू।
चाऐ सुख झूलों में झूलू॥
मैं दीपक हू कब बुझ जाऊ तूफानो से हार।
प्रभुजी मेरी नईया

जिस जुबान पर नाम आपका।
उस हिर्दय में धाम आपका॥
प्रेम की पूजा प्रेम से करता कर लेना स्वीकार।
प्रभुजी मेरी नईया

हे आनन्द कद परमेश्वर।
'शिव' को ग्यान ध्यान दो कर धर॥
मन की बीणा के तारो पर सब को पाऊ प्यार।
प्रभुजी मेरी नईया

***

१८३ गीत-अकाल की आधी

राग-खमाच

अकाल की आधी अैसी चली जिससे हम टकराये।
छूटे घर देखे अब किस्मत कहा कहा लेजाये॥
फूल बने राहो के काटे शरपे दुखका साया।
छाले पड गये चलते चलते कदम न जाये उठाया॥
पत्थराई आखों को कोयी राह नजर नहीं आये।
छूटे घर देखे

तन पर न कपडा भूखे बच्चे थक कर बैठे रोये।
रोटी माग रहे खाने को आसू से मू धोये॥
माँ की ममता आसू बहाए धीरज कोन बधाये।
छूटे घर देखे

हर्यो लै नाम करे भव सू पार है॥
मनडे सू लेर देख काई कम बेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
राम नाम गगा घट माय न्हायले।
लुख्खी सुख्खी परसादी समझ पायलै॥
चवडै मत कर आ कमाई सागै रेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
दान पुन कीयोडो अैळो नी जावै।
नई रै बराबर हे देय के गिणावै॥
इयै हाथ देसी तो बीये हाथ लेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
राम नाम चिरणामत जाण लेय ले।
हिवडै हरख उपजै मनडे सू केयलै॥
''शिव पाण्डे'' बोइ तिरसी ताती ठडो मेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
***

१८२ भजन-नईया लगावो पार

राग-देशी सारग

प्रभुजी मेरी नईया लगाओ पार, ये सागर है ससार
पग पग जाल बिछा माया का
नहीं भरोसा इस काया का
पछी तोड पिंजरा कब उडले, रह्जाऊ मजधार।
प्रभुजी मेरी नईया

नाव आपका कभी न भूलू।
चाऐ सुख झूलों में झूलू॥
मैं दीपक हू कब बुझ जाऊ तूफानो से हार।
प्रभुजी मेरी नईया

जिस जुबान पर नाम आपका।
उस हिर्दय में धाम आपका॥
प्रेम की पूजा प्रेम से करता कर लेना स्वीकार।
प्रभुजी मेरी नईया

हे आनन्द कद परमेश्वर।
'शिव' को ग्यान ध्यान दो कर धर॥
मन की बीणा के तारो पर सब को पाऊ प्यार।
प्रभुजी मेरी नईया

***

१८३ गीत–अकाल की आधी

राग–खमाच

अकाल की आधी अैसी चली जिससे हम टकराये।
छूटे घर देखे अब किस्मत कहा कहा लेजाये॥
फूल बने राहो के काटे शरपे दुखका साया।
छाले पड गये चलते चलते कदम न जाये उठाया॥
पत्थराई आखों को कोयी राह नजर नहीं आये।
छूटे घर देखे

तन पर न कपडा भूखे बच्चे थक कर बेठे रोये।
रोटी माग रहे खाने को आसू से मू धोये॥
माँ की ममता आसू बहाए धीरज कोन बधाये।
छूटे घर देखे

हरयो लै नाम करे भव सू पार हे॥
मनडे सू लेर देख काई कम बेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
राम नाम गगा घट माय न्हायले।
लुख्खो सुख्खो परसादी समझ पायले॥
चवडे मत कर आ कमाई सागे रेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
दान पुन कीयोडो अैळो नी जावै।
नई रे बराबर हे देय के गिणावै॥
इयै हाथ देसी तो बीये हाथ लेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
राम नाम चिरणामत जाण लेय ले।
हिवडै हरख उपजै मनडै सू केयलै॥
"शिव पाण्डे" बोइ तिरसी तातो ठडो सेसी।
राम नाम लेसी तो राम नाव खेसी
***

१८२ भजन-नईया लगावो पार

राग-देशी सारग

प्रभुजी मेरी नईया लगाओ पार, ये सागर ह ससार
पग पग जाल बिछा माया का
नहीं भरोसा इस काया का
पछी तोड पिजरा कब उडले, रहजाऊ मजधार।
प्रभुजी मेरी नईया

नाव आपका कभी न भूलू।
चाऐ सुख झूलों में झूलू॥
में दीपक हू कब बुझ जाऊ तूफानो से हार।
प्रभुजी मेरी नईया

जिस जुबान पर नाम आपका।
उस हिर्दय में धाम आपका॥
प्रेम की पूजा प्रेम से करता कर लेना स्वीकार।
प्रभुजी मेरी नईया

हे आनन्द कद परमेश्वर।
'शिव' को ग्यान ध्यान दो कर धर॥
मन की बीणा के तारो पर सब को पाऊ प्यार।
प्रभुजी मेरी नईया

***

१८३ गीत-अकाल की आधी

राग-खमाच

अकाल की आधी अैसी चली जिससे हम टकराये।
छूटे घर देखे अब किस्मत कहा कहा लेजाये॥
फूल बने राहो के काटे शरपे दुखका साया।
छाले पड गये चलते चलते कदम न जाये उठाया॥
पत्थराई आखों को कोयी राह नजर नहीं आये।
छूटे घर देखे

तन पर न कपडा भूखे बच्चे थक कर बेठे रोये।
रोटी माग रहे खाने को आसू से मू धोये॥
माँ की ममता आसू बहाए धीरज कोन बधाये।
छूटे घर देखे

देके सहारा हमको कोयी लाखो दुआए लेवे।
और दुआवों के बदले मे रोटी कपडा देवे॥
"शिव पाण्डे" इन्सान वही जो गिरते हुवे को उठाये।
छूटे घर देखे

***

१८४ माताजी की स्तुति

राग-आजा तुझको पुकारे मेरा प्यार

मइया तुज को पुकारे तेरे लाडले दरशन दिखादो आये द्वार।
सृष्टी ग्चानेवाली साज सवेरे खिलती धूप तुम्हीं हो।
इस आगन मे फूल खिले सबका रूप तुम्हीं हो॥
सच्चा हे तेरा दरबार।
मइया दरशन दिखादो आए द्वार।
भोले शकर की रानी भक्तो के सारे दुख हरती तुम्हीं हो
दूध पिलाकर गोद खिलाती वो धरती तुम्हीं हो
पावन गगा सा देती प्यार।
मइया दरशन दिखादो आए द्वार।
हाथ हजार तेरे ऋषि मुनियो के हिर्द ध्यान तुम्हीं हो।
सागर उठती लहरे सारे वेदो मे मइया सार तुम्हीं हो॥
महिमा जो तेरी हे अपार।
मइया दरशन दिखादो आए द्वार।
ममता बरसाने वाली दया मुक्ती का एक द्वार तुम्हीं हो।
भटक ना जाए भारत नइया की मइया पतवार तुम्हीं हो।।
'शिव' को है तेरा ही आधार।
मइया दरशन दिखादो आए द्वार।

***

१८५ रामजी आवेला

राग-देशी खमाच

भाइरे आज नई तो काल रामजी जी आवला।
पल में बचन दियोडा ले अवतार निभावैला।।
धरती मा आरतडो करसी आभो मगल गासी।
कू कू आगणियै पग मडसी मनडो यू हरसासी॥
घर-घर मे मिलकर आनद री जोत जगावैला।
भाइरे आज नई तो काल रामजी
राम राज मुडकर के आसी आ वेदा री बाणी।
दूध-दूध हाथा स्यू करसी बे पाणी रो पाणी।।
कळजुग कापेलो वा चमतकार बतावैल।
पल में बचन दियोडा ले अवतार
परमेसर री माया नै अन्दुणी आख्या देखो।
मरियादा रे उपर ऐ जुगती स्यू रोटी सेको॥
आछी करणी आळा बारा दसरण पावेला।
पल में बचन दियोडा ले अवतार
''शिव पाण्डे'' के प्रीत पाळसी बोई भव सू तरसी।
कुण बेटो कुण बाप भाईडा मोत आपरी मरसी॥
भगती करियोडी कदी ना निसफळ जावेला।
पल में बचन दियोडा ले अवतार

***

१८६ भजन हेलो सुणलो

राग-पीलू बरवा

थे सुणलो हेलो देऊ हाथ जोड कर कऊ।
शरने आयो हू लाज राखो म्हारी राम॥
कोड कर पारा नेण निरख सी मत ना देर लगावो

ढोला दमकारे पग धरता गठजोडै स्यू आवो
पग गगा जळ सू धोसू अम्बर दिवलो जोस्यू।
सरने आयो हू लाज

ओळूडी अरदास करै थे तारा बिचला तारा।
नैणा री जोती मोती हो प्राणा स्यू भी प्यारा॥
में अरग रोज देऊ अगरबत्ति खेऊ।
सरने आयो हू लाज

खेजडलै रे हिडो माडा सू हीन्डा ठडी छीया।
झड मड छाछ बिलो कर हाजर रेसू माखण लीया॥
चूरमो चुराय सू पालर पाणी पायस्यू।
सरने आयो हू लाज

धोरा धोळी बिछी चानणी चमके रास सवाया।
बजा परा मुरली भगता नै सवरा इमरत पाया॥
ओ जलम सुधर जामी जम री टळजासी फामी।
सरने आयो हू लाज

***

१८७ भजन-मुरली

राग-देश

मन हरलिया म्हारो मुरली बजार।
अबै छोडू छुटे कोनी सावरे सू प्यार

बरसाई प्रीत राखी हिवडै माई पाळ।
उठ परी समदर दाई लियो है उछाळ॥
लोग केवे माखण चोर में कू साठकार।
अबे छोडू छुटे कोनी सावरै सू प्यार

लगन मगन होयर उठी भगती री लैहर।
दोय दिनारो जीवणो केस्यू राखू बेर॥
तिरलोकी रो नाथ बणग्यो हिवडे रो हार।
अबे छोडू छुटै कोनी सावँरै सू प्यार
मनडै में बसार मूरत होय गयो न्याल।
देकर भगती आपरी कियो हे मालो माल॥
चायै दुनिया रूठै नहीं रूठे किरतार।
अबे छोडू छुटै कोनी सावँरै सू प्यार
"शिव पाण्डे" चरण सरण केवै हाथ जोड।
घडी नी बिसारू देवो चरणा माय ठोड॥
श्याम श्याम कैयर दिन रैयो हू गुजार।
अबे छोडू छुटै कोनी सावँरै सू प्यार
***

१८८ भजन-रामदेवजी का

राग-भूप

बाबा ओ म्हाने दरशण देवो म्हारी करो सुणाई ओ।
चाद सूरज जामे में चमकै दरगा धजा फरूकै।
ध्यान धूप स्यू करा आरती बीरमदे रा भाई ओ।
म्हारी करो सुणाई
अजमल जी बचन देय कै कू कू पगल्या आया।
म्हारै आगण आओ पावणा बाँटाँ आनन्द बधाई ओ।
म्हारी करो सुणाई
रत्तने रै हेले हाजर हो राखी बाई री लाजडली।
म्हारी भी लाजडली राखो अरज आपरे ताई ओ।।
म्हारी करो सुणाई

दुखिया नै सुखिया करदीना कळा जोत में खेलै।
म्हारी लाज सो थारी लाज है धन धणिया चतराई ओ॥
म्हारी करो सुणाई
कळजुग कापै नाव गाव सू अैडो सोणो रूप है।
शिव पाण्डे भजना मे गावै प्यासो ना कोइ भूप है॥
सकळाई धोरा पर तपरी धोकै मरद लुगाई ओ।
म्हारी करो सुणाई

***

१८९ नमन करु

नमन करू माँ सुरमती गुरु चरणा दै धोक।
शिव पाण्डे जग माय द्यो जसरो झडो रोप॥
रिद्ध सिद्ध रा दातार गजानद किरपा कीजो।
ग्यान मान जप तप सद बुद्धि देतायी रीजो॥
मात-पिता धरती आभै री छत्तर छीया।
शिव पाण्डे भव तिरजावै आसी सा लीया॥
मिसरी जेडा बोलो दुनिया देसी आदर।
सोवोइ ताण मसोड राम नाम री चादर॥
मकळप लीनो हाथ हरि पूरो करवासी।
शिव पाण्डे कटजासी जनम मरण री फासी॥
निसरै बगत हाथ सू आछी करणी करल।
नेम धरम री नाव बेठ भव पार उतरलै॥
पार उतरसी शिव पाण्डे मन बस कर राखो।
लोगा री देखा देखी कर झूठ न भाखो॥

लालच रे दिरियाव मे डूब्यो जावै देश।
ठोकर खा सभळे नयी हसलो बदलै भेष॥
दिनुगे सिनज्या जिकै घरा टोकरया बाजे।
शिव पाण्डे कै बॉ सिर दुख कदी नी गाजे॥
किरतब सू डिगवाय दे इसो मती धन धार।
हरि मिनखा पण माग्यो मतीना लाजा मार॥

***

१९० शिव री सीख

राम रटेलो बो नर निरभै चढसी सिख्खर।
शिव पाण्डे के किया माजनो जासी बिख्खर॥
मित्र घात मत करजै करया थारो दम घुटसी।
लेर गधेरी जूण अकूडया माथे लुटसी॥
हीरै सरिसो जलम हाथ सू मत जावण दै।
मन गडक नै अरे गदगी मत खावण दे॥
जूण सुलखणी देव सी होय सकै नी होड।
आळस नरग लेजायसी सुरग मिले न ठोड॥
पैला रावण अेक हो अब होगया अनेक।
शिव पाण्डे बण भिभिषण डरमत रोटी सेक॥
साची बात किया सगळा नै लागै दोरी।
राम रटण दे नई रडारण जीभ चटोरी॥
मरियादा रा बोल हराया स्यू कद हारे।
मन स्यू दे आसीस राम अहिल्या नै तारै॥
आभो भरै गवायी कुण कै मारी ठोकर।

राम चरित रा मिन्तर श्राप उतार्‍यो धोकर।।
मरियादा तोडर खुद खातर खोदै खाई।
लिछमण रेखा लाघ परी सीता पछताई॥
मिनख बोइ सो मरियादा रै मायी रेवे।
दुखडो सैन कर परो भी नी आपो देवे॥

***

१९१ चरणामत

राम नाम चरणामत कचन करदै काया।
शिव पाण्डे गगाजळ जाणर लेवो भाया॥
गळो टूपसी साच रो देखे दीनानाथ।
कीडा री कुन्ड भोग सी मेला कर कै हाथ॥
राम नाम तरवार सो दै पापा नै काट।
शिव पाण्डे चूक्यै मती सुरगा लागै ठाठ॥
करनी काटो बण गडे जिया बास री फास।
किररावै माचै पडयो दोरा आवै सास॥
जीवन सफळ होय सी राखो मौत नै याद।
शिव पाण्डे मुख राम नाम सै ने दौ परसाद॥
बिना लिया परसाद हियै नी होय चानणो।
खोटी नीयत किया सुरग रो खुलैनी बारणो॥
साची कैयी कैणी यै कूवा पडगी भाग।
शिव पाण्डे पछताय सी ईजत खूटी टाग॥
बद भोगनै री भोगळ खोल्या सू खुलसी।
मीरा सूर बालमिकी ज्यू तिरग्या तुलसी॥

थारा ही अन्याय मारसी थारै थप्पड।
राम हाथ ज्यू रावण सी उतरायी अक्कड॥
मिनख बणो शिव पाण्डे हाथ जोडकर बरजै।
होय माया रै बसि भूत ईतो क्यो गरजै॥

***

१९२ रामनाम री चावक

राम नाम चाबक सू मन घोडै नै टोरो।
शिव पाण्डे कै अडियल टुरतो होसी दोरो॥
ऊपर धरदो नेम धरम री भरकर छाटी।
बिना कयायी चढजासी मुगती री घाटी॥
लालच नाक कटाय दै चढै न दूजी नाक।
ललचाणी है लालसा शिव पाण्डे मत चाख॥
अरजुन नै किरसन कयो होणी हरि रै हाथ।
दौय पावडा दुरियोधन धरती देतो नाप॥
राम रिझाया रीझसी बैठो अेक ही ठोड।
लाउ झाउ कर शिव पाण्डे मत तापडा तोड॥
भलो बणपरो भलाइ कर लोगो रा मन जीत।
ऊठ बणर अरडाय सी मतकर ईति अनीत॥
राम झरोखै बैठ कै देख करै कै काळ।
नरग माय नै न्हाख्रयो अन्याया नै टाळ॥
किया टोपसी भान लगारयो थनै आभो।
शिव पाण्डे के आयो नागो जासी नागो॥
राम नाम हाडी रै मायी सासा ऊरो।

शिव पाण्डे कै मुगति रो घर नइ हे दूरो॥
धाप न आवे जीमता क्यू सिर माडै बूक।
ई लखणा भव तिरण रो जासी अवसर चूक॥

***

१९३

पत रैसी लालच ने नेडो मत आवण दै।
शिव पाण्डे फीचा मे लाठी मत बावणदे॥
देख परायी चोपडी मत ना राळा न्हाख।
लुख्खी सुख्खी मिसरी सू मीठी ठकर राख।।
देख बगत शिव पाण्डे होरचो हक्को बक्को।
मिनख मिनख नै देवै है कूवे मे धक्को॥
मेला हाथ करायर नाक कटावै टक्को।
मिनख बोइ है मिनख पणैरो राखै रख्खो॥
जसरो झडो फैरा जग मे मीरा जीया।
शिव पाण्डे इमरत बणजावे जेहर पीया॥
इमरत देवै रामजी अर तू जैहर मिलाय।
हाय ही बुरी गरीब री कदे न निसफळ जाय॥
लीलाडा पडी लकिरा लिख्यो लागै सूनी।
बाच सको ना बोत पढाई आ हे जूनी॥
टाळोडा नी टळसके बेमाता रा लेख।
शिव पाण्डे न भूल हरि नै हरि राखसी टेक॥
राम नाम घट्टी रेइ माया ऊरो सासा।
शिव पाण्डे के किस्मत रा फुरजासी पासा॥
बदनामी रो ढोल ढमाको जल्दी फूटे।
केयी जनम तक पापा सू नी लारो छूटे॥

***

१९४

अणगिणती रा मन अन्याय करावे हाथा।
नइ माने तो राम नाम री मारो लाता॥
शिव पाण्डे कै बळ मरे नी अमर हे मनडो।
किती बीनण्या ओ परणीज्यो बणके वनडो॥
मरियादा री गगा ने क्यू कर रयो मेली।
शिव पाण्डे कुदरत री झट केयी ना झेली॥
पाप करोडा मन दरपण रे देखो माया।
जनम सुधरसी अरे बावळा हरि गुण गाया॥
राम नाम कूची सू किस्मत खोलो ताळो।
शिव पाण्डे कै बेटे ज्यूइ धरम नै पाळो॥
पर हाथा पइसा दे आधी चीज मगावै।
केवणियै साची की खुद मरया सुरग जावै॥
राम नाम री सिरपर राखो छत्तर छीया।
शिव पाण्डे के अम्मर होसी धूजी जीया॥
रू रू राम रमाय के हिवडे माया बसा।
देख पै रा कोड कर रयो क्यू लोग हसा॥
लालच लाळ लगाय पे नियत हिडकणी होय।
शिव पाण्डे साची कथै दवा न लागै कोय॥
बणी बणी रा सगळा बिगडी रो नी भाई।
हाथ हाथ रे ताई खोदै ऊडी खाई॥

***

राम नाम री पीट सको तो पीटो डून्डी।
शिव पाण्डे नरसी जू आर सिखारै हुन्डी॥
केणो मानो अत पत लदणो है टाडो।
भोपा डाफर कर कै क्यू भगती नै भाडो॥
राम नाम कूवे रै माया मन लटकावो।
शिव पाण्डे किरतार मिलैलो मत भटकावो॥
मैं ही बुरि बलाय सी मैं में करणो छोड॥
अन्याया घर पाळरयो तन निसरेलो कोढ॥
करनी आछी कर लारै स्यू लोग सरावै।
थरप मूरती पूज परा गीता मे गावै॥
देख बगत बेटा पर बाप लगावै बोली।
कीया सजसी पढी गरीब बेट्या री डोली॥
बेटी गगा गोमती शिव पाण्डे बुरि हाय।
बाबल बाधै गाय जू बीं खूटै बधजाय॥
बहु अर बेटी दोनु मानो गाय है लोगा।
शिव पाण्डे कै बुरि इयारी हाय है लोगा॥
ओइ सागर ससार राम नाम तिर चीरो।
शिव पाण्डे कै दगो नयी केरोयी बीरो॥
राम नाम रो दिवलो घट रै मायी चासो।
कण कण मायी सूरज दायी होय उजासो॥

×××

शिव पाण्डे धीरज धरम मिनख पणेरी नाक।
जाय माजनो रैयो ना आनै दिया तलाक॥
चतरायी रै पगरी न होड करसकै फूड।
धोबा धोबा घलायदै आ कुलखणी धूड॥
निरमल मन मायड री ज्यो गगा री नीर।
शिव पाण्डे सेवा करो सुखसागर सो तीर॥
ममता री है राम श्याम स्यू नाम ऊचो।
फळी फूत आसिसा लै अमरापुर पोचो॥
माँरी ईजत जको उछाळे **खोटा** धडकै।
राम आखमे रावडियो बणकर बो रडकै॥
जिण आगण मे मॉरी ईजत बो घर मिन्दर।
शिव पाण्डे बीं बेटै रा दिन मान सिक न्दर॥
सब पुतला मे प्राणा रा प्रभु दिवला जोवै।
जिणमें निवडै तेल फूक यमराज बुझोवै॥
भवसागर स्यू तिरणै री एक ओई इलाज।
शिव पाण्डे मुख राम नाम सेनै दो परसाद॥
दया दान स्यू ऊचो कोई दान नहीं है।
भटको दुनिया माय गुरु बिन ग्यान नहीं है॥
देइ देवता सू मारी आसीसा सस्ती।
पडत मुल्ला बतावे ईस्यू ऊची हस्ती॥

xxx

शिव पाण्डे कै मत स्वारथ रा सीटा सेको।
यमराज देर कठ मिठाई लेसी लेखो॥

जै सुख चावो राम नाम नित बोलो मतर।
मन हाथी काबू करण बूकियै बाधो जतर॥
शिव पाण्डे कै चिन्तोडा रे लागै चूची।
नींद किन्नी सी कट आभै मे उडजा ऊची॥
सतसगत मे बेठ परा दुनिया मे झाको।
गुरु बतावै मुगति रो मारग है बाको॥
दे भाग भुवाळी तनरो कपडो बेरी बणज्या।
शिव पाण्डे कै दुख सिर तम्बू बणके तणज्या॥
जै सुख चावो देर बचन हरगिज मत नाटो।
मीनख हो तो थूक परो पाछो क्यू चाटो॥
राम नाम चूलेपर काया हाडी धर दो।
शिव पाण्डे सत आच सिजोणी चालू करदो॥
पाप उफण कृ मिन्टा माया आसी बारे।
जुगती स्यू मुगती होसी क्यों हिमत हारै॥
माळा मन सू फेर बण हरि हिडदे रो हार।
शिव पाण्डे लेजाय सी बैकुन्ठा किरतार॥
बधा चिन्तै बोत री हरि करै सोई होय।
सिर धुण धुण पछतायसी बगत हाथ सू खोय॥

xxx

धरम लाय मे ना बळे लिख्या मिटै न लेख।
शिव पाण्डे सतोषी जी री प्रभु राखै टेक॥
राम नाम बिसराय के क्यू बणरयो हे कस।
धरम धजा लहराय कै बणजा परमहस॥

मिनखा जूणी जी पशु री मती जी जूणी।
बिना भजन शिव पाण्डे काया सफा अलूणी॥
गॉठॉ लाग्या पछै काम रो काई डोरो।
मन दरपण नै राखो ज्यो कागद सो कोरो॥
अैरे माथै राम नाम री महिमा लिखरे।
शिव पाण्डे के गीता उखण परो मत बिकरे॥
सोच समझ ले लायो के लेजासी सागे।
भाग्य भरोसो छोडर क्यू घोडे जू भागै॥
पाणी दूध रळाय रळाय कै मेला कर र्यो हाथ।
थारी थारै बापरी मती लाजारे जात॥
आ देवासी जूण बुलबुलो हे पाणी रो।
खोटा घडिया बळध बणैलो तू घाणी रो॥
राम नाम रो खॉडो ले रणभेरी गा रे।
कुभकरण बण बिरथा उमर मती गमा रे॥
शिव पाण्डे के चाए गुरु हो चाए चेलो॥
अधबिच में डूबेलो जै है मनडो मेलो॥

xxx

राम रिझावे रीझ सी महिमा मूढे गार।
तातो खाया मू बळे शिव पाण्डे खा ठार॥
नाक कटा मत सुरपणखा रो बणकर भाई।
पैलाद भगत बण जाणले प्रभु री प्रभुताई॥
समदर सो दिल राख रे पण तजदै नी खार।
शिव पाण्डे धरीज धरम मिले नयी उधार॥

हाथ जोड कू रेयी उमर मत बिरथा खाई।
जूण देवा सी सडका पर नी लाधै जोई॥
दानी रै धन बापरै सूरवीर दै सीस।
बुद्धि नै चोपट करे शिव पाण्डे कै रीस॥
हस सरिसी जूण कागलै सो क्यू बोलै।
हीरो लाग्यो हाथ काकरा सू क्यो तोले॥
राम ताकडी शिव पाण्डे नीयत नै तोलो।
हरि मिलसी हरमिन्दर रो दरवाजो खोलो॥
हाथी रा सा दात दिखाया रीझै कोनी।
मन चोपड्यो घडो भिजोया भीजे कोनी॥
चोरासी जूण्या काटी अब करले चेतो।
राम नाम परसादी शिव पाण्डे दै केतो॥
मा गगा रे चरणा डुबकी लेकर लिखरयो।
मोह माया रे वसी भूत होकर नी बिकरयो॥

xxx

लिखण आळो और तो लिखावण आळो और।
शिव पाण्डे मालक हाथ जीवन रथ री डोर॥
होणी कैयरी होय परी न रैयी दासी।
घडो पापरो भरताइ कठ पकड दै फासी॥
धापै नई जीमता भूख ना भागै बीरी।
जलम सूधरै साख भरू सतोषी जीरी॥
शिव पाण्डे कै मती बाडरो बणरै काटो।
सुधर बुढापो जासी नाम हरि रो बाटो॥

लालच लाम्बी जेवडी खीच्या आय न अत।
जिण रै मन सतोष है शिव पाण्डे बो सत॥
सतोष सबडै बिडलोइ दूख दोरो झेलणो।
मिनख पणै रो महत्त्व खाँडै धार खेलणो॥
राम नाम डोरै में मन मिणियै नै पोवो।
आपो आपने काबू कर बडभागी होवो॥
शिव पाण्डे फोडा घालै खुदरी खोटाई।
गोडा लकडी दिरवावे खुटै ना खाई॥
मन मेलो कर पाप मे हाथ रयो खखोळ।
कठ मिठायी दिरासी थनैइ थारो डोळ॥
युधिष्ठर बण देस नै दीनी खूब डळी।
कीडा कुन्ड भोगायसी मन री आई रळी॥

xxx

मरकर बणसी भूत आत्मा फिरसी लुकती।
हाय देश री लाम्योडी होवै नी मुगती॥
अरे द्रोपदी चीर बधावो खीचो मत रै।
सईदा चमन बणायो जेहर सींचो मत रै॥
काया छाटी खूद खूद भगती स्यू भर रे।
शिव पाण्डे के मरे तो मौत मरद री मर रे॥
गरभवास मे कवल करोडा हरि सू बिसरयो।
खरो समझ परख्यो खोटो रूपियो निसरयो॥
जुलम करोडा आडो न्हाखर भरसी बटका।
शिव पाण्डे कै भूलै लो सै करणा गटका॥

कर खून पसीनों नेक कमाई खुद री खावे।
धरमराज सैबासी दै नी अैळी जावै॥
हरि री माया हरि जाणे ना जाणे कोई।
लखलीनी पेलाद भगत तो मुगती होई॥
शिव पाण्डे कै मत जुलमा रो बाधो भारो।
लाता मार मार जमडो करदैलो गारो॥
घर सू सम्पत काढ पाप ने मत ना पाळो।
शिव पाण्डे काळै नै नाथण आळो काळो॥
काया बोतल काच सी ओना थारो देस।
ओळख कोइ ना सके हसलो बदले भेस॥

xxx

पापा आडी बाध ले नेम धरम री पाळ।
शिव पाण्डे हकराय मी कठ पड कै काळ॥
अकल पराई ऊपजै दीया लागे डाम।
दातारी दातार दी कर दुनिया मे नाम॥
मरियादा मे रैवणो तू समदर सू सीख।
शिव पाण्डे भव तिरण री माग हरि सू भीख॥
भीख मिले थिर नई चानणी रेवे राता।
विणजारा हस हस बोल लारे रेसी बाता॥
जाण कोयला चाबो मूढो काळो होवे।
शिव पाण्डे कै इसा पाप नी गगा धोवे॥
बन्द मुठी रे माया कू रेवे जिया भरम।
माळा तो मनरी भली नैणा माय सरम॥

धीरज रा फळ मीठा सौ कोसा जा चाखो।
रेयीदास ज्यू गगा कठोतरी मे राखो॥
माळा नै क्यू दोष दै मिणिया जात सपूत।
शिव पाण्डे छाती छिदी कात्यो सूत कपूत॥
मोत हथेळी धर परो काट रीस रो सीस।
शिव पाण्डे नाटक करया मिले नहीं जगदीश॥
मन मेलो तन ऊजळो मीठा बोलै बोल।
हीरो मूढे नइ कै´ लाख हमारो मोल॥

×××

टूटै लगन तो राम नाम रै खूटे बाधो।
दुख पडे दोस्त मे शिव पाण्डे के देवो काधो॥
प्रेम पवितर ग्यान है छाणी सकै पी छाण।
मुठ्या भरसी रेत मे हिडदे लाग्या बाण॥
अकल बजारा न मिलै शिव पाण्डे के मोल।
कोरै कागद पर पढो बोल लिख्या अनमोल॥
चुगली करे चुगलियो खुद हो जावे सात।
लोठै रे धक्के चढ्यो तोडा लीना दात॥
ऊभो होयो शिव पाण्डे कै आडो पडसी।
पाप करोडा डक मार बिछु ज्यो लडसी॥
दिन रे माया तीन भवन रा दिखसी तारा।
मन दरपण देखासी देख्ये न्यारा न्यारा॥
शिव पाण्डे कै नेकी कर कूवै मे न्हाखो।
जद तक होवै जिया किया धिकावो धाको॥

धीरज धरम जतन तप बल अै आवै आडा।
भरणा चाओ गुणारा नइ भरीजै गाडा॥
शिव पाण्डे कै फा फा मारो राम नाम री।
अठे री अठे आडी आसी घणै काम री॥
झूठी फाफा मार्‌या सू जीवन उळझेलो।
झझट अेक अेक सू चढतो नी सुळझेलो॥

***

